सामाजिक विज्ञान

हमारे अतीत - 1

कक्षा 6 के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
मार्च 2006 चैत्र 1927

पुनर्मुद्रण
दिसंबर 2006 पौष 1928
नवंबर 2007 कार्तिक 1929
फरवरी 2009 माघ 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
नवंबर 2010 कार्तिक 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
जनवरी 2013 पौष 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935

PD 55T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006

₹ 50.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा जगदम्बा ऑफसेट, 374, नंगली शकरावती इंडस्ट्रियल एरिया, नजफगढ़, नयी दिल्ली 110 004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-522-9

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी., प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 Phone : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 Phone : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 Phone : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप
पनिहटी
कोलकाता 700 114 Phone : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 Phone : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अशोक श्रीवास्तव*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *कल्याण बनर्जी*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *गौतम गांगुली*
मुख्य संपादक (संविदा सेवा) : *नरेश यादव*
उत्पादन सहायक : *प्रकाश वीर सिंह*

सज्जा, आवरण एवं चित्रांकन
आर्ट क्रियशन्स

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फ़ेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इतिहास पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर नीलाद्री भट्टाचार्य की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया। इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
20 दिसंबर 2005

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर*, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

नीलाद्रि भट्टाचार्य, *प्रोफ़ेसर*, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सलाहकार

कुमकुम रॉय, *एसोशिएट प्रोफ़ेसर*, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सदस्य

जया मेनन, *रीडर*, इतिहास विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

पी.के. बसंत, *रीडर*, इतिहास एवं संस्कृति विभाग, मानविकी व भाषा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

रनबीर चक्रवर्ती, *प्रोफ़ेसर*, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

विश्वमोहन झा, *रीडर*, इतिहास विभाग, आत्माराम सनातम धर्म महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

एन.पी. सिंह, *प्रधानाचार्य*, राष्ट्रीय प्रतिभा विकास विद्यालय, नई दिल्ली

शुचि बजाज, *पी.जी.टी.* (इतिहास), स्प्रिंगडेल्स स्कूल, नई दिल्ली

गौरी श्रीवास्तव, *रीडर*, महिला अध्ययन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

अनिल सेठी, *प्रोफ़ेसर*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

हिंदी अनुवाद

हीरामन तिवारी, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

नूतन झा, *टीचर*, मीराम्बिका स्कूल, श्री अरविंदो आश्रम, नई दिल्ली

पी.के बसंत

सीमा एस. ओझा

सदस्य-समन्वयक

सीमा एस. ओझा, *लेक्चरार*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

क्यों पढ़ें हम इतिहास?

इस साल छठी कक्षा में तुम इतिहास पढ़ोगे। कुछ और विषयों के साथ इतिहास समाज विज्ञान का हिस्सा माना जाता है। समाज विज्ञान हमें अपनी सामाजिक दुनिया की कार्यप्रणाली को समझने में मदद करता है। समाज विज्ञान हमें जीवन के कई पहलुओं के बारे में बताता है: भूगोल के बारे में, अर्थव्यवस्था के चलने के बारे में और सामाजिक व राजनीतिक जीवन की व्यवस्था के बारे में। इतिहास के अतिरिक्त समाज विज्ञान के अन्य विषय प्राय: आज की दुनिया के बारे में ही बताते हैं। इतिहास बताता है कि आज की दुनिया कैसे विकसित हुई। यह हमें वर्तमान के अतीत के बारे में बताता है।

हम जिस समाज में रहते हैं उसके परिवेश की हमें आदत पड़ जाती है। हम यह मान लेते हैं कि दुनिया हमेशा ऐसी ही रही है। हम भूल जाते हैं कि जीवन हमेशा वैसा नहीं था जैसा हमें आज दिखता है। उदाहरण के लिए क्या तुम ऐसी दुनिया की कल्पना कर सकते हो जहाँ आग न हो? कैसा रहा होगा एक ऐसी दुनिया में रहना जहाँ खेती-बाड़ी का आविष्कार न हुआ हो? या उस ज़माने में ज़िंदगी कैसी रही होगी जब लोग लंबी यात्राएँ तो कर लेते थे लेकिन न सड़कें थीं न रेलगाड़ियाँ? इतिहास हमें उन अतीतों की ओर ले जा सकता है।

इस रूप में इतिहास एक रोमांचक यात्रा है। यह यात्रा तुम्हें समय और संसार के आर-पार ले जाती है। यह ले जाती है हमें एक दूसरी दुनिया में, एक दूसरे युग में जब लोगों का जीवन अलग था। उनकी अर्थव्यवस्था और समाज उनकी मान्यताएँ और विश्वास, उनके भोजन और कपड़े, उनके घर और बस्तियाँ, उनकी कला और शिल्प-सब कुछ भिन्न था। इतिहास ऐसी दुनिया के झरोखे खोल सकता है।

तुम अपने कंधे झटक कर कह सकते हो 'हम ऐसी बीती बातों को लेकर क्यों परेशान हों जो अब नहीं हैं, ऐसे अतीत जो गुज़र चुके हैं।'

लेकिन इतिहास सिर्फ कल के बारे में नहीं है। यह आज के बारे में भी है। आज हम जिस दुनिया में हैं उसे बनाया है हमसे पहले आए लोगों ने। उनके जीवन के सुख-दुख, अपने युग की समस्याओं से जूझने की उनकी कोशिशें, उनकी खोजें और आविष्कार, इन्हीं के ताने-बाने में तो मानव समाज बदला। प्राय: ये बदलाव इतने धीमे और मामूली होते थे कि उस युग के लोगों को इसका पता भी नहीं चलता था। बाद में जब हम अतीत पर नज़र डालते हैं, जब हम इतिहास पढ़ते हैं तब हमें अंदाज़ा लगता है कि ये बदलाव कैसे आए। तभी हम लंबे अंतराल में धीमे-धीमे होने वाले परिवर्तनों का असर देख पाते हैं। इतिहास पढ़ कर हम समझ पाते हैं कि आधुनिक दुनिया अनेक सदियों से हो रहे बदलावों का परिणाम है।

इस साल तुम जो पुस्तक पढ़ोगे वह हमें सबसे प्राचीन अतीतों की ओर ले जाएगी। अगले दो वर्षों में तुम्हारी यह यात्रा बाद के काल खंडों से गुज़रेगी। इस किताब में तुम सिर्फ राजाओं-रानियों, उनकी विजयों और नीतियों के बारे में ही नहीं पढ़ोगे। तुम पढ़ोगे शिकारियों और कृषकों के बारे में, शिल्पकारों और व्यापारियों के बारे में। तुम जान पाओगे आग के बारे में, लोहे के आविष्कार के बारे में। गेहूँ तथा धान की खेती कैसे होने लगी, गाँव और शहर कब बसे? तीर्थयात्रियों और संतों, इमारतों तथा चित्रों, धर्मों और विश्वासों के बारे में भी तुम पढ़ोगे। तुम पाओगे कि इतिहास सिर्फ़ महान लोगों की जीवनी नहीं है। इतिहास सामान्य स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों के जीवन और क्रियाकलापों के बारे में भी है। इतिहास सिर्फ राजनीतिक घटनाओं के विषय में नहीं है, बल्कि वह समाज में हो रही हर चीज़ के बारे में है।

इस किताब में तुम्हें यह समझने में मदद मिलेगी कि इतिहासकारों को अतीत के बारे में कैसे पता चलता है। कुछ-कुछ जासूसों की तरह, इतिहासकार पुराने ज़माने में रहने वालों द्वारा छोड़े गए सुरागों और चिह्नों का अध्ययन करते हैं। अतीत का हर अवशेष-पत्थर के औज़ार, पौधों के अवशेष, हड्डियाँ, लिखित सामग्री और चित्र, आभूषण और उपकरण, अभिलेख और सिक्के, इमारतें और मूर्तियाँ, बर्तन- हमें पुराने ज़माने के बारे में बता सकता है। इतिहासकार और पुरातत्त्वविद् इन स्रोतों का अध्ययन कर इन्हें समझने की कोशिश करते हैं। इस किताब में ऐसे कई स्रोत दिखाए जाएँगे और साथ-साथ तुम यह भी पता कर पाओगे कि इतिहासकार इनका मूल्यांकन कैसे करते हैं।

लेकिन इतिहास का अध्ययन हम सिर्फ़ अतीत को समझने के लिए नहीं करते। इतिहास हमें कुछ योग्यताएँ और कौशल विकसित करने में भी मदद करता है। अतीत की दुनिया में समाने के लिए, एक ऐसी दुनिया के लोगों को समझने के लिए, जिनका जीवन हमसे भिन्न था, नए तरीके सीखने पड़ते हैं। जब हम यह करते हैं तो हमें अपना दिमाग खोलना पड़ता है और वर्तमान की छोटी-सी दुनिया से बाहर निकलना पड़ता है। यह एक शुरुआत होती है दूसरे लोगों के क्रियाकलाप और सोचने के तरीकों को समझने की। हमारे लिए यह एक शिक्षाप्रद और संवर्धक अनुभव हो सकता है। इसलिए, अपने कंधे झटकने के पहले तुम स्वयं से एक सवाल पूछो: क्या मैं यह जानना चाहता हूँ कि मैं कौन हूँ? क्या मैं यह समझना चाहता हूँ कि समाज कैसे चलता है? मैं जिस दुनिया में हूँ क्या उसे मैं जानना चाहता हूँ? अगर तुम चाहते हो तो तुम्हें ज़रूरत होगी यह जानने की कि हमारा समाज कैसे विकसित हुआ और कैसे हमारे अतीतों ने हमारे वर्तमान को रूप प्रदान किया।

नीलाद्रि भट्टाचार्य
मुख्य सलाहकार
इतिहास

आभार

यह पुस्तक कई महीनों से लिखी जा रही थी। कई स्कूल शिक्षक, कॉलेज और विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञ और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के संकाय सदस्य इस पुस्तक को तैयार करने वाले दल में शामिल थे। चित्रों का चुनाव करने में और अभ्यास के प्रश्न बनाने में इस दल के सभी सदस्यों ने सहयोग किया है। विभिन्न मुद्दों पर हमने आपस में लंबी और गहन चर्चा की ।

हमें अपने नन्हें पाठकों – अपूर्व अवराम, मल्लिका विश्वनाथन और मीरा विश्वनाथन के सुझावों और टिप्पणियों से बहुत फ़ायदा हुआ। पुस्तक लिखने की प्रक्रिया में इसके प्रारूपों पर कई लोगों ने सुझाव दिए। हमने उन्हें पुस्तक में समाहित करने की कोशिश की है। खासकर हम राष्ट्रीय निगरानी समिति के सदस्यों के प्रति आभारी हैं। उन्होंने कई सुझाव दिए। इस पुस्तक के प्रारूप पर आलोचनात्मक सुझावों के लिए हम प्रोफ़ेसर रोमिला थापर, उमा चक्रवर्ती, जायरस बानाजी, उपिन्दर सिंह, एकलव्य के सी. एन. सुब्रह्मण्यम और मेरी जॉन के प्रति आभारी हैं। प्रोफ़ेसर बी.डी. चट्टोपाध्याय, प्रोफ़ेसर कुणाल चक्रवर्ती, प्रोफ़ेसर विजया रामास्वामी, प्रोफ़ेसर एस. आर. वालिंबे और नैना दयाल ने पुस्तक के कुछ हिस्सों के बारे में सलाह दी। प्रोफ़ेसर नारायणी गुप्ता हमें लगातार सहयोग देती रहीं।

अभिलेखों, सिक्कों, स्मारकों और मूर्तियों के चित्रों, पुरातात्त्विक और ऐतिहासिक स्थलों के रेखाचित्रों तथा खुदाई में मिले मिट्टी के बर्तनों, उपकरणों और अन्य चीज़ों के चित्रों के लिए हम निम्नलिखित के आभारी हैं– महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, सुरेन्द्र कौल, महानिदेशक, सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र, नई दिल्ली, पूर्णिमा मेहता और अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज़, गुड़गाँव, हरियाणा के सहकर्मी, के. पी. राव, हैदराबाद विश्वविद्यालय और भारती जगन्नाथन। हम गीतांजलि सुरेन्द्रन तथा नेशनल मैनुस्क्रिप्ट मिशन, दिल्ली के सहकर्मियों द्वारा पाण्डुलिपियों के चित्र देने के लिए उनके आभारी हैं। कैथरीन जारीज़ ने हमें मेहरगढ़ के रेखाचित्र उतारने की अनुमति दी। बच्चों के चित्रों के लिए हम यूनीसेफ नई दिल्ली के उमेश मत्ता, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के आर. सी दास तथा स्प्रिंगडेल्स स्कूल के शुक्रगुज़ार हैं।

इस पुस्तक के मानचित्र जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के के. वर्गीज़ और जम्मू विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के श्याम नारायण लाल ने बनाए हैं। वैज्ञानिक एवं

तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली के अवकाशप्राप्त अनुसंधान अधिकारी (इतिहास एवं पुरातत्त्व) राजेन्द्र प्रसाद तिवारी ने पुस्तक में तकनीकी शब्दों को शुद्ध बनाने में योगदान दिया। विजय कुमार शर्मा ने पुस्तक का कॉपी संपादन किया और पाण्डुलिपि की अशुद्धियाँ दूर कीं। अनिमेष रॉय तथा ऋतु टोपा, आर्ट क्रिएशन्स, नई दिल्ली ने इस किताब की बनावट, सज्जा और टाइप सेटिंग का काम किया। हिंदी टाइपिंग का काम विजय कम्प्यूटर ने किया। हम इन सबके कृतज्ञ हैं।

हमने प्रत्येक चित्र के मूल स्रोत का उल्लेख किया है, लेकिन अगर असावधानीवश कोई त्रुटि हुई है तो हम क्षमा प्रार्थी हैं। उम्मीद करते हैं कि इस पुस्तक के लिए ढेर सारे सुझाव आएँगे जो भविष्य में इस किताब के बेहतर संस्करण निकालने में सहायक होंगे।

इस पुस्तक को तैयार करने में सहयोग देने के लिए हम सविता सिन्हा, *प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष,* सामाजिक विज्ञान व मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहते हैं।

इस पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए ज्योति गोयल, *डी.टी.पी. ऑपरेटर;* सुनयना तिवारी, *सीनियर प्रूफ रीडर* के विशेष आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं। इसके लिए हम विशेष रूप से आभारी हैं।

विषय सूची

आमुख iii

क्यों पढ़ें हम इतिहास? vii

अध्याय

1. क्या, कब, कहाँ और कैसे? 1
2. आरंभिक मानव की खोज में 11
3. भोजन: संग्रह से उत्पादन तक 22
4. आरंभिक नगर 32
5. क्या बताती हैं हमें किताबें और कब्रें 43
6. राज्य, राजा और एक प्राचीन गणराज्य 54
7. नए प्रश्न नए विचार 65
8. अशोक: एक अनोखा सम्राट जिसने युद्ध का त्याग किया 75
9. खुशहाल गाँव और समृद्ध शहर 87
10. व्यापारी, राजा और तीर्थयात्री 99
11. नए साम्राज्य और राज्य 111
12. इमारतें, चित्र तथा किताबें 122

इस पुस्तक में

परिभाषा

स्रोत

अतिरिक्त जानकारी

अन्यत्र

उपयोगी शब्द

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

कल्पना करो

आओ याद करें

आओ चर्चा करें

आओ करके देखें

- प्रत्येक अध्याय में तुम्हारा परिचय एक बालक या बालिका द्वारा कराया गया है।
- प्रत्येक अध्याय को कई विभागों में बांटा गया है।
  इन विभागों को पढ़ने, इस पर आपस में बातचीत करने और समझने के बाद ही अगले अध्याय की शुरूआत करो।
- कुछ अध्यायों में कुछ परिभाषाएं दी गई हैं।
- कुछ अध्यायों में स्रोत से एक अंश दिया गया है। इन्हीं के आधार पर इतिहासकार इतिहास लिखते हैं। इन्हें ध्यान से पढ़कर, इनमें दिए गए प्रश्नों पर चर्चा करो।
- हमारे बहुत सारे स्रोत चित्रों के रूप में हैं। प्रत्येक चित्र की अपनी एक कहानी है।
- तुम्हें कुछ अध्यायों में मानचित्र भी मिलेंगे। इन्हें ध्यानपूर्वक देखकर अपने अध्याय में बताए स्थानों को ढूंढो।
- कुछ अध्यायों में बॉक्स के रूप में कुछ जानकारी दी गई है। ये रोचक तथा अतिरिक्त सूचनाएं हैं।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में 'अन्यत्र' नाम का एक भाग है। तुम अपने पाठ में जिन घटनाओं को पढ़ रहे हो, उन्हीं दिनों दुनिया के अन्य भागों में कौन सी घटनाएं हो रही थीं, उसकी एक झलक दिखाने के लिए इसे दिया गया है। कहीं-कहीं 'अन्यत्र' का भाग किसी महत्वपूर्ण परिवर्तन के लिए भी दिया गया है।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में तुम्हें उपयोगी शब्दों की एक सूची मिलेगी। ये तुम्हें पाठ में आए महत्वपूर्ण विचारों/विषयों की फिर से याद दिलाएगी।
- प्रत्येक अध्याय के पीछे तिथियों की भी एक सूची है।
- प्रत्येक अध्याय में पाठ के बीच-बीच में भी कुछ प्रश्न तथा गतिविधियाँ दी गई हैं। पढ़ते समय इन पर भी थोड़ा वक्त लगाना।
- एक छोटा सा विभाग है 'कल्पना करो'। अब तुम्हारी बारी है अतीत में जाकर उस समय में जीवन का जायज़ा लेने की।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में तीन तरह के कार्यों की सूची दी गई है – आओ याद करें, आओ चर्चा करें तथा आओ करके देखें।

इस तरह तुम्हारे पढ़ने, देखने, सोचने और करने के लिए बहुत कुछ है। हमें पूरी आशा है कि तुम्हें इसमें बहुत खुशी मिलेगी।

अध्याय 1

क्या, कब, कहाँ और कैसे?

रशीदा का सवाल

रशीदा बैठी अख़बार पढ़ रही थी। अचानक उसकी निगाह एक सुर्ख़ी पर पड़ी "सौ साल पहले"। वह सोचने लगी कि यह कोई कैसे जान सकता है कि इतने वर्षों पहले क्या हुआ था?

कैसे पता लगाएँ?

यह जानने के लिए कि *कल क्या हुआ था,* तुम रेडियो सुन सकते हो, टेलीविज़न देख सकते हो या फिर अख़बार पढ़ सकते हो।

साथ ही यह जानने के लिए कि *पिछले साल क्या हुआ था,* तुम किसी ऐसे व्यक्ति से बात कर सकते हो जिसे उस समय की स्मृति हो।

लेकिन *बहुत पहले क्या हुआ था* यह कैसे जाना जा सकता है?

अतीत के बारे में हम क्या जान सकते हैं?

अतीत के बारे में बहुत कुछ जाना जा सकता है–जैसे लोग क्या खाते थे, कैसे कपड़े पहनते थे, किस तरह के घरों में रहते थे? हम आखेटकों (शिकारियों), पशुपालकों, कृषकों, शासकों, व्यापारियों, पुरोहितों, शिल्पकारों, कलाकारों, संगीतकारों या फिर वैज्ञानिकों के जीवन के बारे में जानकारियाँ हासिल कर सकते हैं। यही नहीं हम यह भी पता कर सकते हैं कि उस समय बच्चे कौन-से खेल खेलते थे, कौन-सी कहानियाँ सुना करते थे, कौन-से नाटक देखा करते थे या फिर कौन-कौन से गीत गाते थे।

लोग कहाँ रहते थे?

मानचित्र 1 (पृष्ठ 2) में नर्मदा नदी का पता लगाओ। कई लाख वर्ष पहले से लोग इस नदी के तट पर रह रहे हैं। यहाँ रहने वाले आरंभिक लोगों में से कुछ कुशल *संग्राहक* थे जो आस-पास के जंगलों की विशाल संपदा से परिचित थे। अपने भोजन के लिए वे जड़ों, फलों तथा जंगल के अन्य उत्पादों का यहीं से संग्रह किया करते थे। वे जानवरों का आखेट (शिकार) भी करते थे।

अब तुम उत्तर-पश्चिम की सुलेमान और किरथर पहाड़ियों का पता लगाओ। इसी क्षेत्र में कुछ ऐसे स्थान हैं जहाँ लगभग आठ हज़ार वर्ष पूर्व स्त्री-पुरुषों ने सबसे पहले गेहूँ तथा जौ जैसी फ़सलों को *उपजाना* आरंभ किया। उन्होंने भेड़, बकरी और गाय-बैल जैसे *पशुओं को पालतू बनाना* शुरू किया। ये लोग *गाँवों* में रहते थे। उत्तर-पूर्व में गारो तथा मध्य भारत में विंध्य पहाड़ियों का पता लगाओ। ये कुछ अन्य ऐसे क्षेत्र थे जहाँ कृषि का विकास हुआ। जहाँ सबसे पहले चावल उपजाया गया वे स्थान विंध्य के उत्तर में स्थित थे।

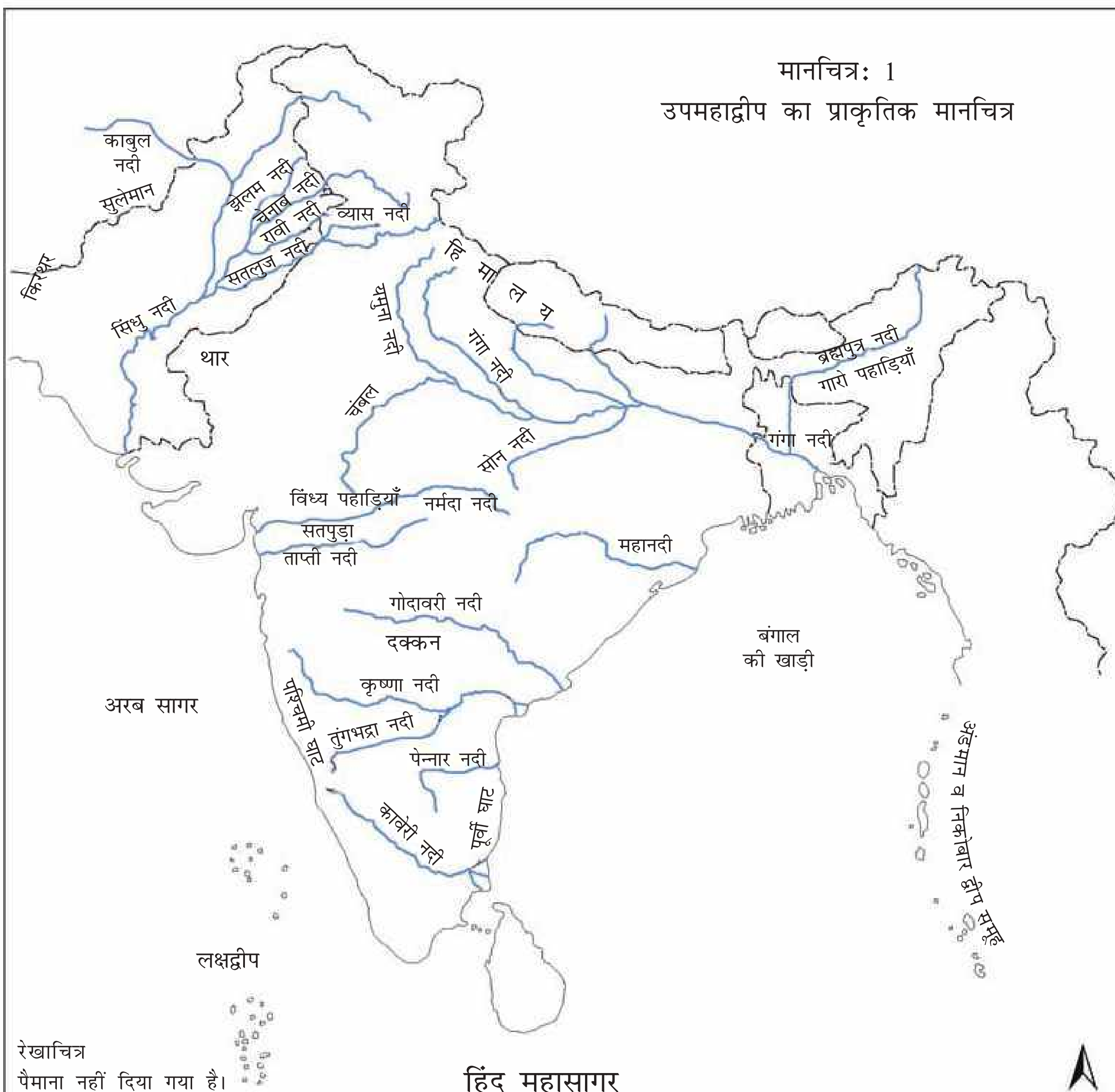

मानचित्र पर सिंधु तथा इसकी सहायक नदियों का पता लगाने का प्रयास करो। सहायक नदियाँ उन्हें कहते हैं जो एक बड़ी नदी में मिल जाती हैं। लगभग 4700 वर्ष पूर्व इन्हीं नदियों के किनारे कुछ आरंभिक *नगर* फले-फूले। गंगा व इसकी सहायक नदियों के किनारे तथा समुद्र तटवर्त्ती इलाकों में नगरों का विकास लगभग 2500 वर्ष पूर्व हुआ।

गंगा तथा इसकी सहायक नदी सोन का पता लगाओ। गंगा के दक्षिण में इन नदियों के आस-पास का क्षेत्र प्राचीन काल में 'मगध' नाम से जाना जाता था। इसके शासक बहुत शक्तिशाली थे और उन्होंने एक *विशाल राज्य* स्थापित किया था। देश के अन्य हिस्सों में भी ऐसे राज्यों की स्थापना की गई थी।

लोगों ने सदैव उपमहाद्वीप के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक *यात्रा* की। कभी-कभी हिमालय जैसे ऊँचे पर्वतों, पहाड़ियों, रेगिस्तान, नदियों तथा समुद्रों के कारण यात्रा जोखिम भरी होती थी, फिर भी ये यात्रा उनके लिए असंभव नहीं थीं। अतः कभी लोग काम की तलाश में तो कभी प्राकृतिक आपदाओं के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान जाया करते थे। कभी-कभी सेनाएँ दूसरे क्षेत्रों पर विजय हासिल करने के लिए जाती थीं। इसके अतिरिक्त व्यापारी कभी काफ़िले में तो कभी जहाज़ों में अपने साथ मूल्यवान वस्तुएँ लेकर एक स्थान से दूसरे स्थान जाते रहते थे। धार्मिक गुरू लोगों को शिक्षा और सलाह देते हुए एक गाँव से दूसरे गाँव तथा एक कसबे से दूसरे कसबे जाया करते थे। कुछ लोग नए और रोचक स्थानों को खोजने की चाह में उत्सुकतावश भी यात्रा किया करते थे। इन सभी यात्राओं से लोगों को एक-दूसरे के विचारों को जानने का अवसर मिला।

आज लोग यात्राएँ क्यों करते हैं?

एक बार फिर से मानचित्र 1 को देखो। पहाड़ियाँ, पर्वत और समुद्र इस उपमहाद्वीप की प्राकृतिक सीमा का निर्माण करते हैं। हालांकि लोगों के लिए इन सीमाओं को पार करना आसान नहीं था, जिन्होंने ऐसा चाहा वे ऐसा कर सके, वे पर्वतों की ऊँचाई को छू सके तथा गहरे समुद्रों को पार कर सके। उपमहाद्वीप के बाहर से भी कुछ लोग यहाँ आए और यहीं बस गए। लोगों के इस आवागमन ने हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को समृद्ध

मानचित्र 1 दक्षिण एशिया (आधुनिक भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान और श्रीलंका) और अफ़गानिस्तान, ईरान, चीन तथा म्यांमार आदि पड़ोसी देशों को दर्शाता है। दक्षिण एशिया एक महाद्वीप से छोटा है, लेकिन विशालता तथा बाकी एशिया से समुद्रों, पहाड़ियों तथा पर्वतों से बँटे होने के कारण इसे प्रायः उपमहाद्वीप कहा जाता है।

किया। कई सौ वर्षों से लोग पत्थर को तराशने, संगीत रचने और यहाँ तक कि भोजन बनाने के नए तरीकों के बारे में एक-दूसरे के विचारों को अपनाते रहे हैं।

देश के नाम

अपने देश के लिए हम प्रायः इण्डिया तथा भारत जैसे नामों का प्रयोग करते हैं। इण्डिया शब्द इण्डस से निकला है जिसे संस्कृत में सिंधु कहा जाता है। अपने एटलस में ईरान और यूनान का पता लगाओ। लगभग 2500 वर्ष पूर्व उत्तर-पश्चिम की ओर से आने वाले ईरानियों और यूनानियों ने सिंधु को हिंदोस अथवा इंदोस और इस नदी के पूर्व में स्थित भूमि प्रदेश को इण्डिया कहा। भरत नाम का प्रयोग उत्तर-पश्चिम में रहने वाले लोगों के एक समूह के लिए किया जाता था। इस समूह का उल्लेख संस्कृत की आरंभिक (लगभग 3500 वर्ष पुरानी) कृति *ऋग्वेद* में भी मिलता है। बाद में इसका प्रयोग देश के लिए होने लगा।

अतीत के बारे में कैसे जानें?

अतीत की जानकारी हम कई तरह से प्राप्त कर सकते हैं। इनमें से एक तरीका अतीत में लिखी गई पुस्तकों को ढूँढ़ना और पढ़ना है। ये पुस्तकें हाथ से लिखी होने के कारण *पाण्डुलिपि* कही जाती हैं। अंग्रेज़ी में 'पाण्डुलिपि' के लिए प्रयुक्त होने वाला 'मैन्यूस्क्रिप्ट' शब्द लैटिन शब्द 'मेनू' जिसका अर्थ हाथ है, से निकला है। ये पाण्डुलिपियाँ प्रायः ताड़पत्रों अथवा हिमालय क्षेत्र में उगने वाले भूर्ज नामक पेड़ की छाल से विशेष तरीके से तैयार भोजपत्र पर लिखी मिलती हैं।

ताड़पत्रों से बनी पाण्डुलिपि का एक पृष्ठ

यह पाण्डुलिपि लगभग एक हज़ार वर्ष पहले लिखी गई थी। किताब बनाने के लिए ताड़ के पत्तों को काटकर उनके अलग-अलग हिस्सों को एक साथ बाँध दिया जाता था। भूर्ज पेड़ की छाल से बनी ऐसी ही एक पाण्डुलिपि को तुम यहाँ देख सकते हो।

इतने वर्षों में इनमें से कई पाण्डुलिपियों को कीड़ों ने खा लिया तथा कुछ नष्ट कर दी गईं। फिर भी ऐसी कई पाण्डुलिपियाँ आज भी उपलब्ध हैं। प्राय: ये पाण्डुलिपियाँ मंदिरों और विहारों में प्राप्त होती हैं। इन पुस्तकों में धार्मिक मान्यताओं व व्यवहारों, राजाओं के जीवन, औषधियों तथा विज्ञान आदि सभी प्रकार के विषयों की चर्चा मिलती है। इनके अतिरिक्त हमारे यहाँ महाकाव्य, कविताएँ तथा नाटक भी हैं। इनमें से कई संस्कृत में लिखे हुए मिलते हैं जबकि अन्य प्राकृत और तमिल में हैं। प्राकृत भाषा का प्रयोग आम लोग करते थे।

हम *अभिलेखों* का भी अध्ययन कर सकते हैं। ऐसे लेख पत्थर अथवा धातु जैसी अपेक्षाकृत कठोर सतहों पर उत्कीर्ण किए गए मिलते हैं। कभी-कभी शासक अथवा अन्य लोग अपने आदेशों को इस तरह उत्कीर्ण करवाते थे, ताकि लोग उन्हें देख सकें, पढ़ सकें तथा उनका पालन कर सकें। कुछ अन्य प्रकार के अभिलेख भी मिलते हैं जिनमें राजाओं तथा रानियों सहित अन्य स्त्री-पुरुषों ने भी अपने कार्यों के विवरण उत्कीर्ण करवाए हैं। उदाहरण के लिए प्राय: शासक लड़ाइयों में अर्जित विजयों का लेखा-जोखा रखा करते थे।

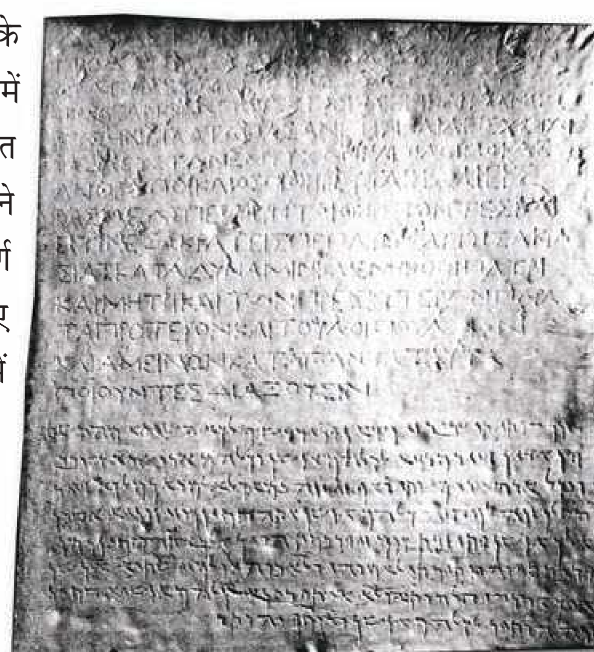

लगभग 2250 वर्ष पुराना यह अभिलेख वर्तमान अफ़गानिस्तान के कंधार से प्राप्त हुआ है। यह अभिलेख अशोक नामक शासक के आदेश पर लिखा गया था। इस शासक के विषय में तुम अध्याय 8 में पढ़ोगी। जब हम कुछ लिखते हैं तब हम किसी लिपि का प्रयोग करते हैं। लिपियाँ अक्षरों अथवा संकेतों से बनी होती हैं। जब हम कुछ बोलते अथवा पढ़ते हैं तब हम एक भाषा का प्रयोग करते हैं।
यह अभिलेख इस क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली यूनानी तथा अरामेइक नामक दो भिन्न लिपियों तथा भाषाओं में है।

क्या तुम बता सकती हो कि कठोर सतह पर लेख लिखवाने के क्या लाभ थे? ऐसा करवाने में क्या-क्या कठिनाइयाँ आती थीं?

इसके अतिरिक्त अन्य कई वस्तुएँ अतीत में बनीं और प्रयोग में लाई जाती थीं। ऐसी वस्तुओं का अध्ययन करने वाला व्यक्ति *पुरातत्त्वविद्* कहलाता है। पुरातत्त्वविद् पत्थर और ईंट से बनी इमारतों के अवशेषों, चित्रों तथा मूर्तियों का अध्ययन करते हैं। वे औज़ारों, हथियारों, बर्तनों, आभूषणों

बाएँ: एक प्राचीन नगर से प्राप्त पात्र।
इस तरह के पात्रों का प्रयोग 4700 वर्ष पूर्व होता था।
दाएँ: एक पुराना चाँदी का सिक्का।
इस तरह के सिक्कों का प्रयोग लगभग 2500 वर्ष पूर्व होता था।
हमारे द्वारा आज प्रयोग में आने वाले सिक्कों से यह सिक्का कैसे भिन्न है?

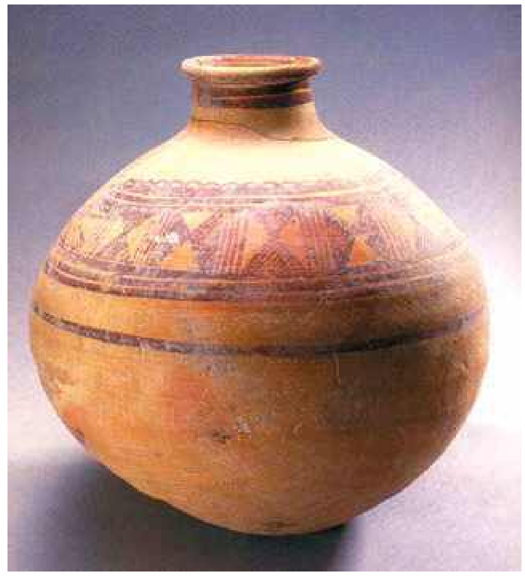

तथा सिक्कों की प्राप्ति के लिए छान-बीन तथा *खुदाई* भी करते हैं। इनमें से कुछ वस्तुएँ पत्थर, पकी मिट्टी तथा कुछ धातु की बनी हो सकती हैं। ऐसे तत्त्व कठोर तथा जल्दी नष्ट न होने वाले होते हैं।

पुरातत्त्वविद् जानवरों, चिड़ियों तथा मछलियों की हड्डियाँ भी ढूँढ़ते हैं। इससे उन्हें यह जानने में भी मदद मिलती है कि अतीत में लोग क्या खाते थे। वनस्पतियों के अवशेष बहुत मुश्किल से बच पाते हैं। यदि अन्न के दाने अथवा लकड़ी के टुकड़े जल जाते हैं तो वे जले हुए रूप में बचे रहते हैं। क्या पुरातत्त्वविदों को बहुधा कपड़ों के अवशेष मिलते होंगे?

पाण्डुलिपियों, अभिलेखों तथा पुरातत्त्व से ज्ञात जानकारियों के लिए *इतिहासकार* प्राय: *स्रोत* शब्द का प्रयोग करते हैं। इतिहासकार उन्हें कहते हैं जो अतीत का अध्ययन करते हैं। स्रोत के प्राप्त होते ही अतीत के बारे में पढ़ना बहुत रोचक हो जाता है, क्योंकि इन स्रोतों की सहायता से हम धीरे-धीरे अतीत का पुनर्निर्माण करते जाते हैं। अत: इतिहासकार तथा पुरातत्त्वविद् उन जासूसों की तरह हैं जो इन सभी स्रोतों का प्रयोग सुराग के रूप में कर अतीत को जानने का प्रयास करते हैं।

अतीत, एक या अनेक?

क्या तुमने इस पुस्तक के शीर्षक *हमारे अतीत* पर ध्यान दिया है? यहाँ 'अतीत' शब्द का प्रयोग बहुवचन के रूप में किया गया है। ऐसा इस तथ्य

की ओर ध्यान दिलाने के लिए किया गया है कि अलग-अलग समूह के लोगों के लिए इस अतीत के अलग-अलग मायने थे। उदाहरण के लिए पशुपालकों अथवा कृषकों का जीवन राजाओं तथा रानियों के जीवन से तथा व्यापारियों का जीवन शिल्पकारों के जीवन से बहुत भिन्न था। जैसाकि हम आज भी देखते हैं, उस समय भी देश के अलग-अलग हिस्सों में लोग अलग-अलग व्यवहारों और रीति-रिवाज़ों का पालन करते थे। उदाहरण के लिए आज अंडमान द्वीप के अधिकांश लोग अपना भोजन मछलियाँ पकड़ कर, शिकार करके तथा फल-फूल के संग्रह द्वारा प्राप्त करते हैं। इसके विपरीत शहरों में रहने वाले लोग खाद्य आपूर्ति के लिए अन्य व्यक्तियों पर निर्भर करते हैं। इस तरह के भेद अतीत में भी विद्यमान थे।

इसके अतिरिक्त एक अन्य तरह का भेद है। उस समय शासक अपनी विजयों का लेखा-जोखा रखते थे। यही कारण है कि हम उन शासकों तथा उनके द्वारा लड़ी जाने वाली लड़ाइयों के बारे में काफी कुछ जानते हैं। जबकि शिकारी, मछुआरे, संग्राहक, कृषक अथवा पशुपालक जैसे आम आदमी प्रायः अपने कार्यों का लेखा-जोखा नहीं रखते थे। पुरातत्त्व की सहायता से हमें उनके जीवन को जानने में मदद मिलती है। हालांकि अभी भी इनके बारे में बहुत कुछ जानना शेष है।

तिथियों का मतलब

अगर कोई तुमसे तिथि के विषय में पूछे तो तुम शायद उस दिन की तारीख, माह, वर्ष जैसे कि 2000 या इसी तरह का कोई और वर्ष बताओगी। वर्ष की यह गणना ईसाई धर्म-प्रवर्तक ईसा मसीह के जन्म की तिथि से की जाती है। अतः 2000 वर्ष कहने का तात्पर्य ईसा मसीह के जन्म के 2000 वर्ष के बाद से है। ईसा मसीह के जन्म के पूर्व की सभी तिथियाँ ई.पू. (ईसा से पहले) के रूप में जानी जाती हैं। इस पुस्तक में हम 2000 को अपना आरंभिक बिन्दु मानते हुए वर्तमान से पूर्व की तिथियों का उल्लेख करेंगे।

इतिहास और तिथियाँ

अंग्रेज़ी में बी.सी. (हिंदी में ई.पू.) का तात्पर्य 'बिफ़ोर क्राइस्ट' (ईसा पूर्व) होता है।

कभी-कभी तुम तिथियों से पहले ए.डी. (हिंदी में ई.) लिखा पाती हो। यह 'एनो डॉमिनी' नामक दो लैटिन शब्दों से बना है तथा इसका तात्पर्य ईसा मसीह के जन्म के वर्ष से है।

कभी-कभी ए.डी. की जगह सी.ई. तथा बी.सी. की जगह बी.सी.ई. का प्रयोग होता है। सी.ई. अक्षरों का प्रयोग 'कॉमन एरा' तथा बी.सी.ई. का 'बिफ़ोर कॉमन एरा' के लिए होता है। हम इन शब्दों का प्रयोग इसलिए करते हैं क्योंकि विश्व के अधिकांश देशों में अब इस कैलेंडर का प्रयोग सामान्य हो गया। भारत में तिथियों के इस रूप का प्रयोग लगभग दो सौ वर्ष पूर्व आरंभ हुआ था।

कभी-कभी अंग्रेज़ी के बी.पी. अक्षरों का प्रयोग होता है जिसका तात्पर्य 'बिफ़ोर प्रेज़ेन्ट' (वर्तमान से पहले) है।

पृष्ठ 3 पर दो तिथियाँ हैं, उनका पता लगाओ। इनके लिए तुम किस अक्षर समूह का प्रयोग करोगी?

अन्यत्र

जैसाकि हमने पहले पढ़ा, अभिलेख कठोर सतहों पर उत्कीर्ण करवाए जाते हैं। इनमें से कई अभिलेख कई सौ वर्ष पूर्व लिखे गए थे। सभी अभिलेखों में लिपियों और भाषाओं का प्रयोग हुआ है। समय के साथ-साथ अभिलेखों में प्रयुक्त भाषाओं तथा लिपियों में बहुत बदलाव आ चुका है। विद्वान यह कैसे जान पाते हैं कि क्या लिखा था? इसका पता *अज्ञात लिपि का अर्थ निकालने की* एक प्रक्रिया द्वारा लगाया जा सकता है।

इस प्रकार से अज्ञात लिपि को जानने की एक प्रसिद्ध कहानी उत्तरी अफ़्रीकी देश मिस्र से मिलती है। लगभग 5000 वर्ष पूर्व यहाँ राजा-रानी रहते थे।

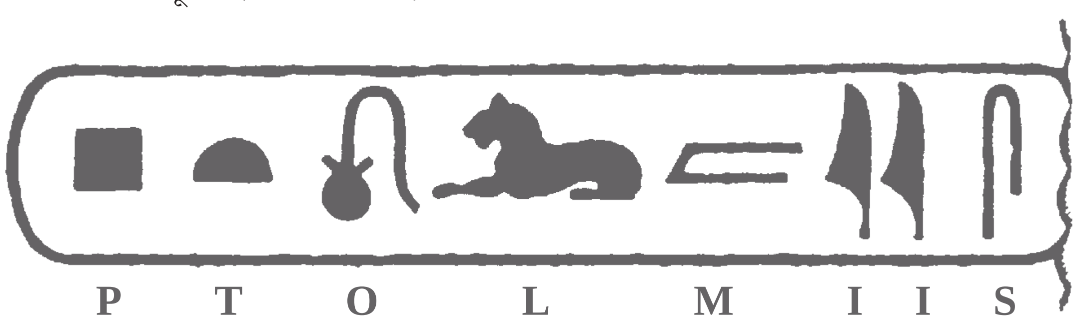

मिस्र के उत्तरी तट पर रोसेट्टा नाम का एक कसबा है। यहाँ से एक ऐसा उत्कीर्णित पत्थर मिला है जिस पर एक ही लेख तीन भिन्न-भिन्न भाषाओं तथा लिपियों (यूनानी तथा मिस्री लिपि के दो प्रकारों) में है। कुछ विद्वान यूनानी भाषा पढ़ सकते थे। उन्होंने बताया कि यहाँ राजाओं तथा रानियों के नाम एक छोटे से फ्रेम में दिखाए गए हैं। इसे 'कारतूश' कहा जाता है। इसके बाद विद्वानों ने यूनानी तथा मिस्री संकेतों को अगल-बगल रखते हुए मिस्री अक्षरों की समानार्थक ध्वनियों की पहचान की। जैसाकि तुम देख सकते हो यहाँ एल अक्षर के लिए शेर तथा ए अक्षर के लिए चिड़िया के चित्र बने हैं। एक बार, जब उन्होंने यह जान लिया कि विभिन्न अक्षर किनके लिए प्रयुक्त हुए हैं, तो वे आसानी से अन्य अभिलेखों को भी पढ़ सके।

कल्पना करो

तुम्हें एक पुरातत्त्वविद् का साक्षात्कार लेना है। तुम उन पाँच प्रश्नों की एक सूची तैयार करो जिन्हें तुम पुरातत्त्वविद् से पूछना चाहोगी।

उपयोगी शब्द

यात्रा
पाण्डुलिपि
अभिलेख
पुरातत्त्व
इतिहासकार
स्रोत
अज्ञात लिपि का अर्थ निकालना

आओ याद करें

1. निम्नलिखित का सुमेल करो :

नर्मदा घाटी	पहला बड़ा राज्य
मगध	आखेट तथा संग्रहण
गारो पहाड़ियाँ	लगभग 2500 वर्ष पूर्व के नगर
सिंधु तथा इसकी सहायक नदियाँ	आरंभिक कृषि
गंगा घाटी	प्रथम नगर

2. पाण्डुलिपियों तथा अभिलेखों में एक प्रमुख अंतर बताओ।

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

- कृषि का आरंभ (8000 वर्ष पूर्व)
- सिंधु सभ्यता के प्रथम नगर (4700 वर्ष पूर्व)
- गंगा घाटी के नगर, मगध का बड़ा राज्य (2500 वर्ष पूर्व)
- वर्तमान (लगभग 2000 वर्ष पूर्व)

आओ चर्चा करें

3. रशीदा के प्रश्न को फिर से पढ़ो। इसके क्या उत्तर हो सकते हैं?

4. पुरातत्त्वविदों द्वारा पाई जाने वाली सभी वस्तुओं की एक सूची बनाओ। इनमें से कौन-सी वस्तुएँ पत्थर की बनी हो सकती हैं?

5. साधारण स्त्री तथा पुरुष अपने कार्यों का विवरण क्यों नहीं रखते थे? इसके बारे में तुम क्या सोचती हो?

6. कम से कम दो ऐसी बातों का उल्लेख करो जिनसे तुम्हारे अनुसार राजाओं और किसानों के जीवन में भिन्नता का पता चलता है।

आओ करके देखें

7. पृष्ठ 1 पर शिल्पकार शब्द का पता लगाओ। आज प्रचलित कम से कम पांच भिन्न-भिन्न शिल्पों की सूची बनाओ। क्या ये शिल्पकार (क) स्त्री, (ख) पुरुष, (ग) स्त्री तथा पुरुष दोनों होते हैं?

8. अतीत में पुस्तकें किन-किन विषयों पर लिखी गई थीं? तुम इनमें से किन पुस्तकों को पढ़ना पसंद करोगी?

अध्याय 2

आरंभिक मानव की खोज में

तुषार की रेलयात्रा

तुषार अपने एक रिश्तेदार की शादी में दिल्ली से चेन्नई जा रहा था। रेल में उसे खिड़की वाली सीट मिल गई, जहाँ से वह बाहर का नज़ारा देखने में मग्न हो गया। तेज़ दौड़ती गाड़ी से उसने देखा कि पेड़-पौधे, घर, खेत-खलिहान बड़ी तेज़ी से पीछे की ओर छूटते चले जा रहे थे। तभी उसके चाचा ने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा, "पता है लोगों ने मात्र डेढ़ सौ साल पहले रेल से यात्रा करनी शुरू की थी? बस तो इसके कुछ दशक बाद आई।" तुषार सोचने लगा, कि जब लोगों के पास आने-जाने के लिए तेज़ रफ़्तार वाली सवारियाँ नहीं थीं, तो क्या वे यात्रा ही नहीं करते थे। क्या वे अपनी सारी ज़िंदगी एक ही जगह पर बिता दिया करते थे? नहीं, ऐसी बात नहीं थी।

आरंभिक मानव : आखिर वे इधर-उधर क्यों घूमते थे?

हम उन लोगों के बारे में जानते हैं, जो इस उपमहाद्वीप में बीस लाख साल पहले रहा करते थे। आज हम उन्हें *आखेटक-खाद्य संग्राहक* के नाम से जानते हैं। भोजन का इंतज़ाम करने की विधि के आधार पर उन्हें इस नाम से पुकारा जाता है। आमतौर पर खाने के लिए वे जंगली जानवरों का शिकार करते थे, मछलियाँ और चिड़िया पकड़ते थे, फल-मूल, दाने, पौधे-पत्तियाँ, अंडे इकट्ठा किया करते थे। हमारे उपमहाद्वीप जैसे गर्म देशों में पेड़-पौधों की अनगिनत प्रजातियाँ मिलती हैं। इसीलिए पेड़-पौधों से मिलने वाले खाद्य पदार्थ भोजन के अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत थे।

लेकिन यह सब कर पाना बिल्कुल आसान नहीं था। ऐसे कई जानवर हैं, जो हमसे ज़्यादा तेज़ भाग सकते हैं और बहुत-से जानवर हम से ज़्यादा ताकतवर भी होते हैं। जानवरों के शिकार, चिड़िया या मछलियाँ पकड़ने के लिए बड़ा सतर्क, जागरूक और तेज़ होना पड़ता है। पेड़-पौधों से खाना जुटाने के लिए यह जानना जरूरी होता है, कि कौन-से पेड़-पौधे खाने योग्य होते हैं, क्योंकि कई तरह के पौधे विषैले भी होते हैं। साथ ही फलों के पकने के समय की जानकारी भी ज़रूरी होती है।

ऐसे समुदायों में रहने वाले बच्चों के ज्ञान और गुणों का वर्णन करो।

क्या तुममें ऐसे गुण और ज्ञान हैं?

आखेटक-खाद्य संग्राहक समुदाय के लोगों के एक जगह से दूसरी जगह पर घूमते रहने के पीछे कम से कम चार कारण हो सकते हैं।

पहला कारण यह कि अगर वे एक ही जगह पर ज़्यादा दिनों तक रहते तो आस-पास के पौधों, फलों और जानवरों को खाकर समाप्त कर देते थे। इसलिए और भोजन की तलाश में इन्हें दूसरी जगहों पर जाना पड़ता था।

दूसरा कारण यह कि जानवर अपने शिकार के लिए या फिर हिरण और मवेशी अपना चारा ढूँढ़ने के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाया करते हैं। इसीलिए, इन जानवरों का शिकार करने वाले लोग भी इनके पीछे-पीछे जाया करते होंगे।

तीसरा कारण यह कि पेड़ों और पौधों में फल-फूल अलग-अलग मौसम में आते हैं, इसीलिए लोग उनकी तलाश में उपयुक्त मौसम के अनुसार अन्य इलाकों में घूमते होंगे।

और चौथा कारण यह है कि पानी के बिना किसी भी प्राणी या पेड़-पौधे का जीवित रहना संभव नहीं होता और पानी झीलों, झरनों तथा नदियों में ही मिलता है। यद्यपि कई नदियों और झीलों का पानी कभी नहीं सूखता, कुछ झीलों और नदियों में पानी बारिश के बाद ही मिल पाता है। इसीलिए ऐसी झीलों और नदियों के किनारे बसे लोगों को सूखे मौसम में पानी की तलाश में इधर-उधर जाना पड़ता होगा। इसके अलावा लोग अपने नाते-रिश्तेदारों या मित्रों से मिलने भी जाया करते होंगे। यहाँ यह स्मरण रखना ज़रूरी है, कि ये सभी लोग पैदल यात्रा किया करते थे।

तुम स्कूल कैसे जाते हो?

तुम्हें अपने घर से स्कूल पैदल जाने में कितना समय लगता है?

अगर तुम बस या साइकिल से जाओ तो स्कूल पहुँचने में कितना समय लगेगा?

आरंभिक मानव के बारे में जानकारी कैसे मिलती है?

पुरातत्त्वविदों को कुछ ऐसी वस्तुएँ मिली हैं जिनका निर्माण और उपयोग आखेटक-खाद्य संग्राहक किया करते थे। यह संभव है कि लोगों ने अपने

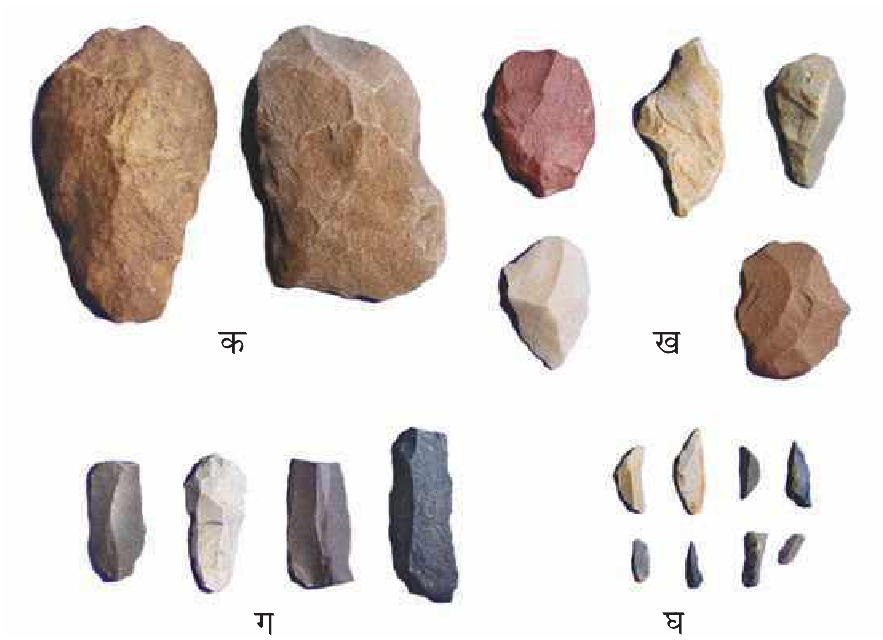

पत्थर से बने औज़ार

(क) ये पत्थरों से बने प्राचीनतम औज़ार हैं।

(ख) इन्हें कई हज़ार साल बाद बनाया गया।

(ग) इन्हें और बाद में बनाया गया।

(घ) इन्हें लगभग 10 हज़ार साल पहले बनाया गया था।

(ङ) और ये गुटिका (प्राकृतिक पत्थर) हैं।

काम के लिए पत्थरों, लकड़ियों और हड्डियों के औज़ार बनाए हों। इनमें से पत्थरों के औज़ार आज भी बचे हैं।

यहाँ पत्थरों के औज़ारों के कुछ उपयोग बताए गए हैं। ऐसे कामों की एक सूची बनाओ जिनमें इस तरह के औज़ार काम आते हैं। बताओ कि इनमें से कौन-कौन से काम सामान्य पत्थरों से किए जा सकते हैं। कारण सहित उत्तर दो।

इनमें से कुछ औज़ारों का उपयोग फल-फूल काटने, हड्डियाँ और मांस काटने तथा पेड़ों की छाल और जानवरों की खाल उतारने के लिए किया जाता था। कुछ के साथ हड्डियों या लकड़ियों के मुट्ठे लगा कर भाले और बाण जैसे हथियार बनाए जाते थे। कुछ औज़ारों से लकड़ियाँ काटी जाती थीं। लकड़ियों का उपयोग ईंधन के साथ-साथ झोपड़ियाँ और औज़ार बनाने के लिए भी किया जाता था।

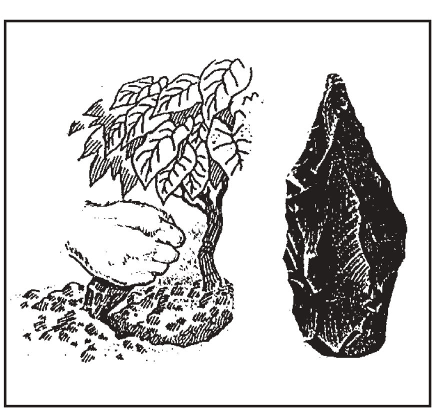

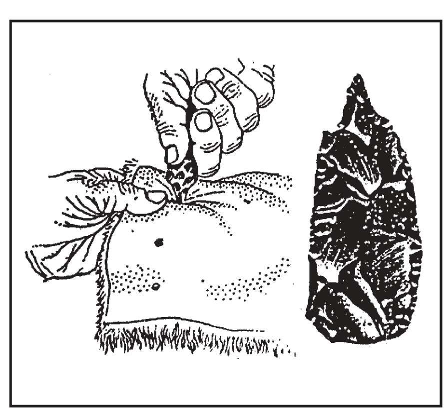

पत्थर के औज़ारों का उपयोग बाएँ : इंसान के खाने योग्य जड़ों को खोदने के लिए किया जाता था, और दाएँ : जानवरों की खाल से बने वस्त्रों को सिलने के लिए किया जाता था।

रहने की जगह निर्धारित करना

मानचित्र 2 को देखो। लाल त्रिकोण वाले स्थान वे *पुरास्थल* हैं जहाँ पर आखेटक-खाद्य संग्राहकों के होने के प्रमाण मिले हैं। इनके अलावा भी और कई स्थानों पर आखेटक-खाद्य संग्राहक रहते थे। मानचित्र में सिर्फ़ कुछ गिने-चुने स्थान ही चिह्नित किए गए हैं। कई पुरास्थल नदियों और झीलों के किनारे पाए गए हैं।

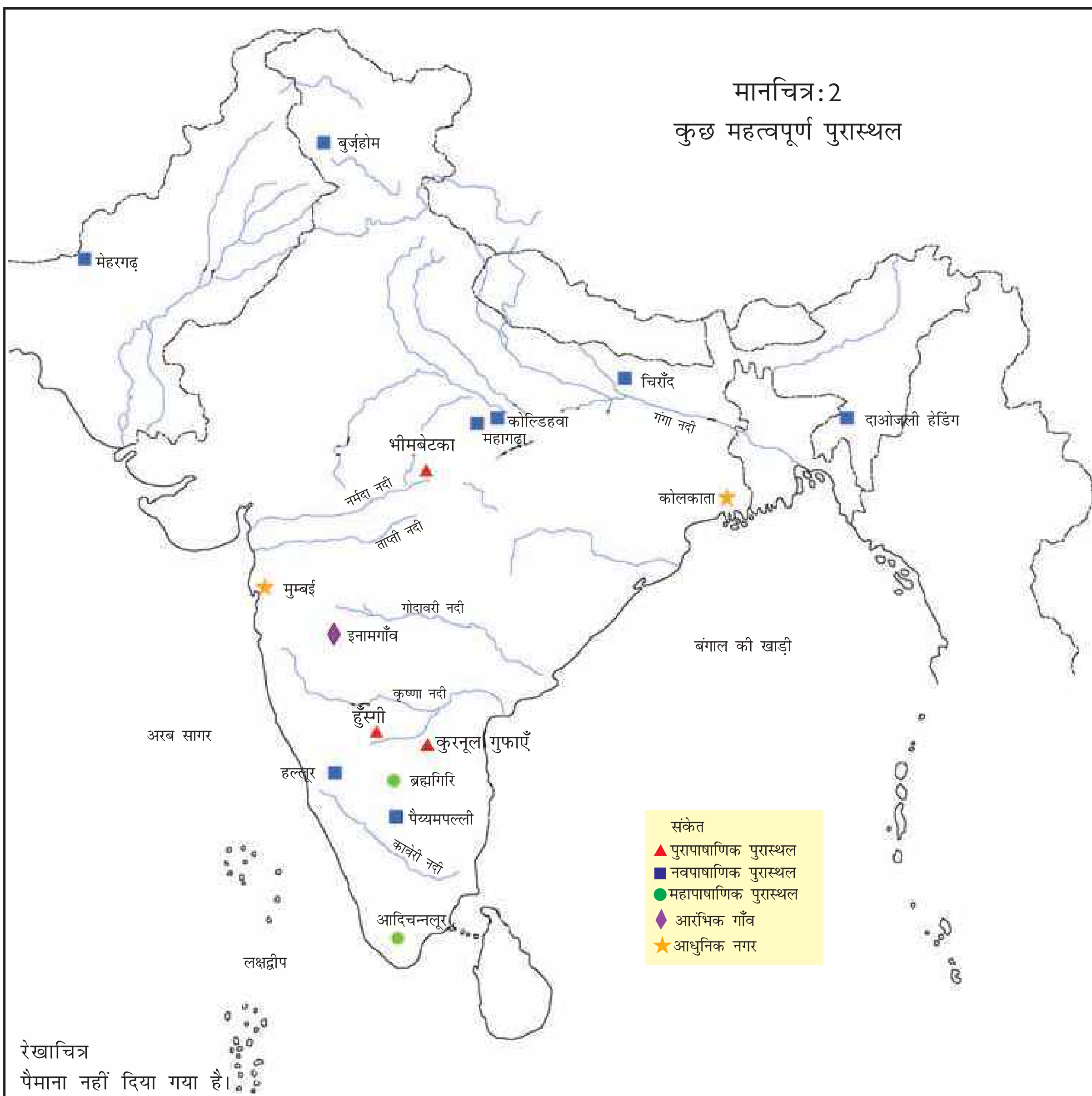

चूंकि पत्थर के उपकरण बहुत महत्वपूर्ण थे इसलिए लोग ऐसी जगह ढूँढ़ते रहते थे, जहाँ अच्छे पत्थर मिल सकें। जहाँ लोग पत्थरों से औज़ार बनाते थे, उन स्थलों को *उद्योग-स्थल* कहते हैं।

हमें इन उद्योग-स्थलों के बारे में जानकारी कैसे मिलती है? आमतौर पर हमें ऐसी जगहों पर पत्थर के बड़े-बड़े टुकड़े मिलते हैं, और ऐसे उपकरण मिलते हैं, जिन्हें लोग इन स्थलों पर छोड़ गए होंगे क्योंकि वे ठीक नहीं बने होंगे। साथ ही औज़ार बनाने के बाद पत्थरों के टूटे-फूटे टुकड़े भी इन स्थलों पर मिलते हैं। कभी-कभी लोग इन स्थलों पर कुछ ज़्यादा समय तक रहा करते थे। ऐसे स्थलों को *आवासीय और उद्योग-स्थल* कहते हैं।

भीमबेटका (आधुनिक मध्य प्रदेश)
आवासीय पुरास्थल उन्हें कहते हैं जहाँ लोग रहा करते थे। इनमें गुफाओं और कन्दराओं जैसे वे स्थल होते हैं, जिन्हें यहाँ दर्शाया गया है। लोग इन गुफाओं में इसलिए रहते थे, क्योंकि यहाँ उन्हें बारिश, धूप और हवाओं से राहत मिलती थी। ऐसी प्राकृतिक गुफाएँ विंध्य और दक्कन के पर्वतीय इलाकों में मिलती हैं जो नर्मदा घाटी के पास हैं।
क्या तुम बता सकते हो कि रहने के लिए लोगों ने यह जगह क्यों चुनी होगी?

अगर तुम्हें अपने निवास स्थान के बारे में बताना पड़े तो तुम इनमें से कौन-सा नाम चुनोगे?

(क) आवास

(ख) उद्योग-स्थल

(ग) आवास और उद्योग-स्थल

(घ) अन्य

पुरास्थल

पुरास्थल उस स्थान को कहते हैं जहाँ औज़ार, बर्तन और इमारतों जैसी वस्तुओं के अवशेष मिलते हैं। ऐसी वस्तुओं का निर्माण लोगों ने अपने काम के लिए किया था और बाद में वे उन्हें वहीं छोड़ गए। ये ज़मीन के ऊपर, अन्दर, कभी-कभी समुद्र और नदी के तल में भी पाए जाते हैं। इन पुरास्थलों के बारे में आपको अगले अध्यायों में बताया जाएगा।

पाषाण औज़ारों का निर्माण

पाषाण उपकरणों को प्राय: दो तरीकों से बनाया जाता था।

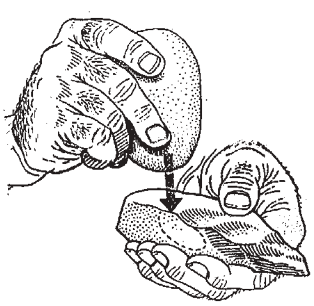

पाषाण उपकरण कैसे बनाए जाते थे। इसके लिए अपनाई गई दो तकनीकों में से एक यहाँ दर्शाई गई है। *बताओ यह कौन-सी तकनीक है।*

1. पत्थर से पत्थर को टकराना। यानी जिस पत्थर से कोई औज़ार बनाना होता था, उसे एक हाथ में लिया जाता था, और दूसरे हाथ से एक पत्थर का हथौड़ी जैसा इस्तेमाल होता था। इस तरह आघात करने वाले पत्थर से दूसरे पत्थर पर तब तक शल्क निकाले जाते हैं जब तक वांछित आकार वाला उपकरण न बन जाए।

2. दूसरे तरीके को 'दबाव शल्क-तकनीक' कहा जाता है। इसमें क्रोड को एक स्थिर सतह पर टिकाया जाता है और इस क्रोड पर हड्डी या पत्थर रखकर उस पर हथौड़ीनुमा पत्थर से शल्क निकाले जाते हैं जिससे वांछित उपकरण बनाए जाते हैं।

आग की खोज

मानचित्र 2 में कुरनूल गुफा ढूँढ़ो (पृष्ठ 14)। यहाँ राख के अवशेष मिले हैं। इसका मतलब यह है कि आरंभिक लोग आग जलाना सीख गए थे। आग का इस्तेमाल कई कार्यों के लिए किया गया होगा जैसे कि प्रकाश के लिए, मांस पकाने के लिए और खतरनाक जानवरों को दूर आदि भगाने के लिए।

आज हम आग का उपयोग किसलिए करते हैं?

बदलती जलवायु

लगभग 12,000 साल पहले दुनिया की जलवायु में बड़े बदलाव आए और गर्मी बढ़ने लगी। इसके परिणामस्वरूप कई क्षेत्रों में घास वाले मैदान बनने लगे। इससे हिरण, बारहसिंघा, भेड़, बकरी और गाय जैसे उन जानवरों की संख्या बढ़ी, जो घास खाकर ज़िन्दा रह सकते हैं।

जो लोग इन जानवरों का शिकार करते थे, वे भी इनके पीछे आए और इनके खाने-पीने की आदतों और प्रजनन के समय की जानकारी हासिल करने लगे। हो सकता है कि तब लोग इन जानवरों को पकड़ कर अपनी ज़रूरत के अनुसार पालने की बात सोचने लगे हों। साथ ही इस काल में मछली भी भोजन का महत्वपूर्ण स्रोत बन गई।

इसी दौरान उपमहाद्वीप के भिन्न-भिन्न इलाकों में गेहूँ, जौ और धान जैसे अनाज प्राकृतिक रूप से उगने लगे थे। शायद महिलाओं, पुरुषों और बच्चों ने इन अनाजों को भोजन के लिए बटोरना शुरू कर दिया होगा।

नाम और तिथियाँ

हम जिस काल के बारे में पढ़ रहे हैं, पुरातत्त्वविदों ने उनके बड़े-बड़े नाम रखे हैं। आरंभिक काल को वे *पुरापाषाण काल* कहते हैं। यह दो शब्दों पुरा यानी 'प्राचीन', और पाषाण यानी 'पत्थर' से बना है। यह नाम पुरास्थलों से प्राप्त पत्थर के औज़ारों के महत्त्व को बताता है। पुरापाषाण काल बीस लाख साल पहले से 12,000 साल पहले के दौरान माना जाता है। इस काल को भी तीन भागों में विभाजित किया गया है : 'आरंभिक', 'मध्य' एवं 'उत्तर' पुरापाषाण युग। मानव इतिहास की लगभग 99 प्रतिशत कहानी इसी काल के दौरान घटित हुई।

जिस काल में हमें पर्यावरणीय बदलाव मिलते हैं, उसे 'मेसोलिथ' यानी *मध्यपाषाण युग* कहते हैं। इसका समय लगभग 12,000 साल पहले से लेकर 10,000 साल पहले तक माना गया है। इस काल के पाषाण औज़ार आमतौर पर बहुत छोटे होते थे। इन्हें 'माइक्रोलिथ' यानी *लघुपाषाण* कहा जाता है। प्रायः इन औज़ारों में हड्डियों या लकड़ियों के मुट्ठे लगे हँसिया और आरी जैसे औज़ार मिलते थे। साथ-साथ पुरापाषाण युग वाले औज़ार भी इस दौरान बनाए जाते रहे।

पृष्ठ 13 पर बने चित्र देखो। इस दौरान बनाए गए औज़ारों में तुम्हें कोई बदलाव दिखाई देता है?

अगले युग की शुरुआत लगभग 10,000 साल पहले से होती है। इसे *नवपाषाण युग* कहा जाता है। अगले अध्याय में तुम नवपाषाण युग के बारे में पढ़ोगे।

नवपाषाण का क्या मतलब होता होगा?

हमने कुछ स्थानों के नाम दिए हैं। अगले अध्यायों में तुम्हें ऐसे अनेक नाम मिलेंगे। अक्सर हम पुराने स्थानों के लिए उन नामों का प्रयोग करते हैं, जो आज प्रचलित हैं, क्योंकि हमें ज्ञात नहीं है कि उस काल में इनके क्या नाम रहे होंगे।

साथ ही वे यह भी सीखने लगे होंगे कि यह अनाज कहाँ उगते थे और कब पककर तैयार होते थे। ऐसा करते-करते लोगों ने इन अनाजों को खुद पैदा करना सीख लिया होगा।

शैल चित्रकला : इनसे हमें क्या पता चलता है?

जिन गुफाओं में लोग रहते थे, उनमें से कुछ की दीवारों पर चित्र मिले हैं। इनमें कुछ सुन्दर उदाहरण मध्य प्रदेश और दक्षिणी उत्तर प्रदेश की गुफाओं से मिले चित्र हैं। इनमें जंगली जानवरों का बड़ी कुशलता से सजीव चित्रण किया गया है।

एक शैल चित्र।
इस चित्र के बारे में बताओ।

कौन क्या करता था?

हमने पढ़ा कि आरंभिक लोग शिकार तथा फल-मूल का संग्रह किया करते थे। वे पत्थरों के औज़ार और गुफाओं में चित्र बनाते थे। क्या हमें कोई ऐसे साक्ष्य मिलते हैं जिनसे पता चले कि महिलाएँ शिकार करती थीं या पुरुष औज़ार बनाते थे या फिर महिलाएँ चित्रकारी करती थीं और पुरुष फल-मूल इकट्ठा करते थे? वास्तव में, हमें इसका ज्ञान नहीं है। लेकिन दो बातें हो सकती हैं। महिला और पुरुष दोनों ने मिलकर कई काम एक साथ किया होगा। यह भी संभव है, कि कुछ तरह के काम केवल महिलाएँ करती थीं और कुछ केवल पुरुष। इसके अलावा उपमहाद्वीप के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग परम्पराएँ भी रही होंगी।

भारत में शुतुरमुर्ग!

भारत में पुरापाषाण युग के दौरान शुतुरमुर्ग होते थे। महाराष्ट्र के पटने पुरास्थल से शुतुरमुर्ग के अंडों के अवशेष मिले हैं। इनके कुछ छिलकों पर चित्रांकन भी मिलता है। इन अंडों से मनके भी बनाए जाते थे।

इन मनकों का उपयोग किसलिए किया गया होगा?

आज हमें शुतुरमुर्ग कहाँ मिलते हैं?

हुँस्गी का सूक्ष्म-निरीक्षण

मानचित्र 2 पर हुँस्गी ढूँढ़िए (पृष्ठ 14)। यहाँ पर पुरापाषाण युग के कई पुरास्थल मिले थे। कुछ पुरास्थलों से अलग-अलग कार्यों में लाए जाने वाले

कई प्रकार के औज़ार मिले थे। ये संभवत: आवास और उद्योग-स्थल रहे होंगे। कुछ छोटे पुरास्थलों में भी औज़ारों के बनाए जाने के प्रमाण मिले हैं। इनमें से कुछ पुरास्थल झरनों के निकट थे। अधिकांश औज़ार चूना-पत्थरों से बनाए जाते थे।

क्या तुम दूसरे प्रकार के पुरास्थलों के नाम बता सकते हो?

अन्यत्र

अपने एटलस में फ्रांस ढूँढ़ो। यह चित्र फ्रांस की एक गुफा का है। इस पुरास्थल की खोज लगभग 100 साल पहले चार स्कूली छात्रों ने की थी। इस तरह के चित्र लगभग 20,000 साल पहले से लेकर 10,000 साल पहले के बीच बनाए गए होंगे। इनमें कई जानवरों के चित्र हैं। इनमें जंगली घोड़े, गाय, भैंस, गैंडा, रेनडीयर, बारहसिंघा और सूअरों को गहरे-चमकीले रंगों से चित्रित किया गया है।

इन रंगों को लौह-अयस्क और चारकोल जैसे खनिज पदार्थों से बनाया जाता था। यह संभव है कि इन चित्रों को उत्सवों के अवसर पर बनाया जाता था या फिर इन्हें शिकारियों द्वारा शिकार पर निकलने से पहले कुछ अनुष्ठानों के लिए बनाया गया होगा।

क्या तुम इन्हें बनाने का कोई और कारण बता सकते हो?

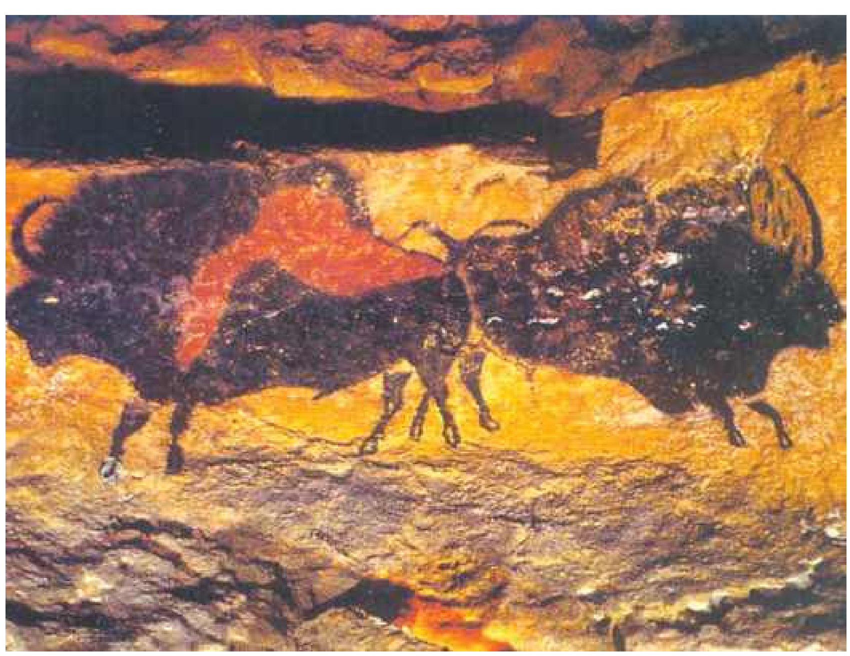

उपयोगी शब्द

आखेटक-खाद्य संग्राहक
पुरास्थल
उद्योग-स्थल
आवासीय-स्थल
पुरापाषाण
मध्यपाषाण
लघुपाषाण

कुछ महत्वपूर्ण
तिथियाँ

- मध्यपाषाण युग (12,000-10,000 साल पहले)
- नवपाषाण युग का आरंभ (10,000 साल पहले)

कल्पना करो

तुम आज से 12,000 साल पहले पत्थर की एक गुफा में रहते हो। पृष्ठ 15 पर देखो। तुम्हारे मामा गुफा की एक भीतरी दीवार पर चित्र बना रहे हैं और तुम उनकी सहायता करना चाहते हो। तुम रंग बनाओगे, रेखाएँ खींचोगे या फिर उनमें रंग भरोगे? तुम्हारे मामा तुम्हें कौन-कौन सी कहानियाँ सुनाएँगे?

आओ याद करें

1. इन वाक्यों को पूरा करो।

   (क) आखेटक-खाद्य संग्राहक गुफाओं में इसलिए रहते थे क्योंकि ———।

   (ख) घास वाले मैदानों का विकास ——————— साल पहले हुआ।

   (ग) आरंभिक लोगों ने गुफाओं की ——————— पर चित्र बनाए।

   (घ) हुँस्गी में ——————— से औज़ार बनाए जाते थे।

2. उपमहाद्वीप के आधुनिक राजनीतिक मानचित्र को पृष्ठ 136 पर देखो। उन राज्यों को ढूँढ़ो जहाँ भीमबेटका, हुँस्गी और कुरनूल स्थित हैं। क्या तुषार की रेल इन जगहों के पास से होकर गई होगी?

आओ चर्चा करें

3. आखेटक-खाद्य संग्राहक एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों घूमते रहते थे? उनकी यात्रा और आज की हमारी यात्रा के कारणों में क्या समानताएँ या क्या भिन्नताएँ हैं?

4. आज तुम फल काटने के लिए कौन-से औज़ार चुनोगे? वह औज़ार किस चीज़ से बना होगा?

5. आखेटक-खाद्य संग्राहक आग का उपयोग किन-किन चीज़ों के लिए करते थे? क्या तुम आज आग का उपयोग इनमें से किसी चीज़ के लिए करोगे!

आओ करके देखें

6. अपनी पुस्तिका के पन्ने पर एक लाइन खींचकर इसके दो खाने बनाओ। बाएँ खाने में, उन खाद्य पदार्थों की सूची बनाओ, जिन्हें आखेटक-खाद्य संग्राहक खाते थे (पृष्ठ 11 पर देखो) और दाएँ खाने में तुम जो चीज़ें खाते हो उनमें से कुछ के नाम लिखो। क्या तुम्हें इन दोनों में कोई समानता या भेद दिखाई देता है?

7. यदि तुम्हारे पास कोई गुटिका (प्राकृतिक पत्थर का टुकड़ा, जैसे कि (पृष्ठ 13 पर दिखाया गया है) हो तो उसे किस काम के लिए इस्तेमाल करोगे?

8. ऐसे दो काम लिखो जिन्हें आज महिलाएँ और पुरुष दोनों करते हैं। दो ऐसे काम बताओ जिन्हें सिर्फ़ महिलाएँ ही करती हैं और दो वे जिन्हें सिर्फ़ पुरुष ही करते हैं। अपनी सूची की अपने दो साथियों की सूचियों से तुलना करो। क्या तुम्हें इनमें कोई समानता या भेद दिखाई दे रहा है?

This page not to be processed

अध्याय 3

भोजन : संग्रह से उत्पादन तक

नेइनुओ का भोजन

आज नेइनुओ अपना पसंदीदा खाना खा रही थी- चावल, स्क्वॉश, कद्दू, बीन्स और गोश्त। स्क्वॉश, कद्दू और बीन्स उसकी नानी ने अपने घर के पिछवाड़े के छोटे से बगीचे में ही उगाया था। खाते-खाते नेइनुओ को पिछले दिनों अपनी स्कूल की तरफ़ से की गई यात्रा के दौरान मध्य प्रदेश में खाए खाने की याद आ गई। वह कितना मसालेदार था। पर वह ऐसा क्यों था?

विभिन्न प्रकार के भोजन

आज हमें अपने भोजन का अधिकांश हिस्सा उगाई गई फ़सलों और पाले गए पशुओं से मिलता है। भिन्न-भिन्न फ़सलों को उगाने के लिए भिन्न-भिन्न जलवायु की आवश्यकता पड़ती है जैसे धान की खेती के लिए गेहूँ या जौ की तुलना में ज़्यादा पानी की ज़रूरत पड़ती है। इसीलिए हम देखते हैं कि किसान विशेष फ़सल विशेष क्षेत्रों में ही उगाते हैं। यही नहीं पशुओं को भी अपने अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते हैं कि सूखी और पहाड़ी जलवायु में मवेशियों की तुलना में भेड़ या बकरी अधिक सहजतापूर्वक जीवित रह सकते हैं। पर जैसाकि तुमने अध्याय 2 में पढ़ा है, स्त्री-पुरुषों ने अपने भोजन का उत्पादन हमेशा नहीं किया।

खेती और पशुपालन की शुरुआत

अध्याय 2 में हमने पढ़ा है कि दुनिया की जलवायु बदलती रही है। साथ ही लोग जिन वनस्पतियों और पशुओं का भोजन के रूप में इस्तेमाल करते थे, वे भी बदलते रहे। लोगों का ध्यान कुछ बातों की ओर गया जैसे खाने योग्य वनस्पतियाँ कहाँ-कहाँ मिल सकती हैं, बीज कैसे अपनी डंठल से टूट कर गिरते हैं, गिरे बीजों का अंकुरण और उनसे पौधों का निकलना आदि। इसी तरह उन्होंने पौधों की देखभाल करनी शुरू कर दी होगी। चिड़ियों और जानवरों से पौधों की सुरक्षा की होगी, ताकि वे ठीक से बढ़ सकें और उनके बीज पक सकें। इस प्रकार धीरे-धीरे वे *कृषक* बन गए होंगे।

इसी तरह लोगों ने अपने घरों के आस-पास चारा रखकर जानवरों को आकर्षित कर उन्हें पालतू बनाया होगा। सबसे पहले जिस जंगली जानवर को पालतू बनाया गया वह कुत्ते का जंगली पूर्वज था। धीरे-धीरे लोग भेड़, बकरी, गाय और सूअर जैसे जानवरों को अपने घरों के नज़दीक आने को उत्साहित करने लगे। ऐसे जानवर झुण्ड में रहते थे और ज़्यादातर घास खाते थे। अक्सर लोग अन्य जंगली जानवरों के आक्रमण से इनकी सुरक्षा किया करते थे और इस तरह धीरे-धीरे वे *पशुपालक* बन गए होंगे।

क्या तुम बता सकती हो कि सबसे पहले कुत्तों को ही पालतू क्यों बनाया गया?

बसने की प्रक्रिया

लोगों द्वारा पौधे उगाने और जानवरों की देखभाल करने को 'बसने की प्रक्रिया' का नाम दिया गया है। अपनाए गए ये पौधे तथा जानवर अक्सर जंगली पौधों तथा जानवरों से भिन्न होते हैं। इसकी वजह यह है कि बसने की प्रक्रिया की दिशा में अपनाए गए पौधों या जानवरों का लोग चयन करते हैं। उदाहरण के तौर पर लोग उन्हीं पौधों तथा जानवरों का चयन करते हैं जिनके बीमार होने की संभावना कम हो। यही नहीं, लोग उन्हीं पौधों को चुनते हैं जिनसे बड़े दाने वाले अनाज पैदा होते हैं; साथ ही जिनकी मज़बूत डंठले अनाज के पके दानों के भार को संभाल सकें। ऐसे पौधों के बीजों को संभालकर रखा जाता है ताकि फिर से उगाने के लिए उनके गुण सुरक्षित रह सकें।

उन्हीं जानवरों को आगे प्रजनन के लिए चुना जाता है, जो आमतौर पर अहिंसक होते हैं। इसलिए हम देखते हैं कि पाले गए जानवर तथा कृषि के लिए अपनाए गए पौधे, जंगली जानवरों तथा पौधों से धीरे-धीरे भिन्न होते गए। मिसाल के तौर पर जंगली जानवरों की तुलना में पालतू जानवरों के दाँत और सींग छोटे होते हैं।

इन दाँतों को देखो। इनमें से कौन-सा जंगली सूअर का है और कौन-सा पालतू सूअर का?

बसने की प्रक्रिया पूरी दुनिया में धीरे-धीरे चलती रही। यह करीब 12,000 साल पहले शुरू हुई। वास्तव में आज हम जो भोजन करते हैं वो इसी बसने की प्रक्रिया की वजह से है। कृषि के लिए अपनाई गई सबसे प्राचीन फ़सलों में गेहूँ तथा जौ आते हैं, उसी तरह सबसे पहले पालतू बनाए गए जानवरों में कुत्ते के बाद भेड़-बकरी आते हैं।

एक नवीन जीवन-शैली

अनाज के उपयोग

बीज के रूप में

खाद्य के रूप में

उपहार के रूप में

भंडारण के लिए

तुम किसी पौधे के बीज को बो कर देखो, तुम पाओगी कि इसे विकसित होने में कुछ वक्त लगता है। इसमें कुछ दिन, महीने या फिर साल तक लग सकता है। इसलिए जब लोग पौधे उगाने लगे तो उनकी देखभाल के लिए उन्हें एक ही जगह पर लंबे समय तक रहना पड़ा था। बीज बोने से लेकर फ़सलों के पकने तक, पौधों की सिंचाई करने, खरपतवार हटाने, जानवरों और चिड़ियों से उनकी सुरक्षा करने जैसे बहुत-से काम शामिल थे। कटाई के बाद, अनाज का उपयोग बहुत संभाल कर करना पड़ता था।

अनाज को भोजन और बीज, दोनों ही रूपों में बचा कर रखना आवश्यक था, इसलिए लोगों को इसके भंडारण की बात सोचनी पड़ी। बहुत-से इलाकों में लोगों ने मिट्टी के बड़े-बड़े बर्तन बनाए, टोकरियाँ बुनीं या फिर ज़मीन में गड्ढा खोदा। क्या तुम्हें लगता है कि शिकारी या भोजन-संग्रह करने वाले बर्तन बनाते और उनका प्रयोग करते होंगे? अपने जवाब का कारण बताओ।

जानवर : चलते-फिरते 'खाद्य-भंडार'

जानवर बच्चे देते हैं जिससे उनकी संख्या बढ़ती है। अगर जानवरों की देखभाल की जाए तो उनकी संख्या तो बढ़ती ही है साथ ही उनसे दूध भी प्राप्त हो सकता है जो भोजन का एक अच्छा स्रोत है। यही नहीं जानवरों से हमें मांस भी मिलता है। दूसरे शब्दों में, पशु-पालन भोजन के 'भंडारण' का एक तरीका है।

भोजन के अतिरिक्त जानवरों से और क्या-क्या मिल सकता है?

आज जानवरों का उपयोग किस लिए होता है?

आओ, आरंभिक कृषकों और पशुपालकों के बारे में पता करें?

मानचित्र 2 (पृष्ठ संख्या 14) देखो। क्या तुम्हें कई नीले वर्ग दिख रहे हैं? पता है, इनमें से प्रत्येक बिंदु उस जगह को दर्शाता है, जहाँ पुरातत्त्वविदों को

शुरुआती कृषकों और पशुपालकों के होने के साक्ष्य मिले हैं। ये पूरे उपमहाद्वीप में पाए गए हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण पश्चिमोत्तर क्षेत्र में, आधुनिक कश्मीर में, और पूर्वी तथा दक्षिण भारत में पाए गए हैं।

वास्तव में ये निर्दिष्ट स्थान कृषकों और पशुपालकों की बस्तियाँ थीं या नहीं, इसे जाँचने के लिए वैज्ञानिक खुदाई में मिले पौधों और पशुओं की हड्डियों के नमूनों का अध्ययन करते हैं। इनमें से सबसे रोचक जले हुए अनाज के दानों के अवशेष हैं। ऐसा लगता है कि ये गलती से या फिर जानबूझ कर जलाए गए होंगे। वैज्ञानिक इन अनाज के दानों की पहचान कर सकते हैं। इस तरह हमें पता चलता है कि इस उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में बहुत सारी फ़सलें उगाई जाती रही होंगी। वैज्ञानिक विभिन्न जानवरों की हड्डियों की भी पहचान कर सकते हैं।

नीचे की तालिका से तुम यह जान सकती हो कि कहाँ-कहाँ अनाजों और पालतू जानवरों की हड्डियों के अवशेष मिले हैं।

अनाज और हड्डियाँ	पुरास्थल
गेहूँ, जौ, भेड़, बकरी, मवेशी	मेहरगढ़ (आधुनिक पाकिस्तान)
चावल, जानवरों की हड्डियों के टुकड़े	कोल्डिहवा (आधुनिक उत्तर प्रदेश)
चावल, मवेशी (मिट्टी पर खुरों के निशान)	महागढ़ा (आधुनिक उत्तर प्रदेश)
गेहूँ और दलहन	गुफ़क्राल (आधुनिक कश्मीर)
गेहूँ और दलहन, कुत्ते, मवेशी, भैंस, भेड़, बकरी	बुर्ज़होम (आधुनिक कश्मीर)
गेहूँ, हरे चने, जौ, भैंस, बैल	चिराँद (आधुनिक बिहार)
ज्वार-बाजरा, मवेशी, भेड़, बकरी, सूअर	हल्लूर (आधुनिक आंध्रप्रदेश)
काला चना, ज्वार-बाजरा, मवेशी, भेड़, सूअर	पैय्यमपल्ली (आधुनिक आंध्रप्रदेश)
जिन जगहों पर अनाज तथा हड्डियों के अवशेष मिले हैं, ये उनमें से सिर्फ कुछ ही हैं।	

स्थायी जीवन की ओर

पुरातत्त्वविदों को कुछ पुरास्थलों पर झोपड़ियों और घरों के निशान मिले हैं। जैसे कि बुर्ज़होम (वर्तमान कश्मीर में) के लोग गड्ढे के नीचे घर बनाते थे जिन्हे गर्तवास कहा जाता है। इनमें उतरने के लिए सीढ़ियाँ होती थीं। इससे उन्हें ठंढ के मौसम में सुरक्षा मिलती होगी। पुरातत्त्वविदों को झोपड़ियों के अंदर और बाहर दोनों ही स्थानों पर आग जलाने की जगहें मिली हैं। ऐसा लगता है कि लोग मौसम के अनुसार घर के अंदर या बाहर खाना पकाते होंगे।

एक गर्तवास का चित्र बनाओ।

बहुत सारी जगहों से पत्थर के औज़ार भी मिले हैं। इनमें से कई ऐसे हैं, जो पुरापाषाणयुगीन उपकरणों से भिन्न हैं। इसीलिए इन्हें *नवपाषाण युग* का माना गया है। इनमें वे औज़ार भी हैं, जिनकी धार को और अधिक पैना करने के लिए उन पर पॉलिश चढ़ाई जाती थी। ओखली और मूसल का प्रयोग अनाज तथा वनस्पतियों से प्राप्त अन्य चीज़ों को पीसने के लिए किया जाता था। आज हज़ारों साल बाद भी ओखली और मूसल का प्रयोग अनाज पीसने के लिए किया जाता है। उसी तरह प्राचीन प्रस्तरयुगीन औज़ारों का निर्माण और प्रयोग लगातार होता रहा। कुछ औज़ार हड्डियों से भी बनाए जाते थे।

नवपाषाण युग के कुछ उपकरण।

इनकी तुलना पृष्ठ 13 (अध्याय 2) पर दिखाए गए उपकरणों से करो। तुम्हें इनमें क्या-क्या समानताएँ और भेद दिखाई देते हैं?

नवपाषाण युग के पुरास्थलों से कई प्रकार के मिट्टी के *बर्तन* मिले हैं। कभी-कभी इन पर अलंकरण भी किया जाता था। बर्तनों का उपयोग चीज़ों

को रखने के लिए किया जाता था। धीरे-धीरे लोग बर्तनों का प्रयोग खाना बनाने के लिए भी करने लगे। चावल, गेहूँ तथा दलहन जैसे अनाज अब आहार का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए थे। इसके साथ-साथ अब लोग कपड़े भी बुनने लगे थे। इसके लिए कपास जैसे आवश्यक पौधे उगाए जा सकते थे।

क्या तुम कल्पना कर सकती हो कि इस पात्र में क्या रखा होगा?

क्या ये परिवर्तन हर जगह एक साथ ही आ गए होंगे? ऐसी बात नहीं है। एक तरफ़ जहाँ कई जगहों पर स्त्री-पुरुष शिकार और भोजन-संग्रह करने का काम करते रहे थे वहीं अन्य लोगों ने हज़ारों सालों के दरम्यान धीरे-धीरे खेती और पशुपालन को अपना लिया। बहुत जगह लोग मौसम के मुताबिक बदल-बदल कर अपनी जीविका चलाया करते थे।

अन्य रीति-रिवाज

पुरातत्त्वविद् बहुत स्पष्ट रूप से इस बारे में कुछ नहीं कह सकते। विद्वानों ने ऐसे किसानों का अध्ययन किया है। इनमें प्राय: कृषक और पशुपालक समूह में रहते हैं जिन्हें *जनजाति* कहते हैं। विद्वानों ने पाया है कि ये लोग कुछ ऐसे रीति-रिवाजों को मानते हैं, जो संभवत: पहले से ही प्रचलित रहे हैं।

जनजाति

प्राय: जनजाति के लोग छोटी-छोटी बस्तियों में रहते हैं। ज़्यादातर परिवार एक-दूसरे से संबंधित होते हैं और इस तरह के परिवारों के समूह मिलकर जनजाति का निर्माण करते हैं।

- जनजाति के सदस्य शिकार, भोजन-संग्रह, खेती, पशुपालन और मछली पकड़ने जैसे पेशे अपनाते हैं। अक्सर महिलाएँ खेती का सारा काम करती हैं। इसमें ज़मीन तैयार कर बीज बोने, पौधे की देखभाल करने से लेकर फ़सल काटने तक का काम शामिल है। बच्चे पौधों की देखभाल करते हैं और चिड़ियों और जानवरों को दूर भगाते हैं ताकि वे पौधों और फ़सलों को नुकसान न पहुँचाए। महिलाएँ फ़सल दावकर अनाज कूटती-पीसती हैं। पुरुष आमतौर पर पशुओं के बड़े-बड़े झुण्डों को चराते हैं जबकि बच्चे छोटे झुण्डों को। यहाँ जानवरों की सफ़ाई तथा दूध निकालने का काम स्त्री-पुरुष दोनों मिलकर करते हैं। उसी तरह दोनों मिलकर बर्तन बनाने, टोकरियाँ बुनने, औज़ार तथा झोपड़ियाँ बनाने का काम भी साथ-साथ करते हैं। गाना, नाच और घरों की सजावट भी उनकी ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा है।

- कुछ व्यक्तियों को नेता मान लिया जाता है। वे अनुभवी वृद्ध व्यक्ति, नौजवान योद्धा या फिर पुरोहित हो सकते हैं। वयस्क महिलाओं को भी उनके ज्ञान तथा अनुभव के लिए विशिष्ट सम्मान दिया जाता है।
- जनजातियों की सांस्कृतिक-परम्पराएँ बहुत समृद्ध तथा विशिष्ट होती हैं। इनमें उनकी भाषाएँ, संगीत, कहानियाँ तथा चित्रकारी भी शामिल हैं। उनके अपने देवी-देवता होते हैं।
- ज़मीन, जंगल, घास के मैदान तथा पानी पूरे कुनबे की सम्पत्ति मानी जाती है जिनका उपयोग सभी एक साथ करते हैं। इनमें गरीब और अमीर के बीच कोई ख़ास अंतर नहीं होता। इसलिए जनजातीय समाज अन्य समाजों से भिन्न होते हैं। इन अन्य समाजों के बारे में तुम आगे पढ़ोगी।

पुरुषों द्वारा किए जाने वाले कामों की एक सूची बनाओ। महिलाएँ क्या-क्या काम करती हैं? कौन-से ऐसे काम हैं, जो स्त्री-पुरुष दोनों करते हैं?

सूक्ष्म-निरीक्षण

(क) मेहरगढ़ में जीवन-मृत्यु

मानचित्र 2 (पृष्ठ 14) में मेहरगढ़ ढूँढ़ो। यह ईरान जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण रास्ते, बोलन दर्रे के पास एक हराभरा समतल स्थान है। मेहरगढ़ संभवतः वह स्थान है, जहाँ के स्त्री-पुरुषों ने, इस इलाके में सबसे पहले जौ, गेहूँ उगाना और भेड़-बकरी पालना सीखा।

यहाँ खुदाई में सबसे पहले के स्तरों से पुरातत्त्वविदों को विभिन्न प्रकार के जानवरों की हड्डियाँ मिलीं। इनमें हिरण तथा सूअर जैसे जंगली जानवरों की हड्डियाँ भी शामिल हैं। उसके बाद के स्तरों से भेड़ और बकरियों की हड्डियाँ ज़्यादा मिली हैं। उसके ऊपर ज़्यादातर मवेशियों की ही हड्डियाँ मिली हैं, इससे ऐसा लगता है कि ये लोग मवेशियों को पालने लगे थे

मेहरगढ़ में इसके अलावा चौकोर तथा आयताकार घरों के अवशेष भी मिले हैं। प्रत्येक घर में चार या उससे ज़्यादा कमरे हैं, जिनमें से कुछ संभवतः भंडारण के काम आते होंगे।

गाँव

गाँवों की यह विशेषता है कि वहाँ रहने वाले अधिकांश लोग भोजन उत्पादन में लगे होते हैं।

पहले और बाद के स्तर

जब पुरातत्त्वविद् किसी जगह की खुदाई करते हैं तो वे कैसे समझते हैं कि कौन-से स्तर पहले के हैं और कौन-से बाद के?

इस चित्र को देखो।

मान लो लोगों ने सबसे पहले समतल भूमि (स्तर 4) पर रहना शुरू किया।

आमतौर पर लोग जहाँ रहते हैं, घर टूटने पर दुबारा वहीं घर बना लेते हैं। टूटे-फूटे सामान और कूड़ा-करकट भी घरों के आस-पास जमा होते रहते हैं। इन कारणों से बस्ती की ज़मीन धीरे-धीरे ऊँची होती रहती है और फिर सैंकड़ों सालों के बाद वहाँ एक टीला बन जाता है। इसलिए जब टीले की खुदाई की जाती है, तो उसका सबसे निचला स्तर सबसे पुराना होता है और उसके बाद के स्तर, बाद के युगों के होते हैं। यही ऊपरी तथा निचली तहें आमतौर पर स्तरों के रूप में जानी जाती हैं।

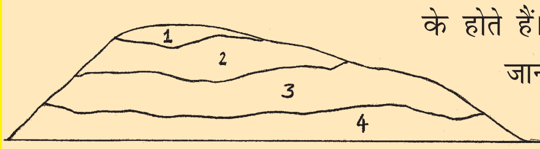

स्तर 2 और 3 को देखो। कौन-सा ज़्यादा पुराना है?

मत्यु के बाद सामान्यतया मृतक के सगे संबंधी उसके प्रति सम्मान जताते हैं। लोगों की आस्था है कि मृत्यु के बाद भी जीवन होता है। इसीलिए *कब्रों* में मृतकों के साथ कुछ सामान भी रखे जाते थे। मेहरगढ़ में ऐसी कई कब्रें मिली हैं। एक कब्र में एक मृतक के साथ एक बकरी को भी दफ़नाया गया था। संभवत: इसे परलोक में मृतक के खाने के लिए रखा गया होगा।

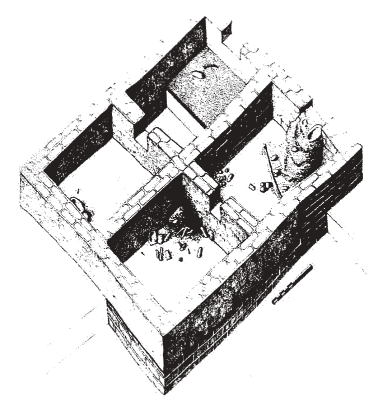

मेहरगढ़ के घर का चित्र।

मेहरगढ़ के घर शायद ऐसे दिखते हों। तुम जिस घर में रहते हो, उसके साथ इस घर की क्या समानता है?

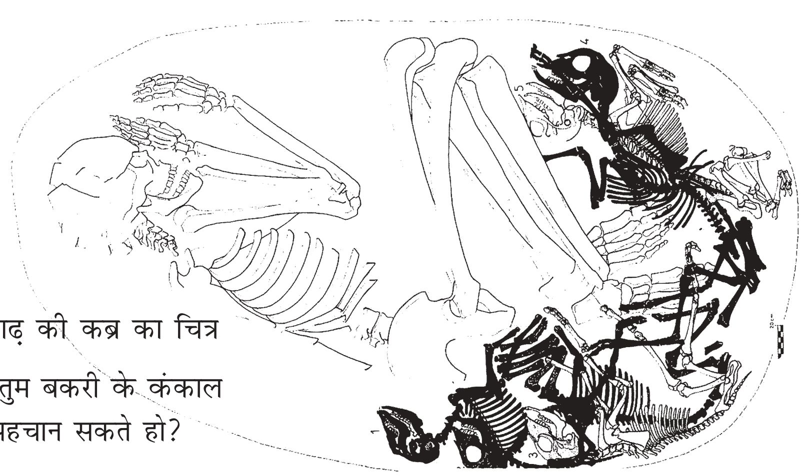

मेहरगढ़ की कब्र का चित्र

क्या तुम बकरी के कंकाल को पहचान सकते हो?

(ख) दाओजली हेडिंग

मानचित्र 2 (पृष्ठ 14) में दाओजली हेडिंग ढूँढ़ो। यह पुरास्थल चीन और म्यांमार की ओर जाने वाले रास्ते में ब्रह्मपुत्र की घाटी की एक पहाड़ी पर है। यहाँ खरल और मूसल जैसे पत्थरों के उपकरण मिले हैं। इससे पता चलता है कि यहाँ लोग भोजन के लिए अनाज उगाते थे। साथ ही यहाँ से जेडाइट पत्थर भी मिला है। संभवत: यह पत्थर चीन से आया होगा। इसके अतिरिक्त इस पुरास्थल से काष्ठाश्म (अति प्राचीन लकड़ी, जो सख्त होकर पत्थर बन गई है) के औज़ार और बर्तन भी मिले हैं।

अन्यत्र

एटलस में तुर्की ढूँढ़ो। नवपाषाण युग के सबसे प्रसिद्ध पुरास्थलों में एक चताल ह्यूक तुर्की में है। यहाँ दूर-दराज स्थानों से कई चीज़ें लाई जाती थीं और उनका उपयोग किया जाता था। जैसे सीरिया से लाया गया चकमक पत्थर, लाल सागर की कौड़ियाँ तथा भूमध्य सागर की सीपियाँ। ध्यान रहे कि उस समय तक पहिए वाले वाहन का विकास नहीं हुआ था। लोग सामान खुद या जानवरों की पीठ पर लादकर ले जाया करते थे।

बताओ कौड़ियों तथा सीपियों का क्या उपयोग होता होगा?

कल्पना करो

अगर तुम्हारे पास ज़मीन का एक छोटा-सा टुकड़ा हो तो तुम उसमें कौन-सी फ़सल उगाओगी। बीज कहाँ से मिलेंगे? और तुम उन्हें कैसे बोओगी? अपने पौधों की देखभाल तुम कैसे करोगी? और कैसे यह समझोगी कि अब फ़सल काटने लायक हो गई है?

उपयोगी शब्द

कृषक
पशुपालक
नवपाषाण युग
बर्तन
जनजाति
गाँव
घर
कब्र

आओ याद करें

1. खेती करने वाले लोग एक ही स्थान पर लंबे समय तक क्यों रहते थे?
2. पृष्ठ 25 की तालिका को देखो। नेइनुओ अगर चावल खाना चाहती है, तो उसे किन स्थानों पर जाना चाहिए।
3. पुरातत्त्वविद् ऐसा क्यों मानते हैं कि मेहरगढ़ के लोग पहले केवल शिकारी थे, और बाद में उनके लिए पशुपालन ज़्यादा महत्वपूर्ण हो गया?
4. सही या गलत बताओ।

   (क) हल्लूर में ज्वार-बाजरा मिला है।

   (ख) बुर्ज़होम में लोग आयताकार घरों में रहते थे।

   (ग) चिराँद कश्मीर का एक पुरास्थल है।

   (घ) जेडाइट, जो दाओजली हेडिंग में मिला है, चीन से लाया गया होगा।

आओ चर्चा करें

5. कृषकों-पशुपालकों का जीवन आखेटक-खाद्य संग्राहकों के जीवन से कितना भिन्न था, तीन अंतर बताओ।
6. पृष्ठ 25 की तालिका में दिए गए जानवरों की एक सूची बनाओ और यह भी बताओ कि इनका उपयोग किस रूप में किया जाता था।

आओ करके देखें

7. तुम जिन अनाजों को खाते हो उनकी एक सूची बनाओ।
8. प्रश्न 7 के उत्तर में लिखे अनाजों को क्या तुम स्वयं उगाते हो? अगर हाँ, तो एक तालिका बनाकर उसकी खेती की विभिन्न अवस्थाओं को दिखाओ। अगर नहीं, तो एक तालिका बनाकर दिखाओ कि ये अनाज किसान से लेकर तुम्हारे पास तक कैसे पहुँचे।

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

- बसने की प्रक्रिया का आरंभ (लगभग 12,000 साल पहले)
- मेहरगढ़ में बस्ती का आरंभ (लगभग 8000 साल पहले)

This page not to b e processed

अध्याय 4

आरंभिक नगर

पुराने भवन का संरक्षण

जसपाल और हरप्रीत अपने घर के पास की गली में क्रिकेट खेल रहे थे। उन्होंने देखा कि कुछ लोग उस खंडहर घर की तारीफ़ कर रहे थे, जिसे गली के बच्चे भुतहा घर कहा करते थे।

एक ने कहा, 'इसकी वास्तुकला को देखो!'

'क्या आपने कहीं लकड़ी पर इतनी सुन्दर नक्काशी देखी है?' दूसरी महिला ने कहा,

'हमें मंत्री जी को पत्र लिखकर कहना चाहिए कि वह इस खूबसूरत घर को सुरक्षित रखने के लिए इसकी मरम्मत कराने की व्यवस्था करें।'

यह सब सुनकर जसपाल और हरप्रीत सोचने लगे, कि इस पुराने खंडहर से लोगों का इतना लगाव क्यों हो सकता है?

हड़प्पा की कहानी

अक्सर पुरानी इमारत अपनी कहानी बताती है। लगभग 150 साल पहले जब पंजाब में पहली बार रेलवे लाइनें बिछाई जा रही थीं, तो इस काम में जुटे इंजीनियरों को अचानक हड़प्पा पुरास्थल मिला, जो आधुनिक पाकिस्तान में है। उन्होंने सोचा कि यह एक ऐसा खंडहर है, जहाँ से अच्छी ईंटें मिलेंगी। यह सोचकर वे हड़प्पा के खंडहरों से हज़ारों ईंटें उखाड़ ले गए जिससे उन्होंने रेलवे लाइनें बिछाई। इससे कई इमारतें पूरी तरह नष्ट हो गईं।

उसके बाद लगभग 80 साल पहले पुरातत्त्वविदों ने इस स्थल को ढूँढ़ा और तब पता चला कि यह खंडहर उपमहाद्वीप के सबसे पुराने शहरों में से एक है। चूँकि इस *नगर* की खोज सबसे पहले हुई थी, इसीलिए बाद में मिलने वाले इस तरह के सभी पुरास्थलों में जो इमारतें और चीज़ें मिलीं उन्हें हड़प्पा सभ्यता की इमारतें कहा गया। इन शहरों का निर्माण लगभग 4700 साल पहले हुआ था।

प्राय: पुरानी इमारतों को तोड़कर उनकी जगह नए भवन बनाए जाते हैं। क्या तुम्हें लगता है कि पुरानी इमारतों को सुरक्षित रखना चाहिए?

इन नगरों की विशेषता क्या थी?

इन नगरों में से कई को दो या उससे ज़्यादा हिस्सों में विभाजित किया गया था। प्राय: पश्चिमी भाग छोटा था लेकिन ऊँचाई पर बना था और पूर्वी हिस्सा बड़ा था लेकिन यह निचले इलाके में था। ऊँचाई वाले भाग को पुरातत्त्वविदों ने *नगर-दुर्ग* कहा है और निचले हिस्से को *निचला-नगर* कहा है। दोनों हिस्सों की चारदीवारियाँ पकी ईंटों की बनाई जाती थीं। इसकी ईंटें इतनी अच्छी थीं कि हज़ारों सालों बाद आज तक उनकी दीवारें खड़ी रहीं। दीवार बनाने के लिए ईंटों की चिनाई इस तरह करते थे जिससे कि दीवारें खूब मज़बूत रहें।

कुछ नगरों के *नगर-दुर्ग* में कुछ खास इमारतें बनाई गई थीं। मिसाल के तौर पर मोहनजोदड़ो में खास तालाब बनाया गया था, जिसे पुरातत्त्वविदों ने महान स्नानागार कहा है। इस तालाब को बनाने में ईंट और प्लास्टर का इस्तेमाल किया गया था। इसमें पानी का रिसाव रोकने के लिए प्लास्टर के ऊपर चारकोल की परत चढ़ाई गई थी। इस सरोवर में दो तरफ़ से उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनाई गई थीं, और चारों ओर कमरे बनाए गए थे। इसमें भरने के लिए पानी कुएँ से निकाला जाता था, उपयोग के बाद इसे खाली कर दिया जाता था। शायद यहाँ विशिष्ट नागरिक विशेष अवसरों पर स्नान किया करते थे।

कालीबंगा और लोथल जैसे अन्य नगरों में अग्निकुण्ड मिले हैं, जहाँ संभवत: यज्ञ किए जाते होंगे। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे कुछ नगरों में बड़े-बड़े भंडार-गृह मिले हैं।

ये नगर आधुनिक पाकिस्तान के पंजाब और सिंध प्रांतों, भारत के गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पंजाब प्रांतों में मिले हैं। इन सभी स्थलों से पुरातत्त्वविदों को अनोखी वस्तुएँ मिली हैं : जैसे मिट्टी के लाल बर्तन जिन पर काले रंग के चित्र बने थे, पत्थर के बाट, मुहरें, मनके, ताँबे के उपकरण और पत्थर के लंबे ब्लेड आदि।

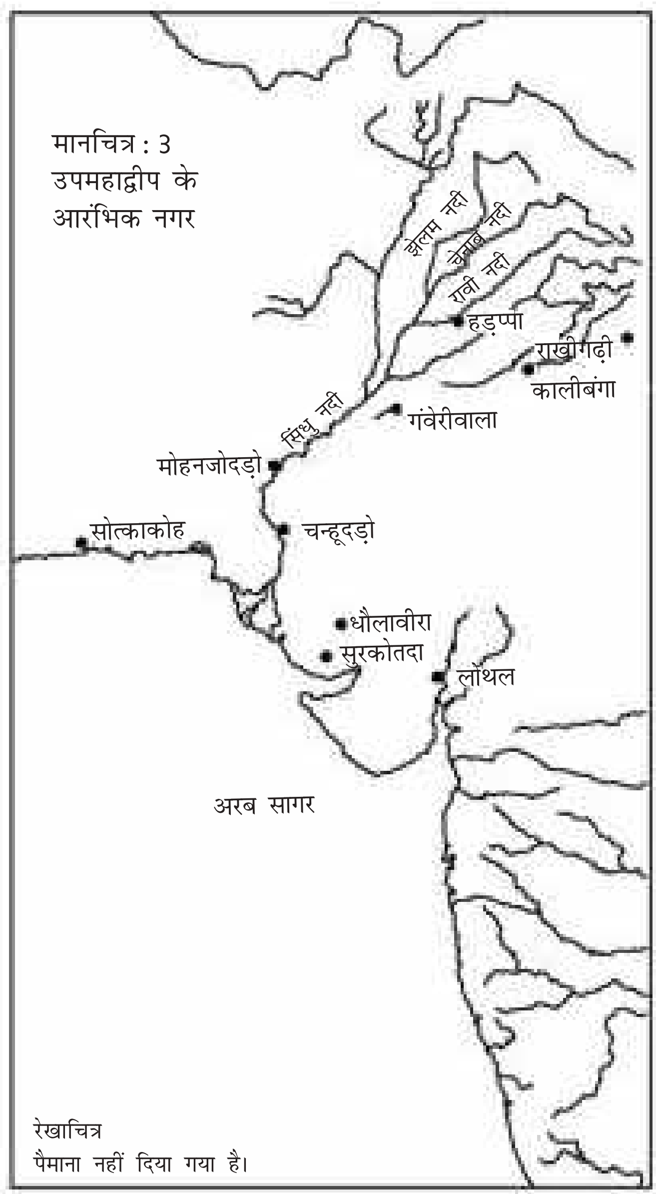

मानचित्र : 3
उपमहाद्वीप के आरंभिक नगर

महान स्नानागार

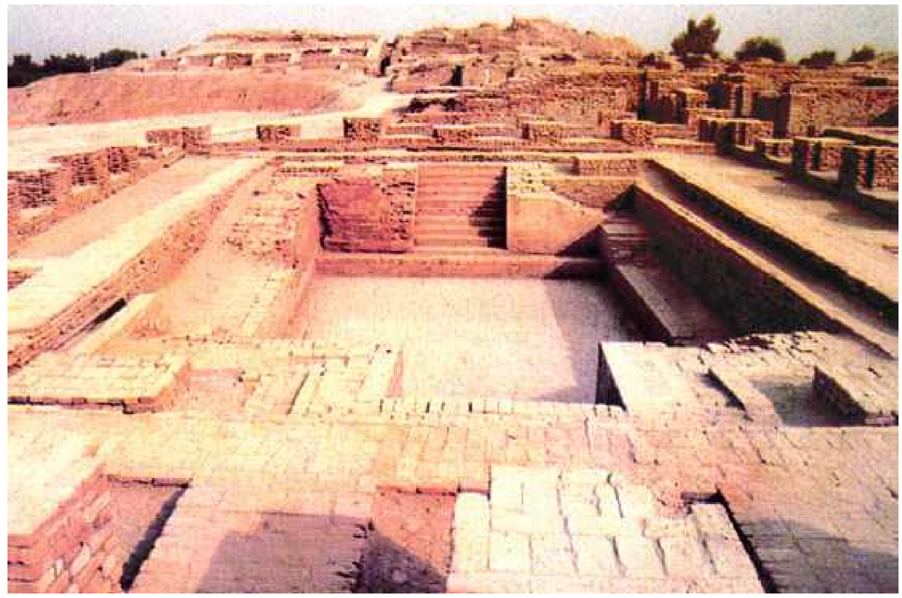

भवन, नाले और सड़कें

हड़प्पा के नगरों में ईंटों की चिनाई

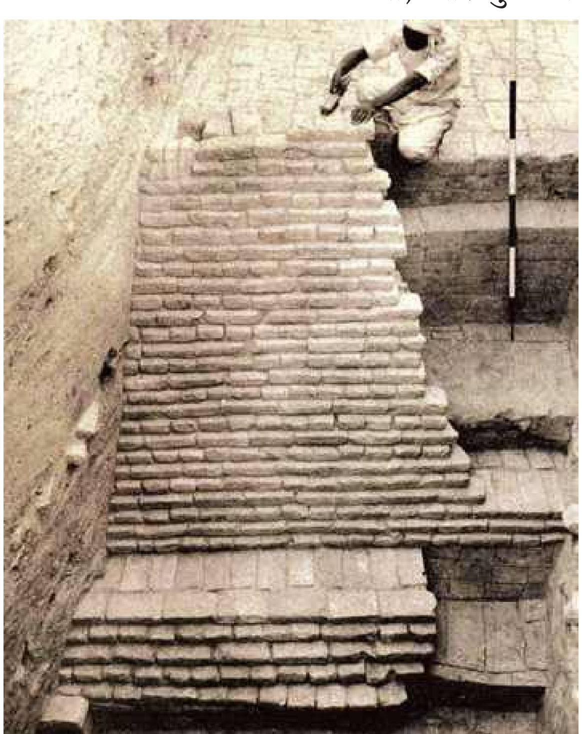

इन नगरों के घर आमतौर पर एक या दो मंज़िलें होते थे। घर के आंगन के चारों ओर कमरे बनाए जाते थे। अधिकांश घरों में एक अलग स्नानघर होता था, और कुछ घरों में कुएँ भी होते थे।

कई नगरों में ढके हुए नाले थे। इन्हें सावधानी से सीधी लाइन में बनाया जाता था। हर नाली में हल्की ढलान होती थी ताकि पानी आसानी से बह सके। अक्सर घरों की नालियों को सड़कों की नालियों से जोड़ दिया जाता था, जो बाद में बड़े नालों में मिल जाती थीं। नालों के ढके होने के कारण इनमें जगह-जगह पर मेनहोल बनाए गए थे, जिनके ज़रिए इनकी देखभाल और सफ़ाई की जा सके। घर, नाले और सड़कों का निर्माण योजनाबद्ध तरीके से एक साथ ही किया जाता था।

यहाँ पर वर्णित घरों और पिछले अध्याय में वर्णित घरों में तुम्हें क्या अंतर दिखाई देता है? कोई दो अंतर बताओ।

नगरीय जीवन

हड़प्पा के नगरों में बड़ी हलचल रहा करती होगी। यहाँ पर ऐसे लोग रहते होंगे, जो नगर की खास इमारतें बनाने की योजना में जुटे रहते थे। ये संभवत: यहाँ के शासक थे। यह भी संभव है, कि ये शासक लोगों को भेज कर दूर-दूर से धातु, बहुमूल्य पत्थर और अन्य उपयोगी चीज़ें मँगवाते थे। शायद शासक लोग खूबसूरत मनकों तथा सोने-चाँदी से बने आभूषणों जैसी कीमती चीज़ों को अपने पास रखते होंगे। इन नगरों में *लिपिक* भी होते थे, जो *मुहरों* पर तो लिखते ही थे, और शायद अन्य चीज़ों पर भी लिखते होंगे, जो बच नहीं पाई हैं।

इसके अलावा नगरों में *शिल्पकार* स्त्री-पुरुष भी रहते थे जो अपने घरों या किसी उद्योग-स्थल पर तरह-तरह की चीज़ें बनाते होंगे। लोग लंबी यात्राएँ भी करते थे, और वहाँ से उपयोगी वस्तुएँ लाते थे, और साथ ही लाते थे सुदूर देशों की किस्से-कहानियाँ। मिट्टी से बने कई खिलौने भी मिले हैं, जिनसे बच्चे खेलते होंगे।

नगर में रहने वाले लोगों की एक सूची बनाओ।

क्या इनमें से कुछ ऐसे लोग हैं, जो मेहरगढ़ जैसे गाँवों में रहते थे?

सबसे ऊपर: मोहनजोदड़ो की एक सड़क और उसमें बना नाला।
ऊपर: एक कुआँ।
बाईं ओर नीचे: हड़प्पा की एक मुहर।
इस मुहर के ऊपर के चिह्न एक खास लिपि में हैं। उपमहाद्वीप में पाए गए लेखन का यह प्राचीनतम उदाहरण है। विद्वानों ने इसे पढ़ने की कोशिश की है, लेकिन अभी तक यह पता नहीं चल पाया है कि इसका अर्थ क्या है।
दाईं ओर नीचे: पकी मिट्टी के खिलौने।

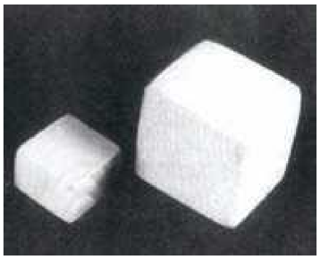

ऊपर: पत्थर के बाट देखो। कितने ध्यान से और उपयुक्त तरीके से इन बाटों को बनाया गया है। इन्हें चर्ट पत्थर से बनाया गया था। इन्हें शायद बहुमूल्य पत्थर और धातुओं को तौलने के लिए बनाया गया होगा।

मध्य में बाएँ मनके। इनमें से कई कार्नीलियन पत्थरों से बनाए गए थे। पत्थरों को काट और तराशकर मनके बनाए गए। इनके बीच छेद किए गए थे ताकि धागा डालकर माला बनाई जाए।

मध्य में दाएँ पत्थर के धारदार फलक

नीचे दाएँ: कढ़ाईदार वस्त्र। एक महत्वपूर्ण व्यक्ति की पत्थर से बनी मूर्ति जो मोहनजोदड़ो से मिली थी। इसमें उसे कढ़ाईदार वस्त्र पहने दिखाया गया है।

नगर और नए शिल्प

आओ अब कुछ ऐसी चीज़ों के बारे में अध्ययन करें जो हड़प्पा के नगरों से प्राप्त हुई हैं। पुरातत्त्वविदों को जो चीज़ें वहाँ मिली हैं, उनमें अधिकतर पत्थर, शंख, ताँबे, काँसे, सोने और चाँदी जैसी *धातुओं* से बनाई गई थीं। ताँबे और काँसे से औज़ार, हथियार, गहने और बर्तन बनाए जाते थे। सोने और चाँदी से गहने और बर्तन बनाए जाते थे।

यहाँ मिली सबसे आकर्षक वस्तुओं में मनके, बाट और फलक हैं।

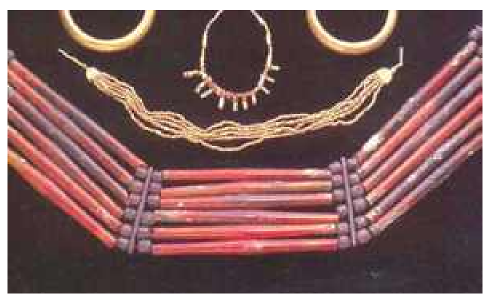

हड़प्पा सभ्यता के लोग पत्थर की मुहरें बनाते थे। इन आयताकार (पृष्ठ 35) मुहरों पर सामान्यत: जानवरों के चित्र मिलते हैं। हड़प्पा सभ्यता के लोग काले रंग से डिज़ाइन किए हुए खूबसूरत लाल मिट्टी के बर्तन बनाते थे। देखो पृष्ठ 6 ।

अध्याय 3 में तुमने जिन गाँवों के बारे में पढ़ा क्या वहाँ भी धातु का उपयोग होता था?

क्या वे पत्थर के बाट बनाते थे?

संभवत: 7000 साल पहले मेहरगढ़ में कपास की खेती होती थी। मोहनजोदड़ो से कपड़े के टुकड़ों के अवशेष चाँदी के एक फूलदान के ढक्कन तथा कुछ अन्य ताँबे की वस्तुओं से चिपके हुए मिले हैं। पकी मिट्टी तथा फ़ेयॅन्स से बनी तकलियाँ सूत कताई का संकेत देती हैं।

इनमें से अधिकांश वस्तुओं का निर्माण *विशेषज्ञों* ने किया था। विशेषज्ञ उसे कहते हैं, जो किसी खास चीज़ को बनाने के लिए खास प्रशिक्षण लेता है जैसे – पत्थर तराशना, मनके चमकाना या फिर मुहरों पर पच्चीकारी करना, आदि। पृष्ठ 36 पर चित्र देखो कि मूर्ति का चेहरा कितने आकर्षक ढंग से बनाया गया और उसकी दाढ़ी कितनी अच्छी तरह दर्शाई गई है। यह किसी विशेषज्ञ मूर्तिकार का ही काम हो सकता है।

हर व्यक्ति विशेषज्ञ नहीं हो सकता था। हमें यह पता नहीं है कि क्या सिर्फ पुरुष ही ऐसे कामों में प्रशिक्षण हासिल करते थे, या फिर केवल महिलाएँ ही। शायद कुछ महिलाएँ और पुरुष दोनों ही इस काम में दक्ष थे।

फ़ेयॅन्स

पत्थर और शंख प्राकृतिक तौर पर पाए जाते हैं, लेकिन फ़ेयॅन्स को कृत्रिम रूप से तैयार किया जाता है। बालू या स्फ़टिक पत्थरों के चूर्ण को गोंद में मिलाकर उनसे वस्तुएँ बनाई जाती थीं। उसके बाद उन वस्तुओं पर एक चिकनी परत चढ़ाई जाती थी। इस चिकनी परत के रंग प्राय: नीले या हल्के समुद्री हरे होते थे।

फ़ेयॅन्स से मनके, चूड़ियाँ, बाले और छोटे बर्तन बनाए जाते थे।

कच्चे माल की खोज में

कच्चा माल उन पदार्थों को कहते हैं जो या तो प्राकृतिक रूप से मिलते हैं या फिर किसान या पशुपालक उनका उत्पादन करते हैं जैसे लकड़ी या धातुओं के अयस्क प्राकृतिक रूप से उपलब्ध कच्चे माल हैं। इनसे फिर कई तरह की चीज़ें बनाई जाती हैं। मिसाल के तौर पर किसानों द्वारा पैदा किए गए कपास को कच्चा माल कहते हैं, जिससे बाद में कताई-बुनाई करके कपड़ा तैयार किया जाता है। हड़प्पा में लोगों को कई चीज़ें वहीं मिलती थीं, लेकिन ताँबा, लोहा, सोना, चाँदी और बहुमूल्य पत्थरों जैसे पदार्थों का वे दूर-दूर से आयात करते थे।

हड़प्पा के लोग ताँबे का आयात सम्भवत: आज के राजस्थान से करते थे। यहाँ तक कि पश्चिम एशियाई देश ओमान से भी ताँबे का आयात किया जाता था। काँसा बनाने के लिए तांबे के साथ मिलाई जाने वाली धातु टिन का आयात आधुनिक ईरान और अफ़गानिस्तान से किया जाता था। सोने का आयात आधुनिक कर्नाटक और बहुमूल्य पत्थर का आयात गुजरात, ईरान और अफ़गानिस्तान से किया जाता था।

चीज़ों को एक जगह से दूसरी जगह कैसे ले जाया जाता था?
इन चित्रों को देखो। एक खिलौना है, और दूसरी एक मुहर।
क्या तुम बता सकते हो, कि *हड़प्पा के लोग यातायात के लिए किन साधनों का प्रयोग करते थे?*
पिछले अध्यायों में क्या तुमको पहिए वाले वाहनों की जानकारी दी गई है?

नगरों में रहने वालों के लिए भोजन

लोग नगरों के अलावा गाँवों में भी रहते थे। वे अनाज उगाते थे और जानवर पालते थे। किसान और चरवाहे ही शहरों में रहने वाले शासकों, लेखकों और दस्तकारों को खाने के सामान देते थे। पौधों के अवशेषों से पता चलता है कि हड़प्पा के लोग गेहूँ, जौ, दालें, मटर, धान, तिल और सरसों उगाते थे।

बच्चों का खिलौना–हल।
आज हल चलाने वाले ज़्यादातर किसान पुरुष होते हैं। हमें ज्ञात नहीं है कि क्या हड़प्पा में भी यही प्रथा थी।

ज़मीन की जुताई के लिए *हल* का प्रयोग एक नई बात थी। हड़प्पा काल के हल तो नहीं बच पाए हैं, क्योंकि वे प्राय: लकड़ी से बनाए जाते थे, लेकिन हल के आकार के खिलौने मिले हैं। इस क्षेत्र में बारिश कम होती है, इसलिए *सिंचाई* के लिए लोगों ने कुछ तरीके अपनाए होंगे। संभवत: पानी का संचय किया जाता होगा और जरूरत पड़ने पर उससे फ़सलों की सिंचाई की जाती होगी।

हड़प्पा के लोग गाय, भैंस, भेड़ और बकरियाँ पालते थे। बस्तियों के आस-पास तालाब और चारागाह होते थे। लेकिन सूखे महीनों में मवेशियों के झुंडों को चारा-पानी की तलाश में दूर-दूर तक

ले जाया जाता था। वे बेर जैसे फलों को इकट्ठा करते थे, मछलियाँ पकड़ते थे, और हिरण जैसे जानवरों का शिकार भी करते थे।

गुजरात में हड़प्पाकालीन नगर का सूक्ष्म-निरीक्षण

कच्छ के इलाके में खदिर बेत के किनारे धौलावीरा नगर बसा था। वहाँ साफ़ पानी मिलता था और ज़मीन उपजाऊ थी। जहाँ हड़प्पा सभ्यता के कई नगर दो भागों में विभक्त थे वहीं धौलावीरा नगर को तीन भागों में बाँटा गया था। इसके हर हिस्से के चारों ओर पत्थर की ऊँची-ऊँची दीवार बनाई गई थी। इसके अंदर जाने के लिए बड़े-बड़े प्रवेश-द्वार थे। इस नगर में एक खुला मैदान भी था, जहाँ सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे। यहाँ मिले कुछ अवशेषों में हड़प्पा लिपि के बड़े-बड़े अक्षरों को पत्थरों में खुदा पाया गया है। इन अभिलेखों को संभवत: लकड़ी में जड़ा गया था। यह एक अनोखा अवशेष है, क्योंकि आमतौर पर हड़प्पा के लेख मुहर जैसी छोटी वस्तुओं पर पाए जाते हैं।

गुजरात की खम्भात की खाड़ी में मिलने वाली साबरमती की एक उपनदी के किनारे बसा लोथल नगर ऐसे स्थान पर बसा था, जहाँ कीमती पत्थर जैसा कच्चा माल आसानी से मिल जाता था। यह पत्थरों, शंखों और धातुओं से बनाई गई चीज़ों का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। इस नगर में एक भंडार गृह भी था। इस भंडार गृह से कई मुहरें और मुद्रांकन या मुहरबंदी (गीली मिट्टी पर दबाने से बनी उनकी छाप) मिले हैं।

लोथल का बन्दरगाह।

यह बड़ा तालाब लोथल का बन्दरगाह रहा होगा, जहाँ समुद्र के रास्ते आने वाली नावें रुकती थीं। संभवत: यहाँ पर माल चढ़ाया-उतारा जाता होगा।

यहाँ पर एक इमारत मिली है, जहाँ संभवत: मनके बनाने का काम होता था। पत्थर के टुकड़े, अधबने मनके, मनके बनाने वाले उपकरण और तैयार मनके भी यहाँ मिले हैं।

मुद्रा (मुहर) और मुद्रांकन या मुहरबंदी

मुहरों का प्रयोग सामान से भरे उन डिब्बों या थैलों को चिह्नित करने के लिए किया जाता होगा, जिन्हें एक जगह से दूसरी जगह भेजा जाता था। थैले को बंद करने के बाद उनके मुहानों पर गीली मिट्टी पोत कर उन पर मुहर लगाई जाती थी। मुहर की छाप को मुहरबन्दी कहते हैं।

अगर यह छाप टूटी हुई नहीं होती थी, तो यह साबित हो जाता था, कि सामान के साथ छेड़-छाड़ नहीं हुई है।

आज भी मुहर का प्रयोग होता है। पता लगाओ कि मुहरों का उपयोग किसलिए किया जाता है।

सभ्यता के अंत का रहस्य

लगभग 3900 साल पहले एक बड़ा बदलाव देखने को मिलता है। अचानक लोगों ने इन नगरों को छोड़ दिया। लेखन, मुहर और बाटों का प्रयोग बंद हो गया। दूर-दूर से कच्चे माल का आयात काफी कम हो गया। मोहनजोदड़ो में सड़कों पर कचरे के ढेर बनने लगे। जलनिकास प्रणाली नष्ट हो गई और सड़कों पर ही झुग्गीनुमा घर बनाए जाने लगे।

यह सब क्यों हुआ? कुछ पता नहीं। कुछ विद्वानों का कहना है, कि नदियाँ सूख गई थीं। अन्य का कहना है, कि जंगलों का विनाश हो गया था। इसका कारण ये हो सकता है, कि ईंटें पकाने के लिए ईंधन की ज़रूरत पड़ती थी। इसके अलावा मवेशियों के बड़े-बड़े झुंडों से चारागाह और घास वाले मैदान समाप्त हो गए होंगे। कुछ इलाकों में बाढ़ आ गई। लेकिन इन कारणों से यह स्पष्ट नहीं हो पाता है कि सभी नगरों का अंत कैसे हो गया। क्योंकि बाढ़ और नदियों के सूखने का असर कुछ ही इलाकों में हुआ होगा।

ऐसा लगता है, कि शासकों का नियंत्रण समाप्त हो गया। जो भी हुआ हो, परिवर्तन का असर बिल्कुल साफ़ दिखाई देता है। आधुनिक पाकिस्तान के

सिंध और पंजाब की बस्तियाँ उजड़ गई थीं। कई लोग पूर्व और दक्षिण के इलाकों में नई और छोटी बस्तियों में जाकर बस गए।

इसके लगभग 1400 साल बाद नए नगरों का विकास हुआ। इनके बारे में तुम अध्याय 6 और 9 में पढ़ोगे।

अन्यत्र

अपने एटलस में मिस्र ढूँढ़ो। नील नदी के आसपास वाले इलाकों को छोड़कर मिस्र का अधिकांश भाग रेगिस्तान है।

लगभग 5000 साल पहले मिस्र में शासन करने वाले राजाओं ने सोना, चाँदी, हाथीदाँत, लकड़ी और हीरे-जवाहरात लाने के लिए अपनी सेनाएँ दूर-दूर तक भेजीं। इन्होंने बड़े-बड़े मकबरे बनवाए जिन्हें 'पिरामिड' के नाम से जाना जाता है।

राजाओं के मरने पर उनके शवों को इन्हीं पिरामिडों में दफ़नाकर सुरक्षित रखा जाता था। इन शवों को *ममी* कहा जाता है। उनके शवों के साथ और भी अनेक चीज़ें दफ़नायी जाती थीं। इनमें खाद्यान्न, पेय, वस्त्र, गहने, बर्तन, वाद्ययंत्र, हथियार और जानवर शामिल हैं। कभी-कभी शव के साथ उनके सेवक और सेविकाओं को भी दफ़ना दिया जाता था। दुनिया के इतिहास में शवों को दफ़नाने की परंपरा को देखते हुए मिस्र में सबसे ज़्यादा धन-दौलत खर्च किया जाता था।

क्या तुम्हें लगता है, कि मरने के बाद इन राजाओं को इन चीज़ों की ज़रूरत पड़ी होगी?

कल्पना करो

तुम अपने माता-पिता के साथ 4000 साल पहले लोथल से मोहनजोदड़ो की यात्रा कर रहे हो। यह बताओ कि तुम यात्रा कैसे करोगे, तुम्हारे माता-पिता यात्रा के लिए अपने साथ क्या-क्या ले जाएँगे? और मोहनजोदड़ो में तुम क्या देखोगे?

उपयोगी शब्द

नगर
नगरदुर्ग
शासक
लिपिक
मुहर
शिल्पकार
धातु
विशेषज्ञ
कच्चा माल
हल
सिंचाई

आओ याद करें

1. पुरातत्त्वविदों को कैसे ज्ञात हुआ कि हड़प्पा सभ्यता के दौरान कपड़े का उपयोग होता था?

2. निम्नलिखित का सुमेल करो :

ताँबा	गुजरात
सोना	अफ़गानिस्तान
टिन	राजस्थान
बहुमूल्य पत्थर	कर्नाटक

3. हड़प्पा के लोगों के लिए धातुएँ, लेखन, पहिया और हल क्यों महत्वपूर्ण थे?

आओ चर्चा करें

4. इस अध्याय में पकी मिट्टी (टेराकोटा) से बने सभी खिलौनों की सूची बनाओ। इनमें से कौन-से खिलौने बच्चों को ज़्यादा पसंद आए होंगे?

5. हड़प्पा के लोगों की भोजन सामग्री की सूची बनाओ। आज इनमें से तुम क्या-क्या खाते हो? निशान लगाकर बताओ।

6. हड़प्पा के किसानों और पशुपालकों का जीवन क्या उन किसानों से भिन्न था, जिनके बारे में तुमने पिछले अध्याय में पढ़ा है? अपने उत्तर में इसका कारण बताओ।

आओ करके देखें

7. अपने शहर या गाँव की तीन महत्वपूर्ण इमारतों का ब्यौरा दो। क्या वे बस्ती के महत्वपूर्ण इलाके में बनी हैं। इन इमारतों का उपयोग किसलिए किया जाता है?

8. तुम्हारे इलाके में क्या कोई पुरानी इमारत है? यह पता करो कि वह कितनी पुरानी है और उनकी देखभाल कौन करता है।

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

- मेहरगढ़ में कपास की खेती (लगभग 7000 साल पहले)
- नगरों का आरंभ (लगभग 4700 साल पहले)
- हड़प्पा के नगरों के अंत की शुरुआत (लगभग 3900 साल पहले)
- अन्य नगरों का विकास (लगभग 2500 साल पहले)

अध्याय 5

क्या बताती हैं हमें किताबें और कब्रें

पुस्तकालय में मेरी

जैसे ही घंटी बजी शिक्षक ने छात्रों को अपने साथ आने को कहा। आज वे पहली बार पुस्तकालय जा रहे थे। मेरी ने देखा कि पुस्तकालय उसकी कक्षा से काफी बड़ा था और वहाँ किताबों से भरे कई रैक थे। कोने में एक अलमारी थी जो मोटी-मोटी किताबों से भरी थी। मेरी को एक अलमारी खोलने की कोशिश करते देख शिक्षक ने कहा, "उस अलमारी में अलग-अलग धर्मों से जुड़ी हुई महत्वपूर्ण किताबें हैं। क्या तुम्हें मालूम है कि हमारे पास वेदों का भी एक संग्रह है?"

मेरी सोचने लगी। "वेद क्या है?" चलो पता लगाएँ।

दुनिया के प्राचीनतम ग्रंथों में एक

शायद तुमने वेदों के बारे में सुना होगा। वेद चार हैं – ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद। सबसे पुराना वेद है, ऋग्वेद जिसकी रचना लगभग 3500 साल पहले हुई। ऋग्वेद में एक हज़ार से ज़्यादा *प्रार्थनाएँ* हैं जिन्हें, *सूक्त* कहा गया है। सूक्त का मतलब है, अच्छी तरह से बोला गया। ये विभिन्न देवी-देवताओं की स्तुति में रचे गए हैं। इनमें से तीन देवता बहुत महत्वपूर्ण हैं : अग्नि, इन्द्र और सोम। अग्नि आग के देवता, इन्द्र युद्ध के देवता हैं और सोम एक पौधा है, जिससे एक खास पेय बनाया जाता था।

वैदिक प्रार्थनाओं की रचना ऋषियों ने की थी। आचार्य विद्यार्थियों को इन्हें अक्षरों, शब्दों और वाक्यों में बाँटकर, सस्वर पाठ द्वारा कंठस्थ करवाते थे। अधिकांश सूक्तों के रचयिता, सीखने और सिखाने वाले पुरुष थे। कुछ प्रार्थनाओं की रचना महिलाओं ने भी की थी। ऋग्वेद की भाषा प्राक् संस्कृत या वैदिक संस्कृत कहलाती है। तुम स्कूल में जो संस्कृत पढ़ती हो उससे यह भाषा थोड़ी भिन्न है।

संस्कृत और अन्य भाषाएँ

संस्कृत भाषा भारोपीय (भारत–यूरोपीय) भाषा-परिवार का हिस्सा है। भारत की कई भाषाएँ – असमिया, गुजराती, हिंदी, कश्मीरी और सिंधी, एशियाई भाषाएं जैसे फ़ारसी तथा यूरोप की बहुत-सी भाषाएँ जैसे – अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी, जर्मन, यूनानी, इतालवी, स्पैनिश आदि इसी परिवार से जुड़ी हुई हैं। उन्हें एक भाषा-परिवार इसलिए कहा जाता है क्योंकि आरंभ में उनमें कई शब्द एक जैसे थे। उदाहरण के लिए 'मातृ' (संस्कृत), माँ (हिंदी) और 'मदर' (अंग्रेज़ी) शब्द को देखो।

क्या तुम्हें इनमें कोई समानता नज़र आती है?

उपमहाद्वीप में दूसरे भाषा-परिवारों की भी भाषाएँ बोली जाती हैं। उदाहरण के लिए पूर्वोत्तर प्रदेशों में तिब्बत-बर्मा परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम, द्रविड़ भाषा-परिवार की भाषाएँ हैं। जबकि झारखंड और मध्य भारत के कई हिस्सों में बोली जाने वाली भाषाएँ ऑस्ट्रो–एशियाटिक परिवार से जुड़ी हैं।

उन भाषाओं की सूची बनाओ जिनके बारे में तुमने सुन रखा है। उनके भाषा-परिवारों को पहचानने की कोशिश करो।

हम जिन किताबों को पढ़ते हैं वे लिखी और छापी गई हैं। ऋग्वेद का उच्चारण किया जाता था और श्रवण किया जाता था न कि पढ़ा जाता था। रचना के कई सदियों बाद इसे पहली बार लिखा गया। इसे छापने का काम तो मुश्किल से दो सौ साल पहले हुआ।

इतिहासकार ऋग्वेद का अध्ययन कैसे करते हैं?

इतिहासकार, पुरातत्त्ववेत्ताओं की तरह ही अतीत के बारे में जानकारी इकट्ठी करते हैं। लेकिन भौतिक अवशेषों के अलावा वे लिखित स्रोतों का भी उपयोग करते हैं। चलो देखते हैं कि वे ऋग्वेद का अध्ययन कैसे करते हैं।

ऋग्वेद के कुछ सूक्त वार्त्तालाप के रूप में हैं। विश्वामित्र नामक ऋषि और देवियों के रूप में पूजित दो नदियों (व्यास और सतलुज) के बीच यह संवाद एक ऐसे ही सूक्त का अंश है।

इन दोनों नदियों को मानचित्र 1 (पृष्ठ 2) में खोजें तथा फिर पढ़ें।

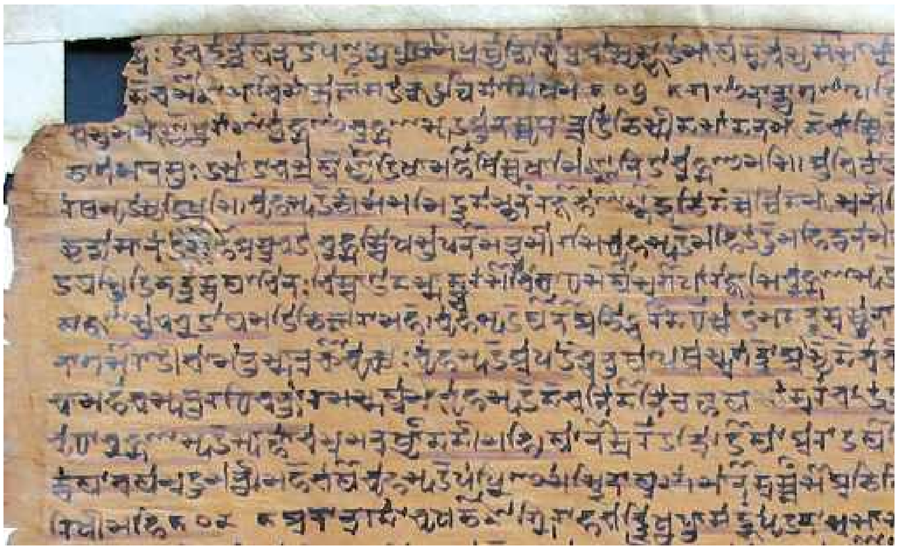

ऋग्वेद की पाण्डुलिपि का एक पन्ना।

भूर्ज वृक्ष की छाल पर लिखी यह पाण्डुलिपि कश्मीर में पाई गई थी। लगभग 150 वर्ष पहले ऋग्वेद को सबसे पहली बार छापने के लिए इसका उपयोग किया गया था। इसी पाण्डुलिपि को देखकर अंग्रेज़ी अनुवाद तैयार हुआ। यह पाण्डुलिपि पुणे, महाराष्ट्र के एक पुस्तकालय में सुरक्षित है।

विश्वामित्र और नदियाँ

विश्वामित्र – हे नदियों, अपने बछड़ों को चाटती हुई दो दमकती गायों की तरह, दो फुर्तीले घोड़ों की चाल से पहाड़ों से नीचे आओ। इन्द्र द्वारा दी हुई शक्ति से स्फूर्त तुम रथों की गति से सागर की ओर बह रही हो। तुम जल से परिपूर्ण हो और एक-दूसरे से मिल जाना चाहती हो।

नदियाँ – जल से परिपूर्ण हम देवताओं के बनाए रास्ते पर चलती हैं। एक बार निकलने पर हमें रोका नहीं जा सकता। हे ऋषि, तुम हमसे प्रार्थना क्यों कर रहे हो?

विश्वामित्र – हे बहनों, मुझ गायक की प्रार्थना सुनो। मैं रथों और गाड़ियों सहित बहुत दूर से आया हूँ। कृपा करके अपने जल को हमारे रथों और गाड़ियों की धुरियों के ऊपर न उठाओ ताकि हम आसानी से उस पार जा सकें।

नदियाँ – हम तुम्हारी प्रार्थना सुनेंगे, जिससे तुम सब सुरक्षित उस पार जा सको।

इतिहासकार यह बताते हैं कि यह प्रार्थना उस क्षेत्र में रची गई होगी जहाँ ये नदियाँ बहती हैं। वे यह भी सुझाते हैं कि जिस समाज में ऋषि रहते थे वहाँ घोड़ों और गायों को बहुत महत्त्व दिया जाता था। इसीलिए नदियों की तुलना घोड़ों और गायों से की गई है।

क्या तुम्हें लगता है कि रथ भी महत्वपूर्ण थे? अपने जवाब के लिए कारण बताओ। प्रार्थना की पंक्तियों को दुबारा पढ़कर यह बताओ कि उनमें परिवहन के लिए किन-किन साधनों का उल्लेख है।

ऋग्वेद की प्रार्थनाओं में अन्य दूसरी नदियों खासकर सरस्वती, सिन्धु और उसकी सहायक नदियों का भी ज़िक्र है। गंगा और यमुना का उल्लेख सिर्फ़ एक बार हुआ है।

मानचित्र 1 को देखो और ऐसी पाँच नदियों की सूची बनाओ जिनके नाम ऋग्वेद में नहीं हैं।

मवेशी, घोड़े और रथ

ऋग्वेद में मवेशियों, बच्चों (खासकर पुत्रों) और घोड़ों की प्राप्ति के लिए अनेक प्रार्थनाएँ हैं। घोड़ों को लड़ाई में रथ खींचने के काम में लाया जाता था। इन लड़ाईयों में मवेशी जीत कर लाए जाते थे। लड़ाईयाँ वैसे ज़मीन के लिए भी लड़ी जाती थीं जहाँ अच्छे चारागाह हों या जहाँ पर जौ जैसी जल्दी तैयार हो जाने वाली फ़सलों को उपजाया जा सकता हो। कुछ लड़ाईयाँ पानी के स्रोतों और लोगों को बंदी बनाने के लिए भी लड़ी जाती थीं।

युद्ध में जीते गए धन का कुछ भाग सरदार रख लेते थे तथा कुछ हिस्सा पुरोहित को दिया जाता था। शेष धन आम लोगों में बाँट दिया जाता था। कुछ धन *यज्ञ* करने के लिए भी प्रयुक्त होता था। यज्ञ की आग में आहुति दी जाती थी। ये आहुतियाँ देवी-देवताओं को दी जाती थीं। घी, अनाज और कभी-कभी जानवरों की भी आहुति दी जाती थी।

अधिकांश पुरुष इन युद्धों में भाग लेते थे। कोई स्थायी सेना नहीं होती थी, लेकिन लोग सभाओं में मिलते-जुलते थे और युद्ध व शांति के विषय में सलाह-मशविरा करते थे। वहाँ ये ऐसे लोगों को अपना सरदार चुनते थे जो बहादुर और कुशल योद्धा हों।

लोगों की विशेषता बताने वाले शब्द

लोगों का वर्गीकरण काम, भाषा, परिवार या समुदाय, निवास स्थान या सांस्कृतिक परंपरा के आधार पर किया जाता रहा है। ऋग्वेद में लोगों की विशेषता बताने वाले कुछ शब्दों को देखो।

ऐसे दो समूह हैं जिनका वर्गीकरण काम के आधार पर किया गया है। पुरोहित जिन्हें कभी-कभी ब्राह्मण कहा जाता था तरह-तरह के यज्ञ और अनुष्ठान करते थे। दूसरे लोग थे - राजा।

ये राजा वैसे नहीं थे जिनके बारे में तुम बाद में पढ़ोगी। ये न तो बड़ी राजधानियों और महलों में रहते थे, न इनके पास सेना थी, न ही ये कर वसूलते थे। प्राय: राजा की मृत्यु के बाद उसका बेटा अपने आप ही शासक नहीं बन जाता था।

पिछले अनुभाग को एक बार फिर पढ़ो और यह पता लगाने की कोशिश करो कि राजा क्या करते थे।

जनता या पूरे समुदाय के लिए दो शब्दों का इस्तेमाल होता था। एक था जन जिसका प्रयोग हिंदी व अन्य भाषाओं में आज भी होता है। दूसरा था *विश्* जिससे *वैश्य* शब्द निकला है। इस विषय पर तुम अध्याय 6 में विस्तार से पढ़ोगी।

ऋग्वेद में *विश्* और *जनों* के नाम मिलते हैं। इसलिए हमें पुरू-जन या विश्, भरत-जन या विश्, यदु-जन या विश् जैसे कई उल्लेख मिलते हैं।

तुम्हें इनमें से कोई नाम जाना-पहचाना लगता है?

जिन लोगों ने इन प्रार्थनाओं की रचना की वे कभी-कभी खुद को आर्य कहते थे तथा अपने विरोधियों को *दास* या *दस्यु* कहते थे। दस्यु वे लोग थे जो यज्ञ नहीं करते थे और शायद दूसरी भाषाएँ बोलते थे। बाद के समय में *दास* (स्त्रीलिंग: दासी) शब्द का मतलब *गुलाम* हो गया। दास वे स्त्री और पुरुष होते थे जिन्हें युद्ध में बंदी बनाया जाता था। उन्हें उनके मालिक की जायदाद माना जाता था। जो भी काम मालिक चाहते थे उन्हें वह सब करना पड़ता था।

जिस युग में उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिम में ऋग्वेद की रचना हो रही थी उसी समय दूसरी जगहों पर एक अलग तरह का विकास हो रहा था। देखो, वहाँ क्या हो रहा था।

खामोश प्रहरी– कहानी महापाषाणों की

अगले पृष्ठ के चित्रों को देखो।

ये शिलाखण्ड महापाषाण (महा : बड़ा, पाषाण : पत्थर) नाम से जाने जाते हैं। ये पत्थर दफ़न करने की जगह पर लोगों द्वारा बड़े करीने से लगाए गए थे। महापाषाण कब्रें बनाने की प्रथा लगभग 3000 साल पहले शुरू हुई। यह प्रथा दक्कन, दक्षिण भारत, उत्तर-पूर्वी भारत और कश्मीर में प्रचलित थी।

कुछ महत्वपूर्ण महापाषाण पुरास्थल मानचित्र 2 में दिखाए गए हैं। कुछ महापाषाण ज़मीन के ऊपर ही दिख जाते हैं। कुछ महापाषाण ज़मीन के भीतर भी होते हैं।

कई बार पुरातत्त्वविदों को गोलाकार सजाए हुए पत्थर मिलते हैं। कई बार अकेला खड़ा हुआ पत्थर मिलता है। ये ही एकमात्र प्रमाण हैं जो ज़मीन के नीचे कब्रों को दर्शाते हैं।

महापाषाणों के निर्माण के लिए लोगों को कई तरह के काम करने पड़ते थे। हमने जो कार्यों की सूची बनाई है उन्हें क्रमबद्ध करो। गड्ढे खोदना, शिलाखंडों को ढो कर लाना, बड़े पत्थरों को तराशना और मरे हुए को दफ़नाना।

ऊपर: इस तरह के महापाषाण को ताबूत शवाधान (सिस्ट) कहा जाता है। यहाँ दिखाए गए सिस्ट में एक पोर्ट-होल (बड़ा सुराख) है जो शायद पत्थरों से बने हुए कमरे में जाने का रास्ता था।

इन सब कब्रों में कुछ समानताएँ हैं। सामान्यत: मृतकों को खास किस्म के मिट्टी के बर्तनों के साथ दफ़नाया जाता था जिन्हें काले-लाल मिट्टी के बर्तनों (ब्लैक एण्ड रेड वेयर) के नाम से जाना जाता है। इनके साथ ही मिले हैं *लोहे* के औज़ार और हथियार, घोड़ों के कंकाल और सामान तथा पत्थर और सोने के गहने।

क्या हड़प्पा के शहरों में *लोहे* का प्रयोग होता था?

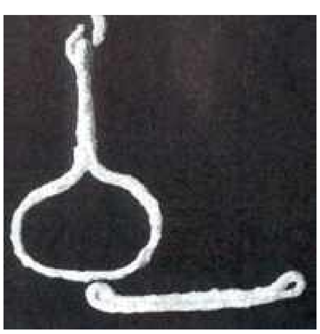

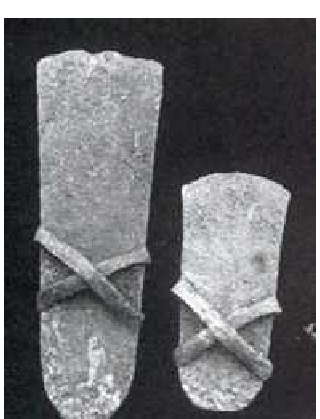

महापाषाण कब्रों से मिले लोहे के सामान

बाईं ओर: घोड़े के लिए सामान
नीचे बाईं ओर: कुल्हाड़ियाँ
नीचे: एक कटार

लोगों की सामाजिक असमानताओं के बारे में पता करना

पुरातत्त्वविद् यह मानते हैं कि कंकाल के साथ पाई गई चीज़ें मरे हुए व्यक्ति की ही रही होंगी। कभी-कभी एक कब्र की तुलना में दूसरी कब्र में ज़्यादा चीज़ें मिलती हैं। मानचित्र 2 पर (पृष्ठ 14) ब्रह्मगिरि को खोजो। यहाँ एक व्यक्ति की कब्र में 33 सोने के मनके और शंख पाए गए हैं। दूसरे कंकालों के पास सिर्फ़ कुछ मिट्टी के बर्तन ही पाए गए। यह दफ़नाए गए लोगों की सामाजिक स्थिति में भिन्नता को दर्शाता है। कुछ लोग अमीर थे तो कुछ लोग गरीब, कुछ लोग सरदार थे तो दूसरे अनुयायी।

क्या कुछ कब्रगाहें खास परिवारों के लिए थीं?

कभी-कभी महापाषाणों में एक से अधिक कंकाल मिले हैं। वे यह दर्शाते हैं कि शायद एक ही परिवार के लोगों को एक ही स्थान पर अलग-अलग समय पर दफ़नाया गया था। बाद में मरने वाले लोगों को पोर्ट-होल के रास्ते कब्रों में लाकर दफ़नाया जाता था। ऐसे स्थान पर गोलाकार लगाए गए पत्थर या चट्टान चिह्नों का काम करते थे, जहाँ लोग आवश्यकतानुसार शवों को दफ़नाने दुबारा आ सकते थे।

इनामगाँव के एक विशिष्ट व्यक्ति की कब्र

मानचित्र 2 में (पृष्ठ 14) इनामगाँव को खोजो। यह भीमा की सहायक नदी घोड़ के किनारे एक जगह है। इस जगह पर 3600 से 2700 साल पहले लोग रहते थे। यहाँ वयस्क लोगों को प्रायः गड्ढे में सीधा लिटा कर दफ़नाया जाता था। उनका सिर उत्तर की ओर होता था। कई बार उन्हें घर के अंदर ही दफ़नाया जाता था। ऐसे बर्तन जिनमें शायद खाना और पानी हों, दफ़नाए गए शव के पास रख दिए जाते थे।

एक आदमी को पाँच कमरों वाले मकान के आँगन में, चार पैरों वाले मिट्टी के एक बड़े से संदूक में दफ़नाया गया था। बस्ती के बीच में बसा

यह घर गाँव के सबसे बड़े घरों में एक था। इस घर में एक अनाज का गोदाम भी था। शव के पैर मुड़े हुए थे।

क्या तुम्हें लगता है कि यह किसी सरदार का शव था? अपने जवाब का कारण बताओ।

क्या बताते हैं हमें कंकालों के अध्ययन

छोटे आकार के आधार पर एक बच्चे के कंकाल को आसानी से पहचाना जा सकता है। लेकिन एक बच्चे और बच्ची के कंकाल के बीच कोई बड़ा फ़र्क नहीं होता।

क्या हम यह पता लगा सकते हैं कि कंकाल किसी पुरुष का था या स्त्री का?

कभी-कभी लोग कंकाल के साथ मिले सामानों के आधार पर इसका अंदाजा लगाते हैं। उदाहरण के लिए यदि कंकाल के साथ गहने मिलते हैं तो कई बार उसे महिला का कंकाल मान लिया जाता है। लेकिन ऐसी समझ के साथ समस्याएँ हैं। अक्सर पुरुष भी आभूषण पहनते थे।

कंकाल का लिंग पहचानने का बेहतर तरीका उसकी हड्डियों की जाँच है। चूँकि महिलाएँ बच्चों को जन्म देती हैं इसलिए उनका कटि-प्रदेश या कूल्हा पुरुषों से ज़्यादा बड़ा होता है।

ये समझ कंकालों के आधुनिक अध्ययन पर आधारित है।

आज से लगभग 2000 साल पहले चरक नाम के प्रसिद्ध वैद्य हुए थे। उन्होंनें चिकित्सा शास्त्र पर *चरक संहिता* नाम की किताब लिखी। वे कहते हैं कि मनुष्य के शरीर में 360 हड्डियाँ होती हैं। यह आधुनिक शरीर रचना विज्ञान की 206 हड्डियों से काफी ज़्यादा हैं। सम्भवत: चरक ने अपनी गिनती में दाँत, हड्डियों के जोड़ और कार्टिलेज को जोड़कर यह संख्या बताई थी।

तुम्हारे अनुसार शरीर के बारे में उन्होंने इतनी विस्तृत जानकारी कैसे इकट्ठा की होगी?

इनामगाँव के लोगों के काम-धंधे

इनामगाँव में पुरातत्त्वविदों को गेहूँ, जौ, चावल, दाल, बाजरा, मटर और तिल के बीज मिले हैं। कई जानवरों की हड्डियाँ भी मिली हैं। कई हड्डियों पर काटने के निशान से यह अंदाजा होता है कि लोग इन्हें खाते होंगे। गाय, बैल, भैंस, बकरी, भेड़, कुत्ता, घोड़ा, गधा, सूअर, साँभर, चितकबरा हिरण, कृष्ण-मृग, खरहा, नेवला, चिड़ियाँ, घड़ियाल, कछुआ, केकड़ा और मछली की हड्डियाँ भी पाई गई हैं। ऐसे साक्ष्य मिले हैं कि बेर, आँवला, जामुन, खजूर और कई तरह की रसभरियाँ एकत्र की जाती थीं।

इस प्रमाण के आधार पर इनामगाँव में लोगों के काम-धंधों की एक सूची बनाओ।

अन्यत्र

एटलस में चीन को देखो। लगभग 3500 साल पहले हम यहाँ की लेखन कला के सबसे पुराने उदाहरण पाते हैं।

यह जानवरों की हड्डियों पर लिखा गया था। इन्हें भविष्यवाणी करने वाली हड्डियाँ कहा जाता है, क्योंकि यह मान्यता थी कि ये भविष्य बताती हैं। राजा लोग लिपिकारों से इन हड्डियों पर सवाल लिखवाते थे – क्या वे युद्ध जीतेंगे? क्या फ़सलें अच्छी होंगी? क्या उन्हें पुत्र होंगे? फिर इन हड्डियों को आग में डाल दिया जाता था जहाँ इनमें गर्मी से चटक कर दरारें पड़ जाती थीं। भविष्यवक्ता इन दरारों को बड़े ध्यान से देखकर भविष्यवाणी करने की कोशिश करते थे। जैसा शायद तुम भी सोच रही होगी ये भविष्यवक्ता कभी-कभी गलती भी करते थे।

ये राजा शहरों में महल बनाकर रहते थे। उन्होंने बेशुमार दौलत इकट्ठी कर ली थी जिनमें बड़े-बड़े नक्काशी किए हुए काँसे के बर्तन शामिल थे। लेकिन वे लोहे का इस्तेमाल करना नहीं जानते थे।

ऋग्वेद के राजा और इन राजाओं के बीच कोई एक फ़र्क बताओ।

कल्पना करो

तुम 3000 वर्ष पहले के इनामगाँव में रहती हो। पिछली रात सरदार की मृत्यु हो गई। आज, तुम्हारे माता-पिता दफ़न की तैयारी कर रहे हैं। यह बताते हुए सारे दृश्य का वर्णन करो कि अंतिम संस्कार के लिए कैसे भोजन तैयार किया जा रहा है। तुम्हें क्या लगता है, खाने में क्या दिया जाएगा?

उपयोगी शब्द

वेद
प्रार्थना
भाषा
रथ
यज्ञ
राजा
दास
महापाषाण
कब्र
कंकाल
लोहा

कुछ महत्वपूर्ण
तिथियाँ

- वेदों की रचना का प्रारंभ
(लगभग 3500 साल पहले)
- महापाषाणों के निर्माण की शुरुआत
(लगभग 3000 साल पहले)
- इनामगाँव में कृषकों का निवास
(3600 से 2700 साल पहले)
- चरक (लगभग 2000 साल पहले)

आओ याद करें

1. निम्नलिखित को सुमेल करो :

सूक्त	सजाए गए पत्थर
रथ	अनुष्ठान
यज्ञ	अच्छी तरह से बोला गया
दास	युद्ध में प्रयोग किया जाता था
महापाषाण	गुलाम

2. वाक्यों को पूरा करो

(क) ____________ के लिए दासों का इस्तेमाल किया जाता था।

(ख) ____________ में महापाषाण पाए जाते हैं।

(ग) ज़मीन पर गोले में लगाए गए पत्थर या चट्टान ____________ का काम करते थे।

(घ) पोर्ट-होल का इस्तेमाल ____________ के लिए होता था।

(ङ) इनामगाँव के लोग ____________ खाते थे।

आओ चर्चा करें

3. आज हम जो किताबें पढ़ते हैं वे ऋग्वेद से कैसे भिन्न हैं?

4. पुरातत्त्वविद् कब्रों में दफ़नाए गए लोगों के बीच सामाजिक अंतर का पता कैसे लगाते हैं?

5. एक राजा का जीवन दास या दासी के जीवन से कैसे भिन्न होता था?

आओ करके देखें

6. पता करो कि तुम्हारे विद्यालय के पुस्तकालय में धर्म के विषय पर किताबें हैं या नहीं। उस संग्रह से किन्हीं पाँच पुस्तकों के नाम बताओ।

7. एक याद की हुई कविता या गीत लिखो। तुमने उस कविता या गीत को सुनकर याद किया था या पढ़कर?

8. ऋग्वेद में लोगों का वर्गीकरण उनके कार्य या उनकी भाषा के आधार पर किया जाता है। नीचे की तालिका में तुम छः परिचित लोगों के नाम भरो। इनमें तीन पुरुष और तीन महिला होने चाहिए। प्रत्येक का पेशा और भाषा लिखो। क्या तुम उस विवरण में कुछ और जोड़ना चाहोगी?

नाम	कार्य	भाषा	अन्य

This page not to be processed

This page not to be processed

This page not to be processed

अध्याय 6

राज्य, राजा और एक प्राचीन गणराज्य

चुनाव का दिन

जब शंकरन उठा तो उसने देखा कि उसके नाना-नानी वोट डालने जा रहे थे। दरअसल वे चुनाव केंद्र पर सबसे पहले पहुँचना चाहते थे। शंकरन जानना चाहता था कि आखिर वे इतने उत्साहित क्यों थे। उसके नानाजी ने उसे जल्दी में समझाने की कोशिश की और कहा, "आज हम अपने शासकों का चुनाव करने जा रहे हैं।"

कुछ लोग शासक कैसे बने?

लगभग पचास वर्षों से हम अपने शासकों का चुनाव मतदान के जरिए करते आ रहे हैं। लेकिन बहुत पहले लोग शासक कैसे बनते थे? हमने अध्याय 5 में यह पढ़ा है कि कुछ *राजा* संभवत: *जन* यानी लोगों द्वारा चुने जाते थे। परन्तु करीब 3000 साल पहले राजा बनने की इस प्रक्रिया में कुछ परिवर्तन दिखाई दिए। कुछ लोग बड़े-बड़े यज्ञों को आयोजित कर *राजा* के रूप में प्रतिष्ठित हो गए।

अश्वमेध यज्ञ एक ऐसा ही आयोजन था। इसमें एक घोड़े को राजा के लोगों की देखरेख में स्वतंत्र विचरण के लिए छोड़ दिया जाता था। इस घोड़े को किसी दूसरे राजा ने रोका तो उसे वहाँ अश्वमेध यज्ञ करने वाले राजा से लड़ाई करनी पड़ती थी। अगर उन्होंने घोड़े को जाने दिया तो इसका मतलब यह होता था कि अश्वमेध यज्ञ करने वाला राजा उनसे ज़्यादा शक्तिशाली था। इसके बाद उन राजाओं को यज्ञ में आमंत्रित किया जाता था। यह यज्ञ विशिष्ट पुरोहितों द्वारा सम्पन्न किया जाता था। इसके लिए उन्हें उपहारों से सम्मानित किया जाता था। अश्वमेध यज्ञ करने वाला राजा बहुत शक्तिशाली माना जाता था। यज्ञ में आमंत्रित सभी राजा उसके लिए उपहार लाते थे।

इन सभी आयोजनों में राजा का मुख्य स्थान होता था। उसे राजसिंहासन या बाघ की खाल के एक विशेष आसन पर बिठाया जाता था। युद्ध क्षेत्र में राजा का सारथी ही उसका सहचर होता था। यज्ञ के अवसर पर वह राजा

की विजयों तथा अन्य गुणों का गान करता था। राजा के सगे-संबंधी खासकर उसकी रानियों तथा पुत्रों को भी कई छोटे-छोटे अनुष्ठान करने होते थे। अन्य सारे आमंत्रित राजाओं का काम सिर्फ़ बैठकर यज्ञ की पूरी प्रक्रिया को देखना भर था। राजा के ऊपर पुरोहित पवित्र जल के छिड़काव के साथ-साथ अन्य कई अनुष्ठान करता था। विश् अथवा वैश्य जैसे सामान्य लोग उपहार लाते थे। जिन्हें पुरोहित शूद्र मानते थे उन्हें कई अनुष्ठानों में शामिल नहीं किया जाता था।

इस यज्ञ में उपस्थित होने वालों की एक सूची बनाओ। पेशे के आधार पर वहाँ कौन-कौन से वर्ग शामिल थे?

वर्ण

इस समय उत्तर भारत में, ख़ासकर गंगा-यमुना क्षेत्र में, कई ग्रंथ रचे गए। ऋग्वेद के बाद रचे होने के कारण ये उत्तर-वैदिक ग्रंथ कहे जाते हैं। इनके अंतर्गत सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा अन्य ग्रंथ शामिल हैं। पुरोहितों द्वारा रचित इन ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान और उनके संपादन की विधियाँ बताई गई हैं। इनमें सामाजिक नियमों के बारे में भी बताया गया है।

उस समय समाज में कई समूह थे जिनमें पुरोहित, योद्धा, कृषक, पशुपालक, व्यापारी, शिल्पकार, श्रमिक, मछली पकड़ने वाले तथा जंगल में रहने वाले लोग शामिल थे। जहाँ कुछ पुरोहित तथा योद्धा वैभवशाली थे, वहीं कुछ कृषक और व्यापारी भी धनवान थे। दूसरी ओर पशुपालक, शिल्पकार, श्रमिक, मछली पकड़ने वाले, शिकारी तथा भोजन-संग्राहक निर्धन थे।

पुरोहितों ने लोगों को चार वर्गों में विभाजित किया, जिन्हें *वर्ण* कहते हैं। उनके अनुसार प्रत्येक वर्ण के अलग-अलग कार्य निर्धारित थे। पहला वर्ण *ब्राह्मणों* का था। उनका काम वेदों का अध्ययन-अध्यापन और यज्ञ करना था जिनके लिए उन्हें उपहार मिलता था। दूसरा स्थान *शासकों* का था, जिन्हें *क्षत्रिय* कहा जाता था। उनका काम युद्ध करना और लोगों की रक्षा करना था। तीसरे स्थान पर *विश्* या *वैश्य* थे। इनमें कृषक, पशुपालक और व्यापारी आते थे। क्षत्रिय और वैश्य दोनों को ही यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त था। वर्णों में अंतिम स्थान *शूद्रों* का था। इनका काम अन्य तीनों वर्णों की सेवा करना था। इन्हें कोई अनुष्ठान करने का अधिकार नहीं था। प्रायः औरतों को भी शूद्रों के समान माना गया। महिलाओं तथा शूद्रों को वेदों के अध्ययन का अधिकार नहीं था।

पुरोहितों के अनुसार सभी वर्णों का निर्धारण जन्म के आधार पर होता था। उदाहरण के तौर पर, ब्राह्मण माता-पिता की संतान ब्राह्मण ही होती थी। बाद में कुछ लोगों को अछूत माना गया। अछूत वर्गों में कुछ शिल्पकार, शिकारी तथा भोजन-संग्राहक शामिल थे। साथ ही इनमें वे लोग भी आते थे, जो शवों को दफ़नाने या जलाने का काम करते थे। इन लोगों से संपर्क अपवित्र माना जाता था।

कई लोगों ने ब्राह्मणों द्वारा बनायी हुई इस वर्ण-व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया। कुछ राजा स्वयं को पुरोहितों से श्रेष्ठ मानते थे। कुछ लोग जन्म के आधार पर वर्ण-निर्धारण सही नहीं मानते थे। इसके अतिरिक्त कुछ लोग व्यवसाय के आधार पर लोगों के बीच भेदभाव उचित नहीं समझते थे। जबकि कुछ लोग चाहते थे कि अनुष्ठान सम्पन्न करने का अधिकार सबका हो। कई लोगों ने छूआछूत की आलोचना की। इस उपमहाद्वीप के पूर्वोत्तर क्षेत्र जैसे कई इलाकों में सामाजिक-आर्थिक असमानता बहुत कम थी। यहाँ पुरोहितों का प्रभाव भी बहुत सीमित था।

लोगों ने वर्ण-व्यवस्था का विरोध क्यों किया?

जनपद

महायज्ञों को करने वाले राजा अब जन के राजा न होकर *जनपदों* के राजा माने जाने लगे। जनपद का शाब्दिक अर्थ जन के बसने की जगह होता है। कुछ महत्वपूर्ण जनपद मानचित्र 4 (पृष्ठ 57) में दिखाए गए हैं।

पुरातत्त्वविदों ने इन जनपदों की कई बस्तियों की खुदाई की है। दिल्ली में पुराना किला, उत्तर प्रदेश में मेरठ के पास हस्तिनापुर और एटा के पास अतरंजीखेड़ा इनमें प्रमुख हैं। खुदाई से पता चला है कि लोग झोपड़ियों में रहते थे और मवेशियों तथा अन्य जानवरों को पालते थे। वे चावल, गेहूँ, धान, जौ, दालें, गन्ना, तिल तथा सरसों जैसी फ़सलें उगाते थे।

चित्रित धूसर पात्र। इस तरह के पात्रों में ज़्यादातर थालियाँ और कटोरियाँ ही मिली हैं। ये पात्र बहुत ही पतली सतह के सुंदर और चिकने हैं। शायद इसका प्रयोग खास मौकों पर, महत्वपूर्ण लोगों को भोजन परोसने के लिए किया जाता था।

क्या इस सूची में तुम्हें किसी ऐसी फ़सल का नाम मिला जिसका उल्लेख अध्याय 4 में नहीं है?

लोग मिट्टी के बर्तन भी बनाते थे। इनमें कुछ धूसर और कुछ लाल रंग के होते थे। इन पुरास्थलों में कुछ विशेष प्रकार के बर्तन मिले हैं, जिन्हें 'चित्रित-धूसर पात्र' के रूप में जाना जाता है। जैसा कि इनके नाम से ही स्पष्ट है, इन बर्तनों पर चित्रकारी की गई है। ये आमतौर पर सरल रेखाओं तथा ज्यामितीय आकृतियों के रूप में हैं।

महाजनपद

करीब 2500 साल पहले, कुछ जनपद अधिक महत्वपूर्ण हो गए। इन्हें महाजनपद कहा जाने लगा। मानचित्र 4 में कुछ महाजनपदों को दिखाया गया है। अधिकतर महाजनपदों की एक राजधानी होती थी। कई राजधानियों में किलेबंदी की गई थी अर्थात् इनके चारों ओर लकड़ी, ईंट या पत्थर की ऊँची दीवारें बनाई गई थीं।

ऐसा लगता है कि लोगों ने अन्य राजाओं के आक्रमण से डरकर अपनी सुरक्षा के लिए इन किलों का निर्माण किया। कुछ राजा अपनी राजधानी के चारों ओर विशाल, ऊँची और प्रभावशाली दीवार खड़ी कर अपनी समृद्धि

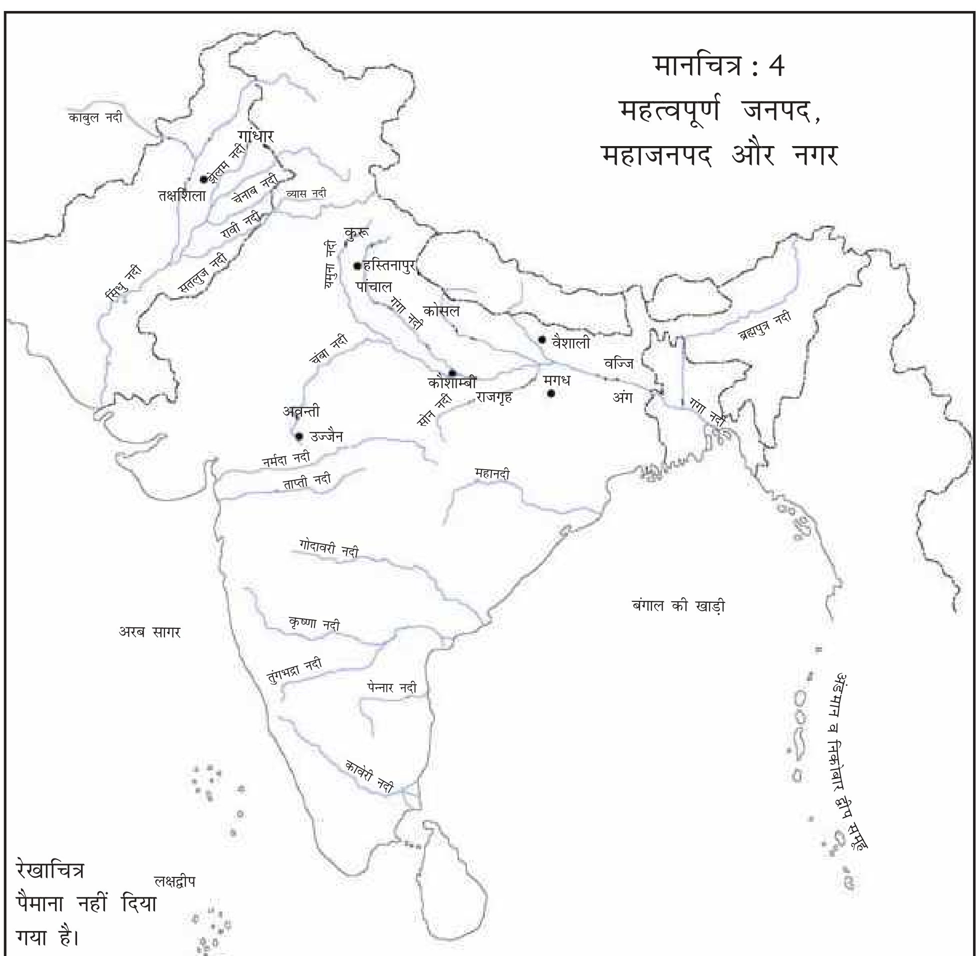

और शक्ति का प्रदर्शन भी करते थे। इस तरह से किले के अंदर रहने वाले लोगों और उस क्षेत्र पर नियत्रंण रखना भी सरल हो जाता होगा। इस तरह की विशाल दीवार बनाने के लिए व्यापक योजना की आवश्यकता थी और लाखों की संख्या में ईंटों तथा पत्थरों का इंतज़ाम करना पड़ता था। हज़ारों स्त्री-पुरुषों तथा बच्चों ने इसके लिए अथक परिश्रम किया होगा। इनके लिए संसाधनों की आवश्यकता पड़ती होगी।

अब राजा सेना रखने लगे थे। सिपाहियों को नियमित वेतन देकर पूरे साल रखा जाता था। कुछ भुगतान संभवत: आहत सिक्कों (पृष्ठ 92 पर चित्र देखो) के रूप में होता था। इन सिक्कों के बारे में तुम अध्याय 9 में पढ़ोगे।

महाजनपदों के राजा ऋग्वेद में उल्लेखित राजाओं से किस प्रकार भिन्न थे? दो अंतर बताओ।

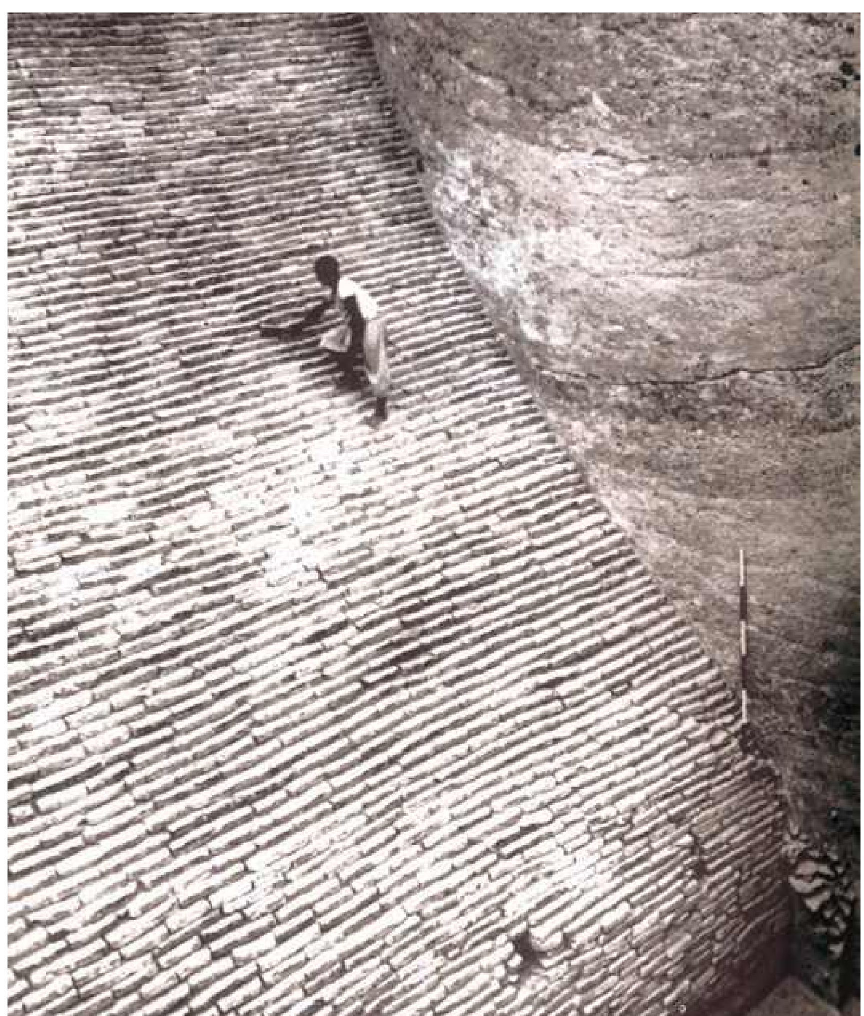

कौशाम्बी किले की दीवार। यह चित्र आधुनिक उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद के पास मिली ईंट की दीवार का अवशेष है। इसके एक भाग का निर्माण संभवत: 2500 साल पहले हुआ था।

कर

महाजनपदों के राजा विशाल किले बनवाते थे और बड़ी सेना रखते थे, इसलिए उन्हें प्रचुर संसाधनों की आवश्यकता होती थी। इसके लिए उन्हें कर्मचारियों की भी आवश्यकता होती थी। अत: महाजनपदों के राजा लोगों द्वारा समय-समय पर लाए गए उपहारों पर निर्भर न रहकर अब नियमित रूप से कर वसूलने लगे।

- फ़सलों पर लगाए गए कर सबसे महत्वपूर्ण थे क्योंकि अधिकांश लोग कृषक ही थे। प्राय: उपज का 1/6वां हिस्सा कर के रूप में निर्धारित किया जाता था जिसे *भाग* कहा जाता था।
- कारीगरों के ऊपर भी कर लगाए गए जो प्राय: श्रम के रूप में चुकाए जाते थे। जैसे कि एक बुनकर, लोहार या सुनार को राजा के लिए महीने में एक दिन काम करना पड़ता था।
- पशुपालकों को जानवरों या उनके उत्पाद के रूप में कर देना पड़ता था।
- व्यापारियों को सामान खरीदने-बेचने पर भी कर देना पड़ता था।
- आखेटकों तथा संग्राहकों को जंगल से प्राप्त वस्तुएँ देनी होती थीं।

आखेटक तथा खाद्य-संग्राहक राजाओं को क्या देते होंगे?

कृषि में परिवर्तन

इस युग में कृषि के क्षेत्र में दो बड़े परिवर्तन आए। हल के फाल अब लोहे के बनने लगे। अब कठोर ज़मीन को लकड़ी के फाल की तुलना में लोहे के फाल से आसानी से जोता जा सकता था। इससे फ़सलों की उपज बढ़ गई। दूसरे, लोगों ने धान के पौधों का रोपण शुरू किया अर्थात् खेतों में बीज छिड़ककर धान उपजाने के बजाए धान की पौध तैयार कर उनका रोपण शुरू किया गया। अब पहले की तुलना में बहुत ज़्यादा पौधे जीवित रह जाते थे, इसलिए पैदावार भी ज़्यादा होने लगी। इसमें कमरतोड़ परिश्रम लगता था। ये काम ज़्यादातर दास, दासी तथा भूमिहीन खेतिहर मज़दूर (कम्मकार) करते थे।

क्या तुम बता सकते हो कि राजा इन परिवर्तनों को प्रोत्साहन क्यों देते होंगे?

सूक्ष्म-निरीक्षण

(क) मगध

मानचित्र 4 (पृष्ठ 57) में मगध ढूँढ़ो। लगभग दो सौ सालों के भीतर मगध सबसे महत्वपूर्ण जनपद बन गया। गंगा और सोन जैसी नदियाँ मगध से होकर बहती थीं। ये – (क) यातायात, (ख) जल-वितरण और (ग) ज़मीन को उपजाऊ बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण थीं। मगध का एक हिस्सा जंगलों से भरा था। इन जंगलों में रहने वाले हाथियों को पकड़ कर और उन्हें प्रशिक्षित कर सेना के काम में लगाया जाता था। यही नहीं, जंगलों से घर, गाड़ियाँ, तथा रथ बनाने के लिए लकड़ी मिलती थी। इसके अलावा इस क्षेत्र में लौह अयस्क की खदाने हैं। मज़बूत औज़ार और हथियार बनाने के लिए ये बहुत उपयोगी थे।

मगध में दो बहुत ही शक्तिशाली शासक बिम्बिसार तथा अजातसत्तु (अजातशत्रु) हुए। अन्य जनपदों को जीतने के लिए ये हर संभव साधन अपनाते थे। महापद्मनंद एक और महत्वपूर्ण शासक थे। उन्होंने अपने नियंत्रण का क्षेत्र इस उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग तक फैला लिया था। बिहार में राजगृह (आधुनिक राजगीर) कई सालों तक मगध की राजधानी बनी रही। बाद में पाटलिपुत्र (आज का पटना) को राजधानी बनाया गया।

2300 साल से भी पहले की बात है, मेसिडोनिया का राजा सिकन्दर विश्व-विजय करना चाहता था। पूरी तरह सफल न होने पर भी वह मिस्र और पश्चिमी एशिया के कुछ राज्यों को जीतता हुआ भारतीय उपमहाद्वीप में व्यास नदी के किनारे तक पहुँच गया। जब उसने मगध की ओर कूच करना चाहा, तो उसके सिपाहियों ने इंकार कर दिया। वे इस बात से भयभीत थे, कि भारत के शासकों के पास पैदल, रथ और हाथियों की बहुत बड़ी सेना थी।

इन सेनाओं और ऋग्वेद में उल्लेखित सेनाओं के बीच तुम्हें क्या अंतर दिखता है?

(ख) वज्जि

जैसा कि तुमने ऊपर पढ़ा, मगध एक शक्तिशाली राज्य बन गया था। उसके नज़दीक ही वज्जि राज्य था, जिसकी राजधानी वैशाली (बिहार) थी। यहाँ एक अलग किस्म की शासन-व्यवस्था थी जिसे *गण* या *संघ* कहते थे।

गण या संघ में कई शासक होते थे। कभी-कभी लोग एक साथ शासन करते थे, जिसमें से प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था। ये सभी राजा विभिन्न अनुष्ठानों को एक साथ सम्पन्न करते थे। सभाओं में बैठकर ये बातचीत, बहस और वाद-विवाद के जरिए तय करते थे कि क्या करना है और किस तरह करना है। शत्रुओं के आक्रमण से निपटने के लिए वे मिलकर चर्चाएँ करते थे। स्त्रियाँ, दास तथा कम्मकार इन सभाओं में हिस्सा नहीं ले सकते थे।

बुद्ध तथा महावीर (जिनके बारे में तुम अध्याय 7 में पढ़ोगे) दोनों ही गण या संघ से संबंधित थे। बौद्ध साहित्य में संघ के जीवन का बहुत ही सजीव वर्णन मिलता है।

गण

गण शब्द का प्रयोग कई सदस्यों वाले समूह के लिए किया जाता है।

संघ

संघ अर्थात् संगठन या सभा।

वज्जि संघ का यह वर्णन *दीघ निकाय* से लिया गया है। *दीघ निकाय* एक प्रसिद्ध बौद्ध ग्रंथ है, जिसमें बुद्ध के कई व्याख्यान दिए गए हैं। इन्हें करीब 2300 साल पहले लिखा गया था।

अजासत्तु (अजातशत्रु) और वज्जि-संघ

अजातसत्तु वज्जि-संघ पर आक्रमण करना चाहते थे। उन्होंने अपने मंत्री वस्सकार को बुद्ध के पास सलाह के लिए भेजा।

बुद्ध ने उनसे पूछा कि क्या वज्जि सभाएँ नियमित रूप से होती हैं तथा उनमें सभी सदस्य उपस्थित होते हैं? जब उन्हें पता चला कि ऐसा होता है, उन्होंने कहा कि वज्जिवासी तब तक उन्नति करते रहेंगे, जब तक:

- वे पूर्ण और नियमित सभाएँ करते रहेंगे।
- आपस में मिलजुल कर काम करते रहेंगे।
- पारंपरिक नियमों का पालन करते रहेंगे।
- बड़ों का सम्मान, समर्थन और उनकी बातों पर ध्यान देते रहेंगे।

- वज्जि महिलाओं के साथ ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं करेंगे और उन्हें बंधक नहीं बनाएंगे।
- शहरों तथा गांवों में चैत्यों का रखरखाव करेंगे।
- विभिन्न मतावलंबी संतों का सम्मान करेंगे और उनके आने या जाने पर कोई रोक नहीं लगाएंगे।

वज्जि संघ अन्य महाजनपदों से कैसे भिन्न था? कम से कम तीन अंतर बताओ।

कई शक्तिशाली राजा इन संघों को जीतना चाहते थे। इसके बावजूद उनका राज्य अब से लगभग 1500 साल पहले तक चलता रहा। उसके बाद गुप्त शासकों ने गण और संघ पर विजय प्राप्त कर उन्हें अपने राज्य में शामिल कर लिया। इनके बारे में तुम अध्याय 11 में पढ़ोगे।

अन्यत्र

अपने एटलस में यूनान और एथेन्स को ढूँढ़ो।

लगभग 2500 साल पहले एथेन्स के लोगों ने एक शासन-व्यवस्था की स्थापना की, जिसे *प्रजातंत्र* या *गणतंत्र* कहते हैं।

यह व्यवस्था लगभग 200 सालों तक चली। इसमें 30 साल से ऊपर के उन सभी पुरुषों को पूर्ण नागरिकता प्राप्त थी, जो दास नहीं थे। वहाँ एक सभा थी जो महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लेने के लिए साल भर में कम से कम 40 बार बुलाई जाती थी।

इस सभा में सभी नागरिक भाग ले सकते थे।

शासन के कई पदों पर नियुक्तियाँ लॉटरियों द्वारा की जाती थीं। सभी नागरिकों को सेना और नौसेना में अपनी सेवाएँ देनी होती थी।

औरतों को नागरिक का दर्जा नहीं मिलता था।

व्यापारियों तथा शिल्पकारों के रूप में एथेन्स में रहने और काम करने वाले बहुत से विदेशियों को भी नागरिक अधिकार नहीं मिले थे। एथेन्स में खदानों, खेतों, घरों और कार्यशालाओं में काम कर रहे दासों को भी नागरिक अधिकार नहीं मिले थे।

क्या एथेन्स में वास्तव में जनतंत्र था?

कल्पना करो

वैशाली के उस सभागार में तुम अंदर झाँक रहे हो जहाँ मगध के राजाओं द्वारा आक्रमण का सामना करने के विषयों पर चर्चा की जा रही है। तुमने क्या सुना?

उपयोगी शब्द

राजा
अश्वमेध
वर्ण
जनपद
महाजनपद
क़िलेबंदी
सेना
कर
पौध-रोपण
गण अथवा संघ
प्रजातंत्र

आओ याद करें

1. सही या गलत बताओ।

(क) अश्वमेध के घोड़े को अपने राज्य से गुज़रने की छूट देने वाले राजाओं को यज्ञ में आमंत्रित किया जाता था।

(ख) राजा के ऊपर सारथी पवित्र जल का छिड़काव करता था।

(ग) पुरातत्त्वविदों को जनपदों की बस्तियों में महल मिले हैं।

(घ) चित्रित-धूसर पात्रों में अनाज रखा जाता था।

(ङ.) महाजनपदों में बहुत से नगर क़िलाबंद थे।

2. नीचे दिए गए खानों में निम्नलिखित शब्द भरो।
आखेटक-संग्राहक, कृषक, व्यापारी, शिल्पकार, पशुपालक।

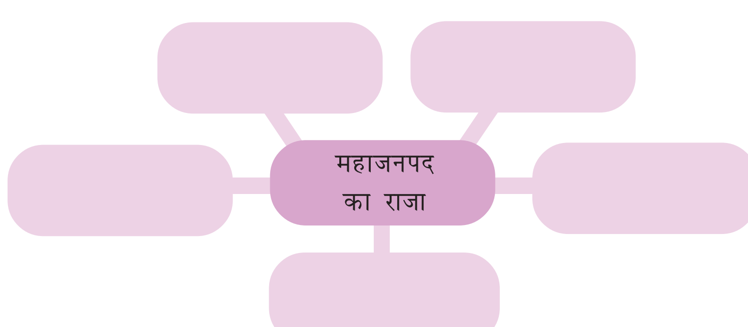

3. समाज के वे कौन-से समूह थे, जो गणों की सभाओं में हिस्सा नहीं ले सकते थे?

कुछ महत्वपूर्ण

तिथियाँ

- नए शासक
  (लगभग 3000 साल पहले)
- महाजनपद
  (लगभग 3000 साल पहले)
- सिकन्दर का आक्रमण, *दीघ निकाय* का लेखन
  (लगभग 2300 साल पहले)
- गण या संघ राज्यों का अंत
  (लगभग 1500 साल पहले)

आओ चर्चा करें

1. महाजनपद के राजाओं ने क़िले क्यों बनवाए?

2. आज के शासकों के चुनाव की प्रक्रिया जनपदों के चुनाव से किस तरह भिन्न थी?

आओ करके देखें

3. तुम्हारी पुस्तक के अंत में दिए गए राजनीतिक मानचित्र में अपना राज्य ढूँढ़ो। क्या वहाँ प्राचीन जनपद थे? अगर हाँ, तो उनके नाम लिखो। अगर नहीं, तो अपने राज्य के सबसे नज़दीक पड़ने वाले जनपदों के नाम बताओ।

4. प्रश्न 2 के उत्तर में बताए गए समूहों में से कौन-से समूह आज भी कर देते हैं।

5. प्रश्न 3 के उत्तर में बताए गए समूहों में किन-किन को आज मतदान का अधिकार प्राप्त है?

अध्याय 7

नए प्रश्न नए विचार

अनघा निकली सैर पर

अनघा आज पहली बार अपने विद्यालय की ओर से सैर पर जा रही थी। इसके लिए उसने देर रात पुणे (महाराष्ट्र) से वाराणसी (उत्तर प्रदेश) की ट्रेन पकड़ी। स्टेशन पर अनघा को छोड़ने आई उसकी माँ ने अध्यापिका से कहा, ''बच्चों को बुद्ध के बारे में बताने के साथ-साथ उन्हें सारनाथ दिखाने भी ले जाइएगा।''

बुद्ध की कहानी

बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ थे जिन्हें गौतम के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म लगभग 2500 वर्ष पूर्व हुआ था। यह वह समय था जब लोगों के जीवन में तेज़ी से परिवर्तन हो रहे थे। जैसा कि तुमने अध्याय 6 में पढ़ा, महाजनपदों के कुछ राजा इस समय बहुत शक्तिशाली हो गए थे। हज़ारों सालों के बाद फिर से नगर उभर रहे थे। गाँवों के जीवन में भी बदलाव आ रहा था (अध्याय 10 देखो)। बहुत-से विचारक इन परिवर्तनों को समझने का प्रयास कर रहे थे। वे जीवन के सच्चे अर्थ को भी जानना चाह रहे थे।

बुद्ध क्षत्रिय थे तथा 'शाक्य' नामक एक छोटे से गण से संबंधित थे। युवावस्था में ही ज्ञान की खोज में उन्होंने घर के सुखों को छोड़ दिया। अनेक वर्षों तक वे भ्रमण करते रहे तथा अन्य विचारकों से मिलकर चर्चा करते रहे। अंततः ज्ञान प्राप्ति के लिए उन्होंने स्वयं ही रास्ता ढूँढ़ने का निश्चय किया। इसके लिए उन्होंने बोध गया (बिहार) में एक पीपल के नीचे कई दिनों तक तपस्या की। अंततः उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके बाद से वे बुद्ध के रूप में जाने गए। यहाँ से वे वाराणसी के निकट स्थित सारनाथ गए, जहाँ उन्होंने पहली बार उपदेश दिया। कुशीनारा में मृत्यु से पहले का शेष जीवन उन्होंने पैदल ही एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करने और लोगों को शिक्षा देने में व्यतीत किया।

सारनाथ स्तूप
इस इमारत को स्तूप के नाम से जाना जाता है। यहीं पर बुद्ध ने अपना सर्वप्रथम उपदेश दिया था। इसी घटना की स्मृति में यहाँ स्तूप का निर्माण किया गया। अध्याय 12 में तुम इन स्तूपों के बारे में और अधिक पढ़ोगे।

बुद्ध ने शिक्षा दी कि यह जीवन कष्टों और दुखों से भरा हुआ है और ऐसा हमारी इच्छा और लालसाओं (जो हमेशा पूरी नहीं हो सकतीं) के कारण होता है। कभी-कभी हम जो चाहते हैं वह प्राप्त कर लेने के बाद भी संतुष्ट नहीं होते हैं एवं और अधिक (अथवा अन्य) वस्तुओं को पाने की इच्छा करने लगते हैं। बुद्ध ने इस लिप्सा को *तन्हा* (तृष्णा) कहा है। बुद्ध ने शिक्षा दी कि आत्मसंयम अपनाकर हम ऐसी लालसा से मुक्ति पा सकते हैं।

उन्होंने लोगों को दयालु होने तथा मनुष्यों के साथ-साथ जानवरों के जीवन का भी आदर करने की शिक्षा दी। वे मानते थे कि हमारे कर्मों के परिणाम, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, हमारे वर्तमान जीवन के साथ-साथ बाद के जीवन को भी प्रभावित करते हैं। बुद्ध ने अपनी शिक्षा सामान्य लोगों की *प्राकृत* भाषा में दी। इससे सामान्य लोग भी उनके संदेश को समझ सके।

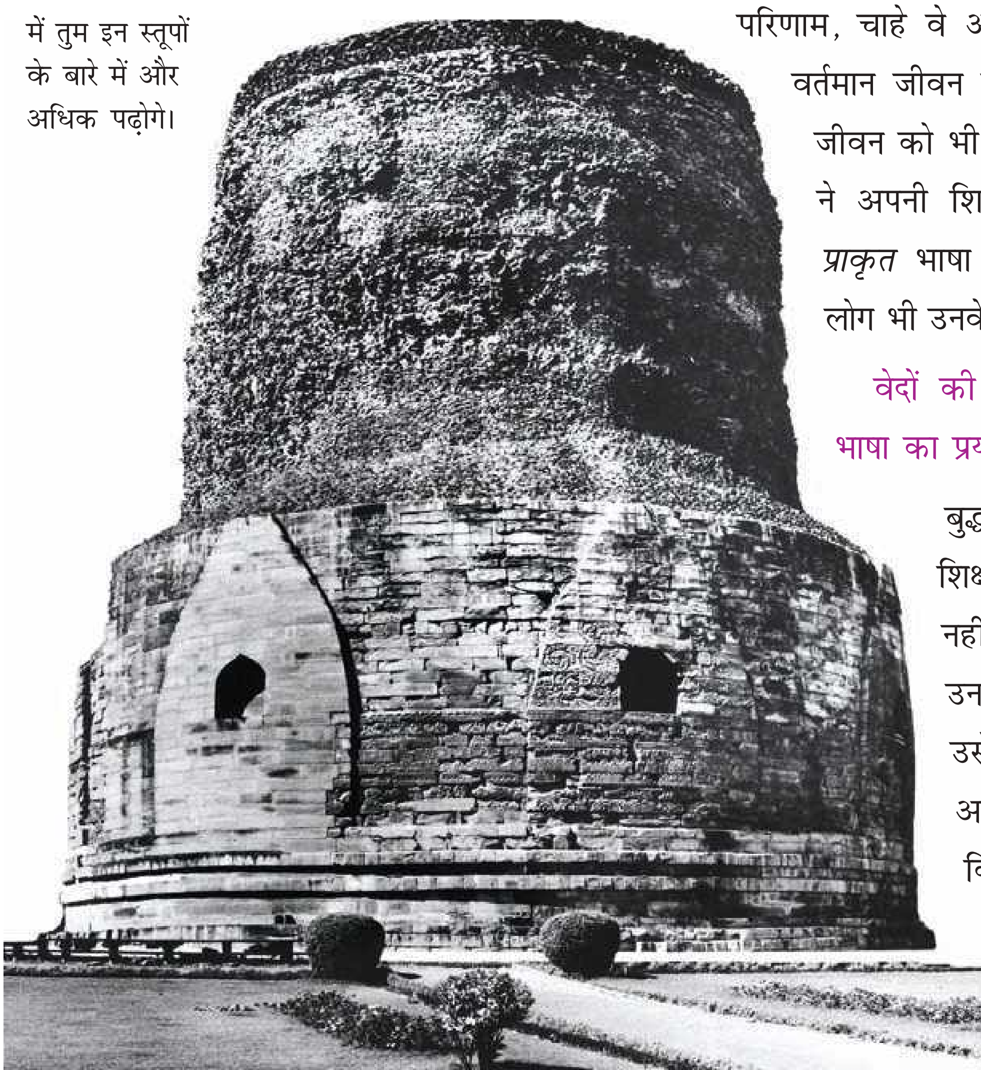

वेदों की रचना के लिए किस भाषा का प्रयोग हुआ था?

बुद्ध ने कहा कि लोग किसी शिक्षा को केवल इसलिए नहीं स्वीकार करें कि यह उनका उपदेश है, बल्कि वे उसे अपने विवेक से मापें। आओ देखो, उन्होंने ऐसा किस प्रकार किया।

किसागोतमी की कहानी

यह बुद्ध के विषय में एक प्रसिद्ध कहानी है। एक समय की बात है किसागोतमी नामक एक स्त्री का पुत्र मर गया। इस बात से वह इतनी दु:खी हुई कि वह अपने बच्चे को गोद में लिए नगर की सड़कों पर घूम-घूम कर लोगों से प्रार्थना करने लगी कि कोई उसके पुत्र को जीवित कर दे। एक भला व्यक्ति उसे बुद्ध के पास ले गया।

बुद्ध ने कहा, ''मुझे एक मुट्ठी सरसों के बीज लाकर दो, मैं तुम्हारे पुत्र को जीवित कर दूँगा''। किसागोतमी बहुत प्रसन्न हुई। पर जैसे ही वह बीज लाने के लिए जाने लगी तभी बुद्ध ने उसे रोका और कहा, ''ये बीज एक ऐसे घर से माँग कर लाओ जहाँ किसी की मृत्यु न हुई हो।''

किसागोतमी एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े गई लेकिन वह जहाँ भी गई उसने पाया कि हर घर में किसी न किसी के पिता, माता, बहन, भाई, पति, पत्नी, बच्चे, चाचा, चाची, दादा या दादी की मृत्यु हुई थी।

बुद्ध दु:खी माँ को क्या शिक्षा देने का प्रयास कर रहे थे?

उपनिषद्

जिस समय बुद्ध उपदेश दे रहे थे उसी समय या उससे भी थोड़ा पहले दूसरे अन्य चिंतक भी कठिन प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास कर रहे थे। उनमें से कुछ मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में जानना चाहते थे जबकि अन्य यज्ञों की उपयोगिता के बारे में जानने को उत्सुक थे। इनमें से अधिकांश चिंतकों का यह मानना था कि इस विश्व में कुछ तो ऐसा है जो कि स्थायी है और जो मृत्यु के बाद भी बचा रहता है। उन्होंने इसका वर्णन *आत्मा* तथा *ब्रह्म* अथवा सार्वभौम आत्मा के रूप में किया है। वे मानते थे कि अंतत: आत्मा तथा ब्रह्म एक ही हैं।

ऐसे कई विचारों का संकलन *उपनिषदों* में हुआ है। उपनिषद् उत्तर वैदिक ग्रंथों का हिस्सा थे। उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ है 'गुरू के समीप बैठना'। इन ग्रंथों में अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच बातचीत का संकलन किया गया है। प्राय: ये विचार सामान्य वार्तालाप के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

बुद्धिमान भिखारी

यह वार्तालाप *छांदोग्य उपनिषद्* नामक प्रसिद्ध उपनिषद् की एक कहानी पर आधारित है।

शौनक व अभिप्रतारिण नामक दो ऋषि सार्वभौम आत्मा की उपासना करते थे। एक बार ज्योंही वे भोजन करने के लिए बैठे, एक भिखारी आया और भोजन माँगने लगा।

शौनक ने कहा, ''हम तुम्हें कुछ नहीं दे सकते।''

भिखारी ने पूछा, ''विद्वज्जन, आप किसकी उपासना करते हैं?''

अभिप्रतारिण ने उत्तर दिया, ''सार्वभौम आत्मा की।''

''ओह! इसका मतलब आप यह जानते हैं कि यह सार्वभौम आत्मा सम्पूर्ण विश्व में विद्यमान है।''

ऋषियों ने कहा, ''हाँ, हाँ, हम यह जानते हैं।''

भिखारी ने फिर पूछा, ''अगर यह सार्वभौम आत्मा सम्पूर्ण विश्व में विद्यमान है तो यह मेरे अंदर भी विद्यमान है। मैं कौन हूँ? मैं इस विश्व का एक भाग ही तो हूँ।''

''तुम सत्य बोलते हो, युवा ब्राह्मण।''

''इसलिए हे ऋषियों, मुझे भोजन न देकर आप उस सार्वभौम आत्मा को भोजन देने से मना कर रहे हैं।'' भिखारी की बात की सच्चाई जानकर ऋषियों ने उसे भोजन दे दिया।

भिखारी ने भोजन पाने के लिए ऋषियों को किस तरह मनाया?

इन चर्चाओं में भाग लेने वाले अधिकांशतः पुरुष ब्राह्मण तथा राजा होते थे। कभी-कभी गार्गी जैसी स्त्री-विचारकों का भी उल्लेख मिलता है। विद्वत्ता के लिए प्रसिद्ध गार्गी राजदरबारों में होने वाले वाद-विवाद में भाग लिया करती थीं। निर्धन व्यक्ति इस तरह के वाद-विवाद में बहुत कम ही हिस्सा लेते थे। इस तरह का एक प्रसिद्ध अपवाद सत्यकाम जाबाल का है। सत्यकाम जाबाल का नाम उसकी दासी माँ के नाम पर पड़ा। सत्यकाम के मन में सत्य जानने की तीव्र जिज्ञासा उत्पन्न हुई। गौतम नामक एक ब्राह्मण ने उन्हें अपने विद्यार्थी के रूप में स्वीकार किया तथा वह अपने समय के सर्वाधिक प्रसिद्ध विचारकों में से एक बन गए। उपनिषदों के कई विचारों का विकास बाद में प्रसिद्ध विचारक शंकराचार्य के द्वारा किया गया जिनके बारे में तुम कक्षा 7 में पढ़ोगी।

व्याकरणविद् पाणिनि

इस युग में कुछ अन्य विद्वान भी खोज कर रहे थे। उन्हीं प्रसिद्ध विद्वानों में एक पाणिनि ने संस्कृत भाषा के व्याकरण की रचना की। उन्होंने स्वरों तथा व्यंजनों को एक विशेष क्रम में रखकर उनके आधार पर सूत्रों की रचना की। ये सूत्र बीजगणित के सूत्रों से काफी मिलते-जुलते हैं। इसका प्रयोग कर उन्होंने संस्कृत भाषा के प्रयोगों के नियम लघु सूत्रों (लगभग 3000) के रूप में लिखे।

जैन धर्म

इसी युग में अर्थात् लगभग 2500 वर्ष पूर्व जैन धर्म के सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचारक वर्धमान महावीर ने भी अपने विचारों का प्रसार किया। वह वज्जि संघ के लिच्छवि कुल के एक क्षत्रिय राजकुमार थे। इस संघ के विषय में तुमने अध्याय 6 में पढ़ा है। 30 वर्ष की आयु में उन्होंने घर छोड़ दिया और जंगल में रहने लगे । बारह वर्ष तक उन्होंने कठिन व एकाकी जीवन व्यतीत किया। इसके बाद उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ।

उनकी शिक्षा सरल थी। सत्य जानने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक स्त्री व पुरुष को अपना घर छोड़ देना चाहिए। उन्हें *अहिंसा* के नियमों का कड़ाई से पालन करना चाहिए अर्थात् किसी भी जीव को न तो कष्ट देना चाहिए और न ही उसकी हत्या करनी चाहिए। महावीर का कहना था, "सभी जीव जीना चाहते हैं। सभी के लिए जीवन प्रिय है।" महावीर ने अपनी शिक्षा प्राकृत में दी। यही कारण है कि साधारण जन भी उनके तथा उनके अनुयायियों की शिक्षाओं को समझ सके । देश के अलग-अलग हिस्सों में प्राकृत के अलग-अलग रूप प्रचलित थे। प्रचलन क्षेत्र के आधार पर ही उनके अलग-अलग नाम थे जैसे मगध में बोली जाने वाली प्राकृत, मागधी कहलाती थी।

जैन नाम से जाने गए महावीर के अनुयायियों को भोजन के लिए भिक्षा माँगकर सादा जीवन बिताना होता था। उन्हें पूरी तरह से ईमानदार होना पड़ता था तथा चोरी न करने की उन्हें सख्त हिदायत थी। उन्हें ब्रह्मचर्य का पालन करना होता था। पुरुषों को वस्त्रों सहित सब कुछ त्याग देना पड़ता था।

जैन

जैन शब्द 'जिन' शब्द से निकला है जिसका अर्थ है 'विजेता'।

महावीर के लिए 'जिन' शब्द का प्रयोग क्यों हुआ?

अधिकांश व्यक्तियों के लिए ऐसे कड़े नियमों का पालन करना बहुत कठिन था। फिर भी हज़ारों व्यक्तियों ने इस नई जीवन शैली को जानने और सीखने के लिए अपने घरों को छोड़ दिया। कई अपने घरों पर ही रहे और *भिक्खु-भिक्खुणी* बने लोगों को भोजन प्रदान कर उनकी सहायता करते रहे।

मुख्यत: व्यापारियों ने जैन धर्म का समर्थन किया । किसानों के लिए इन नियमों का पालन अत्यंत कठिन था क्योंकि फ़सल की रक्षा के लिए उन्हें कीड़े-मकौड़ों को मारना पड़ता था। बाद की सदियों में जैन धर्म, उत्तर भारत के कई हिस्सों के साथ-साथ गुजरात, तमिलनाडु और कर्नाटक में भी फैल गया। महावीर तथा उनके अनुयायियों की शिक्षाएँ कई शताब्दियों तक मौखिक रूप में ही रहीं । वर्तमान रूप में उपलब्ध जैन धर्म की शिक्षाएँ लगभग 1500 वर्ष पूर्व गुजरात में वल्लभी नामक स्थान पर लिखी गई थीं (मानचित्र 7, पृष्ठ 113 देखें)।

संघ

महावीर तथा बुद्ध दोनों का ही मानना था कि घर का त्याग करने पर ही सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। ऐसे लोगों के लिए उन्होंने *संघ* नामक संगठन बनाया जहाँ घर का त्याग करने वाले लोग एक साथ रह सकें।

संघ में रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं के लिए बनाए गए नियम *विनयपिटक* नामक ग्रंथ में मिलते हैं। *विनयपिटक* से हमें पता चलता है कि संघ में पुरुषों और स्त्रियों के रहने की अलग-अलग व्यवस्था थी। सभी व्यक्ति संघ में प्रवेश ले सकते थे। हालाँकि संघ में प्रवेश के लिए बच्चों को अपने माता-पिता से, दासों को अपने स्वामी से, राजा के यहाँ काम करने वाले लोगों को राजा से, तथा कर्ज़दारों को अपने देनदारों से अनुमति लेनी होती थी। एक स्त्री को इसके लिए अपने पति से अनुमति लेनी होती थी।

संघ में प्रवेश लेने वाले स्त्री-पुरुष बहुत सादा जीवन जीते थे। वे अपना अधिकांश समय ध्यान करने में बिताते थे और दिन के एक निश्चित समय में वे शहरों तथा गाँवों में जाकर भिक्षा माँगते थे। यही कारण है कि उन्हें भिक्खु तथा भिक्खुणी (साधु-भिखारी के लिए प्राकृत शब्द) कहा गया। वे आम लोगों को शिक्षा देते थे और साथ ही एक-दूसरे की सहायता भी करते

थे। किसी तरह की आपसी लड़ाई का निपटारा करने के लिए वे प्रायः बैठकें भी किया करते थे।

संघ में प्रवेश लेने वालों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, व्यापारी, मज़दूर, नाई, गणिकाएँ तथा दास शामिल थे। इनमें से कई लोगों ने बुद्ध की शिक्षाओं के विषय में लिखा तथा कुछ लोगों ने संघ में अपने जीवन के विषय में सुंदर कविताओं की रचना की।

पिछले अध्याय में वर्णित संघ और इस अध्याय में वर्णित संघ के बीच दो भिन्नताएँ बताओ। क्या इनमें कोई समानताएँ दिखती हैं?

पहाड़ी को काटकर बनाई गई एक गुफा।
यह कार्ले (वर्तमान महाराष्ट्र में) स्थित एक गुफा है।
भिक्खु-भिक्खुणी इन शरण स्थलों में रहकर ध्यान किया करते थे।

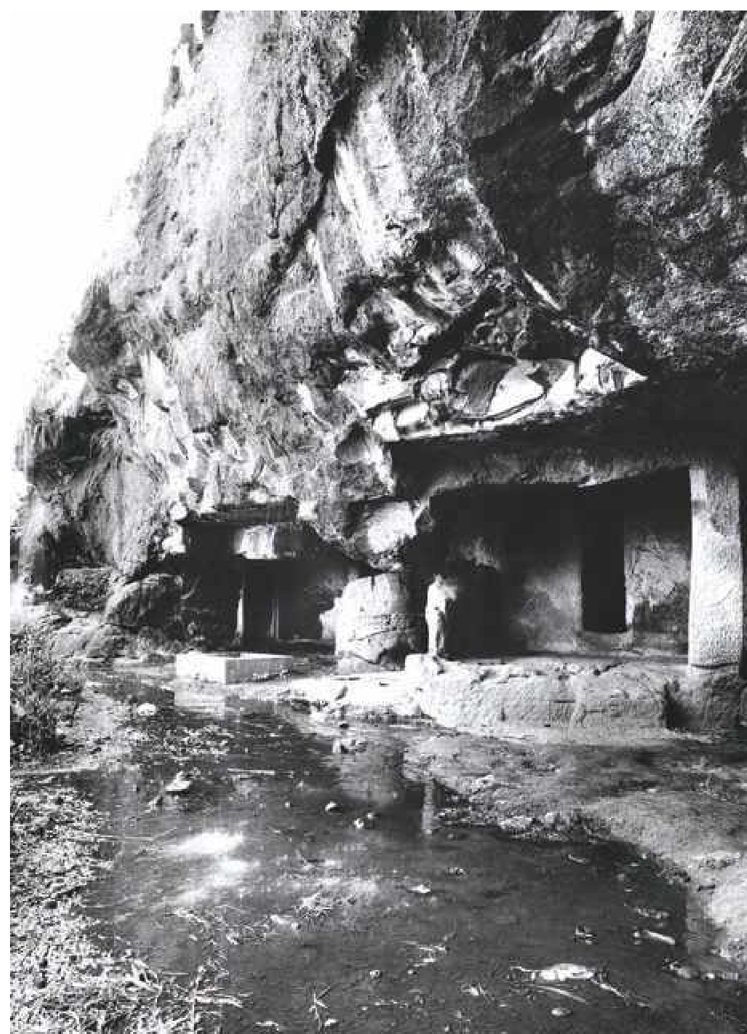

विहार

जैन तथा बौद्ध भिक्खु पूरे साल एक स्थान से दूसरे स्थान घूमते हुए उपदेश दिया करते थे। केवल वर्षा ऋतु में जब यात्रा करना कठिन हो जाता था तो वे एक स्थान पर ही निवास करते थे। ऐसे समय वे अपने अनुयायियों द्वारा उद्यानों में बनवाए गए अस्थायी निवासों में अथवा पहाड़ी क्षेत्रों की प्राकृतिक गुफाओं में रहते थे।

जैसे-जैसे समय बीतता गया भिक्खु-भिक्खुणियों ने स्वयं तथा उनके समर्थकों ने अधिक स्थायी शरणस्थलों की आवश्यकता का अनुभव किया। तब कई शरणस्थल बनाए गए जिन्हें *विहार* कहा गया। आरंभिक विहार लकड़ी के बनाए गए तथा बाद में इनके निर्माण में ईंटों का प्रयोग होने लगा। पश्चिमी भारत में विशेषकर कुछ विहार पहाड़ियों को खोद कर बनाए गए।

एक बौद्ध ग्रंथ से ज्ञात होता है:

जिस तरह महासागरों में मिलने पर नदियों की अलग-अलग पहचान समाप्त हो जाती है ठीक उसी तरह बुद्ध के अनुयायी जब भिक्षुओं की श्रेणी में प्रवेश करते हैं तो वे अपना वर्ण, श्रेणी और परिवार सब त्याग देते हैं।

प्राय: किसी धनी व्यापारी, राजा अथवा भू-स्वामी द्वारा दान में दी गई भूमि पर विहार का निर्माण होता था। स्थानीय व्यक्ति भिक्खु-भिक्खुणियों के लिए भोजन, वस्त्र तथा दवाईयाँ लेकर आते थे जिसके बदले ये भिक्खु और भिक्खुणी लोगों को शिक्षा देते थे। आगे आने वाली शताब्दियों में बौद्ध धर्म उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों के साथ-साथ बाहरी क्षेत्रों में भी फैल गया। अध्याय 10 में तुम इनके बारे में और अधिक पढ़ोगे।

आश्रम-व्यवस्था

जैन तथा बौद्ध धर्म जिस समय लोकप्रिय हो रहे थे लगभग उसी समय ब्राह्मणों ने आश्रम-व्यवस्था का विकास किया।

यहाँ *आश्रम* शब्द का तात्पर्य लोगों द्वारा रहने तथा ध्यान करने के लिए प्रयोग में आने वाले स्थान से नहीं है, बल्कि इसका तात्पर्य जीवन के एक चरण से है।

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास नामक चार आश्रमों की व्यवस्था की गई।

ब्रह्मचर्य के अंतर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य से यह अपेक्षा की जाती थी कि इस चरण के दौरान वे सादा जीवन बिताकर वेदों का अध्ययन करेंगे।

गृहस्थ आश्रम के अंतर्गत उन्हें विवाह कर एक गृहस्थ के रूप में रहना होता था। वानप्रस्थ के अंतर्गत उन्हें जंगल में रहकर साधना करनी थी। अंतत: उन्हें सब कुछ त्यागकर संन्यासी बन जाना था।

आश्रम व्यवस्था ने लोगों को अपने जीवन का कुछ हिस्सा ध्यान में लगाने पर बल दिया।

प्राय: स्त्रियों को वेद पढ़ने की अनुमति नहीं थी और उन्हें अपने पतियों द्वारा पालन किए जाने वाले आश्रमों का ही अनुसरण करना होता था।

संघ के जीवन से आश्रमों की यह व्यवस्था किस तरह भिन्न थी? यहाँ किन वर्णों का उल्लेख हुआ है? क्या सभी चार वर्णों को यह आश्रम व्यवस्था अपनाने की अनुमति थी?

अन्यत्र

एटलस में ईरान ढूँढ़ो। जरथुस्त्र एक ईरानी पैगम्बर थे। उनकी शिक्षाओं का संकलन *ज़ेन्द-अवेस्ता* नामक ग्रंथ में मिलता है। *ज़ेन्द-अवेस्ता* की भाषा तथा इसमें वर्णित रीति-रिवाज, वेदों की भाषा और रीति-रिवाजों से काफ़ी मिलते-जुलते हैं। जरथुस्त्र की मूल शिक्षा का सूत्र है : 'सद्-विचार, सद्-वचन तथा सद्-कार्य।'

'हे ईश्वर! बल, सत्य-प्रधानता एवं सद्विचार प्रदान कीजिए, जिनके ज़रिए हम शांति बना सकें।'

एक हज़ार से अधिक वर्षों तक जरथुस्त्रवाद ईरान का एक प्रमुख धर्म रहा। बाद में कुछ जरथुस्त्रवादी ईरान से आकर गुजरात और महाराष्ट्र के तटीय नगरों में बस गए। वे लोग ही आज के पारसियों के पूर्वज हैं।

कल्पना करो

तुम लगभग 2500 वर्ष पूर्व के एक उपदेशक को सुनने जाना चाहती हो। वहाँ जाने की अनुमति लेने के लिए तुम अपने माता-पिता को कैसे सहमत करोगी, इसका वर्णन करो।

उपयोगी शब्द

तञ्हा (तृष्णा)
प्राकृत
आत्मा
ब्रह्म
उपनिषद्
जैन
अहिंसा
भिक्खु
संघ
विहार
आश्रम

आओ याद करें

1. बुद्ध ने लोगों तक अपने विचारों का प्रसार करने के लिए किन-किन बातों पर ज़ोर दिया?

2. 'सही' व 'गलत' वाक्य बताओ।

   (क) बुद्ध ने पशुबलि को बढ़ावा दिया।

   (ख) बुद्ध द्वारा प्रथम उपदेश सारनाथ में देने के कारण इस जगह का बहुत महत्त्व है।

कुछ महत्वपूर्ण
तिथियाँ

- उपनिषदों के विचारक, जैन महावीर तथा बुद्ध (लगभग 2500 वर्ष पूर्व)
- जैन ग्रंथों का लेखन (लगभग 1500 वर्ष पूर्व)

(ग) बुद्ध ने शिक्षा दी कि कर्म का हमारे जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(घ) बुद्ध ने बोध गया में ज्ञान प्राप्त किया।

(ङ) उपनिषदों के विचारकों का मानना था कि आत्मा और ब्रह्म वास्तव में एक ही हैं।

3. उपनिषदों के विचारक किन प्रश्नों का उत्तर देना चाहते थे?

4. महावीर की प्रमुख शिक्षाएँ क्या थीं?

आओ चर्चा करें

5. अनघा की माँ क्यों चाहती थी कि उनकी बेटी बुद्ध की कहानी से परिचित हो? तुम्हारा इसके बारे में क्या कहना है?

6. क्या तुम सोचते हो कि दासों के लिए संघ में प्रवेश करना आसान रहा होगा, तर्क सहित उत्तर दो।

आओ करके देखें

7. इस अध्याय में उल्लिखित कम से कम पाँच विचारों तथा प्रश्नों की सूची बनाओ। उनमें से किन्हीं तीन का चुनाव कर चर्चा करो कि वे आज भी क्यों महत्वपूर्ण हैं?

8. आज दुनिया का त्याग करने वाले स्त्रियों और पुरुषों के बारे में और अधिक जानने का प्रयास करो। ये लोग कहाँ रहते हैं, किस तरीके के कपड़े पहनते हैं तथा क्या खाते हैं? ये दुनिया का त्याग क्यों करते हैं?

अध्याय 8

अशोक: एक अनोखा सम्राट जिसने युद्ध का त्याग किया

रौशन के रुपए

जन्मदिन पर रौशन को दादा जी से कड़क नोट मिले। उसने उन्हें अपने हाथ में दबा रखा था। उसे एक नया कैसेट खरीदने का बहुत मन था लेकिन साथ ही वह बिल्कुल नए कड़क नोटों को देखना और छू कर महसूस करना चाहती थी। तभी उसने पाया कि सभी नोटों में दाहिनी तरफ़ गाँधीजी का मुस्कराता चेहरा बना हुआ था और बाईं तरफ़ छोटे-छोटे शेर चित्रित थे। उसने सोचा 'आखिर यहाँ शेर क्यों बने हुए हैं'।

एक बहुत बड़ा राज्य – एक साम्राज्य

शेरों वाला स्तंभ-शीर्ष

हम जिन शेरों के चित्र रुपयों-पैसों पर देखते हैं उनका एक लंबा इतिहास है। उन्हें पत्थरों को काट कर बनाया गया और फिर उन्हें सारनाथ में एक विशाल स्तंभ पर स्थापित किया गया था। (इस विषय में तुमने अध्याय 7 में पढ़ा।)

इतिहास के महानतम राजाओं में से एक, अशोक के निर्देश पर इसके जैसे कई स्तंभों और पत्थरों पर अभिलेख उत्कीर्ण किए गए। इसके पहले कि हम यह जानें कि इन अभिलेखों में क्या लिखा है, यह समझने की कोशिश करें कि उनके राज्य को साम्राज्य क्यों कहा जाता है।

अशोक जिस साम्राज्य पर शासन करते थे उसकी स्थापना उनके दादा चन्द्रगुप्त मौर्य ने लगभग 2300 साल पहले की थी। चाणक्य या कौटिल्य नाम के एक बुद्धिमान व्यक्ति ने चन्द्रगुप्त की सहायता की थी। चाणक्य के कई विचार हमें *अर्थशास्त्र* नाम की किताब में मिलते हैं।

वंश

जब एक ही परिवार के कई सदस्य एक के बाद एक राजा बनते हैं तो उन्हें एक ही वंश का कहा जाता है। मौर्य वंश में तीन महत्वपूर्ण राजा हुए – चन्द्रगुप्त, उसका बेटा बिन्दुसार और बिन्दुसार का पुत्र अशोक।

साम्राज्य में बहुत-से नगर थे। (मानचित्र में उन्हें काले बिन्दुओं से दिखाया गया है।) इनमें साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र, उज्जैन और तक्षशिला जैसे नगर प्रमुख थे। तक्षशिला उत्तर-पश्चिम और मध्य एशिया के लिए आने-जाने का मार्ग था। दूसरी तरफ़ उज्जैन उत्तरी भारत से दक्षिणी भारत जाने वाले रास्ते में पड़ता था। शायद नगरों में व्यापारी, सरकारी अधिकारी और शिल्पकार रहा करते थे।

जिन जगहों पर अशोक के शिलालेख मिले हैं उन्हें लाल बिन्दुओं से दिखाया गया है। ये सारे इलाके साम्राज्य के भीतर थे। उन देशों के नाम बताओ जहाँ अशोक के अभिलेख मिले हैं। भारत के कौन-से राज्य मौर्य साम्राज्य से बाहर थे?

साम्राज्य के बहुत बड़े क्षेत्रों में किसानों और पशुपालकों के गाँव बसे हुए थे। मध्य भारत जैसे इलाकों में ज़्यादातर हिस्सा जंगलों से भरा हुआ था। वहाँ पर लोग फल-फूल का संग्रहण और जानवरों का शिकार करके जीविका चलाते थे। साम्राज्य के अलग-अलग इलाकों में लोग भिन्न-भिन्न

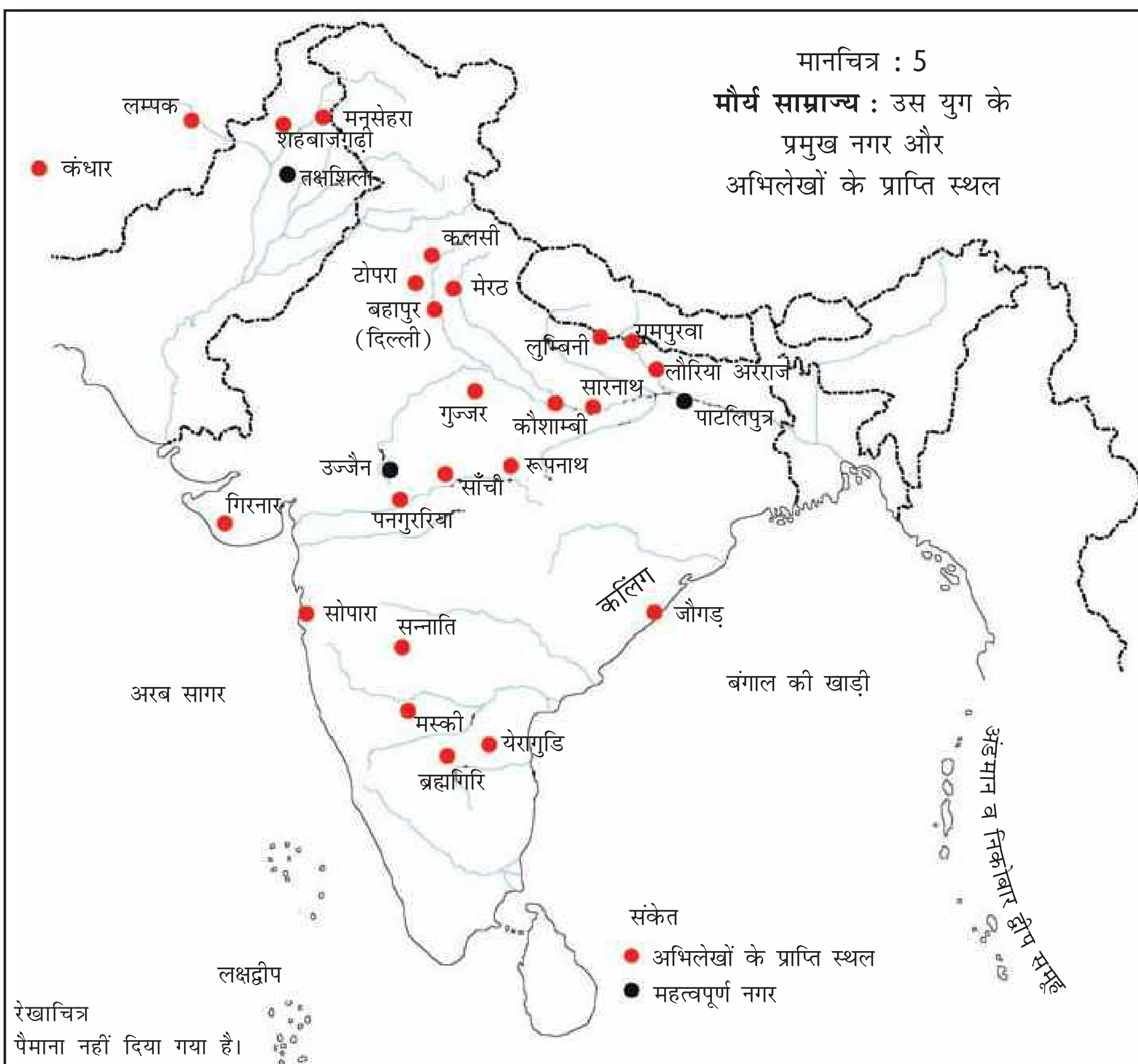

भाषाएँ बोलते थे। वे लोग शायद अलग-अलग प्रकार का भोजन करते थे और यहाँ तक कि अलग-अलग किस्म की पोशाक भी पहनते थे।

राज्य साम्राज्य से कैसे भिन्न है?

- चूंकि साम्राज्य राज्यों से बड़े होते हैं और उनकी रक्षा के लिए बड़ी सेनाओं की ज़रूरत होती है, इसीलिए सम्राटों को राजाओं की तुलना में ज़्यादा संसाधनों की ज़रूरत होती है।
- इसी कारण उन्हें बड़ी संख्या में कर इकट्ठा करने वाले अधिकारियों की ज़रूरत होती है।

साम्राज्य का प्रशासन

चूंकि मौर्य साम्राज्य बहुत बड़ा था, इसलिए अलग-अलग हिस्सों पर अलग-अलग ढंग से शासन किया जाता था। पाटलिपुत्र और उसके आस-पास के इलाकों पर सम्राट का सीधा नियंत्रण था। इसका मतलब यह हुआ कि इस इलाके के गाँवों और शहरों के किसानों, पशुपालकों, शिल्पकारों और व्यापारियों से कर इकट्ठा करने के लिए राजा अधिकारियों की नियुक्ति करता था। जो राजा के आदेशों का उल्लंघन करते थे, अधिकारी उनको सज़ा भी देते थे। इनमें से कई अधिकारियों को वेतन भी दिया जाता था। *संदेशवाहक* एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहते थे और राजा के जासूस अधिकारियों के कार्य-कलाप पर नज़र रखते थे। इन सबके ऊपर सम्राट था जो राज-परिवार एवं वरिष्ठ मंत्रियों की सहायता से सब पर नियंत्रण रखता था।

मौर्य साम्राज्य के भीतर कई छोटे क्षेत्र या प्रांत थे। इन पर तक्षशिला या उज्जैन जैसी प्रांतीय राजधानियों से शासन किया जाता था। कुछ हद तक पाटलिपुत्र से इन क्षेत्रों पर नियंत्रण रखा जाता था और अक्सर राजकुमारों को वहाँ का राज्यपाल (गवर्नर) बना कर भेजा जाता था। लेकिन ऐसा लगता है कि इन जगहों पर स्थानीय परंपराओं और नियमों को ही माना जाता था।

प्रादेशिक केंद्रों के बीच विस्तृत क्षेत्र थे। इनके इलाकों में मौर्य शासक सिर्फ़ मार्गों और नदियों पर नियंत्रण रखने की कोशिश करते थे जो कि

आवागमन के लिए महत्वपूर्ण थे। यहाँ से उन्हें जो भी संसाधन कर और भेंट के रूप में मिलते थे, उसे इकट्ठा किया जाता था। उदाहरण के लिए अर्थशास्त्र में यह लिखा है कि उत्तर-पश्चिम कंबल के लिए और दक्षिण भारत सोने और कीमती पत्थरों के लिए प्रसिद्ध था। संभव है कि संसाधन नज़राने के रूप में इकट्ठे किए जाते थे।

नज़राना

जहाँ 'कर' नियमित ढंग से इकट्ठे किए जाते थे वहीं 'नज़राना' अनियमित रूप से जब भी संभव हो, इकट्ठा किया जाता था। ऐसे नज़राने विविध पदार्थों के रूप में प्राय: ऐसे लोगों से लिए जाते थे जो स्वेच्छा से इसे देते थे।

राजधानी में सम्राट

मेगस्थनीज़, चन्द्रगुप्त के दरबार में पश्चिम-एशिया के यूनानी राजा सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था। मेगस्थनीज़ ने जो कुछ देखा उसका विवरण दिया।

यहाँ हम उसके विवरण का एक अंश दे रहे हैं :

सम्राट का, जनता के सामने आने के अवसरों पर शोभायात्रा के रूप में जश्न मनाया जाता है। उन्हें एक सोने की पालकी में ले जाया जाता है। उनके अंगरक्षक सोने और चाँदी से अलंकृत हाथियों पर सवार रहते हैं। कुछ अंगरक्षक पेड़ों को लेकर चलते हैं। इन पेड़ों पर प्रशिक्षित तोतों का एक झुण्ड रहता है जो सम्राट के सिर के चारों तरफ चक्कर लगाता रहता है। राजा सामान्यत: हथियारबंद महिलाओं से घिरे होते हैं। वे हमेशा इस बात से डरे रहते हैं कि कहीं कोई उनकी हत्या करने की कोशिश न करे। उनके खाना खाने के पहले खास नौकर उस खाने को चखते हैं। वे लगातार दो रात एक ही कमरे में नहीं सोते थे।

और पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) के बारे में :

यह एक विशाल और खूबसूरत नगर है। यह एक विशाल प्राचीर से घिरा है जिसमें 570 बुर्ज और 64 द्वार हैं। दो और तीन मंज़िल वाले घर, लकड़ी और कच्ची ईंटों से बने हैं। राजा का महल भी काठ से बना है जिसे पत्थर की नक्काशी से अलंकृत किया गया है। यह चारों तरफ़ से उद्यानों और चिड़ियों के लिए बने बसेरों से घिरा है।

राजा द्वारा खाना खाने के पहले खास नौकर उस खाने को क्यों चखते थे?

पाटलिपुत्र मोहनजोदड़ो से किस तरह भिन्न था? (संकेत: अध्याय 4 देखो)

और अंत में जंगल वाले इलाके आते थे, वहाँ रहने वाले लोग काफ़ी हद तक स्वतंत्र थे। उनसे यह उम्मीद की जाती थी कि वे मौर्य पदाधिकारियों को हाथी, लकड़ी, मधु और मोम जैसी चीज़ें लाकर दें।

अशोक - एक अनोखा सम्राट

अशोक मौर्य वंश के सबसे प्रसिद्ध शासक थे। वह ऐसे पहले शासक थे जिन्होंने अभिलेखों द्वारा जनता तक अपने संदेश पहुँचाने की कोशिश की। अशोक के ज़्यादातर अभिलेख प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में हैं।

कलिंग युद्ध का वर्णन करता हुआ अशोक का अभिलेख

अपने एक अभिलेख में अशोक ने यह बात कही :

"राजा बनने के आठ साल बाद मैंने कलिंग विजय की।

लगभग डेढ़ लाख लोग बंदी बना लिए गए। एक लाख से भी ज़्यादा लोग मारे गए।

इससे मुझे अपार दुख हुआ। क्यों?

जब किसी स्वतंत्र देश को जीता जाता है तो लाखों लोग मारे जाते हैं और बहुत सारे बंदी बनाए जाते हैं। इसमें ब्राह्मण और श्रमण भी मारे जाते हैं।

जो लोग अपने सगे-संबंधियों और मित्रों को बहुत प्यार करते हैं तथा दासों और मृतकों के प्रति दयावान होते हैं, वे भी युद्ध में या तो मारे जाते हैं या अपने प्रियजनों को खो देते हैं।

इसीलिए मुझे पश्चाताप हो रहा है। अब मैंने *धम्म* पालन करने एवं दूसरों को इसकी शिक्षा देने का निश्चय किया है।

मैं मानता हूँ कि धम्म के माध्यम से लोगों का दिल जीतना बलपूर्वक विजय पाने से ज़्यादा अच्छा है। मैं यह अभिलेख भविष्य के लिए एक संदेश के रूप में इसलिए उत्कीर्ण कर रहा हूँ कि मेरे बाद मेरे बेटे और पोते भी युद्ध न करें।

इसके बदले उन्हें यह सोचना चाहिए कि धम्म को कैसे बढ़ाया जाए।"

कलिंग की लड़ाई से युद्ध को लेकर अशोक के विचारों में कैसे परिवर्तन हुआ?

('धम्म' संस्कृत शब्द 'धर्म' का प्राकृत रूप है)।

अशोक का कलिंग युद्ध

कलिंग तटवर्ती उड़ीसा का प्राचीन नाम है (मानचित्र 5, पृष्ठ 76 देखो)। अशोक ने कलिंग को जीतने के लिए एक युद्ध लड़ा। लेकिन युद्धजनित हिंसा और खून-खराबा देखकर उन्हें युद्ध से वितृष्णा हो गई। उन्होंने निर्णय लिया कि वे भविष्य में कभी युद्ध नहीं करेंगे।

उत्कृष्ट पॉलिश वाले पत्थर की इस मूर्ति को देखो। यह बिहार के रामपुरवा में मिले एक मौर्यकालीन स्तंभ का हिस्सा है। अभी इसे राष्ट्रपति भवन में रखा गया है। यह उस समय की मूर्तिकला का एक नमूना है।

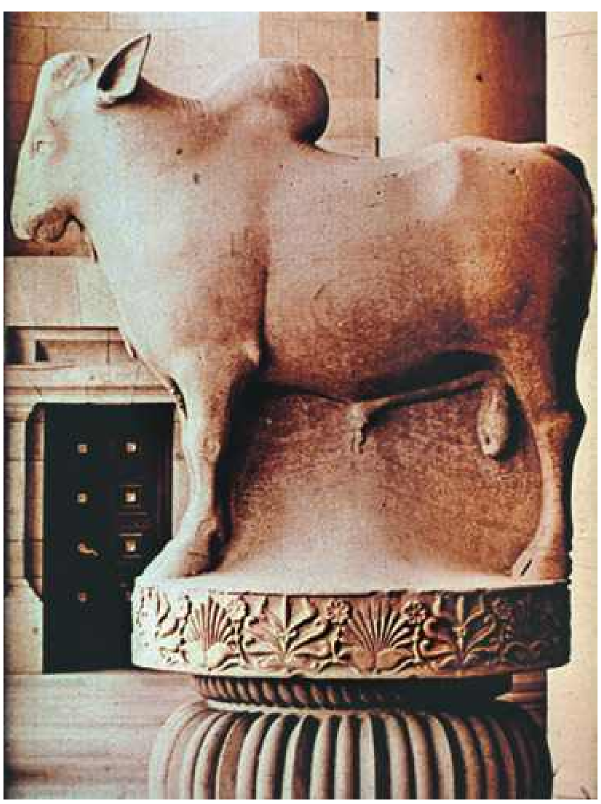

अशोक का धम्म क्या था?

अशोक के धम्म में किसी देवता की पूजा अथवा किसी कर्मकांड की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें लगता था कि जैसे पिता अपने बच्चों को अच्छे व्यवहार की शिक्षा देते हैं वैसे ही यह उनका कर्तव्य था कि अपनी प्रजा को निर्देश दें। वे बुद्ध के उपदेशों से भी प्रेरित हुए थे।

ऐसी कई समस्याएँ थीं जिनके लिए उनमें संवेदना थी। उनके साम्राज्य में अलग-अलग धर्मों को मानने वाले लोग थे और इससे कई बार टकराव पैदा हो जाता था। जानवरों की बलि चढ़ाई जाती थी। दासों और नौकरों के साथ क्रूर व्यवहार किया जाता था। इनके अलावा परिवार में व पड़ोसियों के बीच भी झगड़े होते रहते थे। अशोक ने यह महसूस किया कि इन समस्याओं का निदान उनका कर्तव्य है। इसीलिए उन्होंने धम्म-महामात्त नाम के अधिकारियों की नियुक्ति की जो जगह-जगह जाकर धम्म की शिक्षा देते थे।

इसके अतिरिक्त अशोक ने अपने संदेश कई स्थानों पर शिलाओं और स्तंभों पर खुदवा दिए। अधिकारियों को यह निर्देश दिया गया कि वे राजा के संदेश को उन लोगों को पढ़कर सुनाएँ जो खुद पढ़ नहीं सकते थे। अशोक ने धम्म के विचारों को प्रसारित करने के लिए सीरिया, मिस्र, ग्रीस तथा श्री लंका में भी दूत भेजे।

पृष्ठ सं. 84-85 पर दिए गए मानचित्र 6 में इन क्षेत्रों को पहचानने का प्रयास कीजिए।

उन्होंने सड़कें बनवाईं, कुएँ खुदवाए और विश्राम-गृह बनवाए। इसके अतिरिक्त उन्होंने मनुष्यों व जानवरों की चिकित्सा की भी व्यवस्था की।

अपनी प्रजा के लिए अशोक के संदेश

लोग विभिन्न अवसरों पर अनुष्ठान करते हैं। उदाहरण के लिए जब वे बीमार होते हैं, जब उनके बच्चों का विवाह होता है, बच्चों के जन्म पर और जब यात्रा शुरू करते हैं, तब वे तरह-तरह के अनुष्ठान करते हैं।

ये कर्मकांड किसी काम के नहीं।

इसके बदले यदि लोग दूसरी रीतियों को मानें तो वह ज़्यादा फलदायी होंगी। ये अन्य प्रकार की रीतियाँ क्या हैं?

ये हैं – अपने दासों और नौकरों के साथ अच्छा व्यवहार करना, बड़ों का आदर करना, सभी जीवों पर दया करना और ब्राह्मणों तथा श्रमणों को दान देना।

अपने धम्म की प्रशंसा या दूसरों के धम्म की निन्दा करना, दोनों ही बातें गलत हैं। हर किसी को दूसरे धर्म का आदर करना चाहिए। यदि कोई अपने धर्म की बड़ाई और दूसरों के धर्म की बुराई करता है तो वह वास्तव में अपने धर्म को ज़्यादा नुकसान पहुँचा रहा है।

इसीलिए हर किसी को दूसरे के धर्म के प्रमुख विश्वासों को समझने की कोशिश करते हुए उसका आदर करना चाहिए।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है, "उनके धर्मादेश आज भी हमसे एक ऐसी भाषा में बात करते हैं जिन्हें हम समझ सकते हैं... और जिनसे हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

अशोक ने धम्म के विचारों को दूर-दूर तक फैलाने के लिए उन बातों को बताया जो आपके अनुसार आज भी प्रासंगिक हैं। अशोक के संदेश के उन हिस्सों को बताओ जो आज भी प्रासंगिक हैं।

ब्राह्मी लिपि
आधुनिक भारत की ज़्यादातर लिपियाँ पिछले सैकड़ों वर्षों में ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न हुईं।
यहाँ आप 'अ' अक्षर को अलग-अलग भाषाओं की लिपियों में देख सकते हैं।

आरंभिक ब्राह्मी | देवनागरी (हिंदी) | बांग्ला | मलयालम | तमिल

अन्यत्र

मौर्य साम्राज्य के उभरने से थोड़ा पहले लगभग 2400 वर्ष पहले, चीन में सम्राटों ने चीन की दीवार का निर्माण शुरू किया। इसे बनाने का उद्देश्य उत्तरी सीमा की पशुपालक लोगों से रक्षा करना था। अगले 2000 वर्षों तक इस दीवार का निर्माण कार्य चलता रहा, क्योंकि साम्राज्य की सीमाएँ बदलती रहीं। यह दीवार लगभग 6400 किलोमीटर लंबी है तथा पत्थर और ईंट से बनी है। इसकी ऊपरी सतह सड़क जैसी चौड़ी है। इस दीवार को बनाने के लिए हज़ारों लोगों को काम करना पड़ा। हर 100-200 मीटर की दूरी पर इस पर निगरानी के लिए बुर्ज बने हुए हैं।

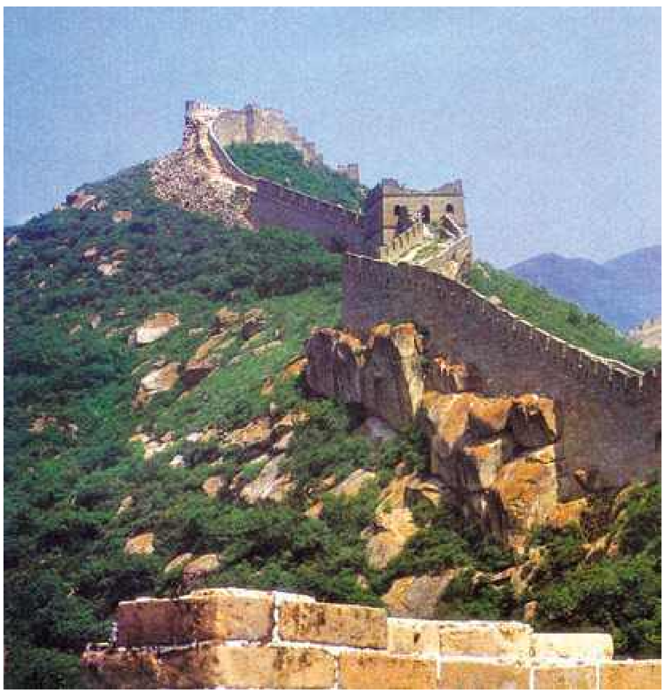

पड़ोसी देशों के प्रति अशोक का रवैया चीनी सम्राटों के रवैये से कैसे भिन्न था?

उपयोगी शब्द

साम्राज्य
राजधानी
अधिकारी
संदेशवाहक
प्रांत
धम्म

कल्पना करो

तुम कलिंग में रहती हो और तुम्हारे माँ-बाप को युद्ध में काफी दुख उठाने पड़े हैं। अभी-अभी अशोक के दूत धम्म के नए विचारों को लेकर आए हैं। आप अपने माता-पिता और संदेशवाहकों के बीच बातचीत का वर्णन करो।

आओ याद करें

1. मौर्य साम्राज्य में विभिन्न काम-धंधों में लगे हुए लोगों की सूची बनाओ।
2. रिक्त स्थानों को भरो :

   (क) जहाँ पर सम्राटों का सीधा शासन था वहाँ अधिकारी ________ वसूलते थे।

   (ख) राजकुमारों को अक्सर प्रांतों में ________ के रूप में भेजा जाता था।

(ग) मौर्य शासक आवागमन के लिए महत्वपूर्ण ———— और ———— पर नियंत्रण रखने का प्रयास करते थे।

(घ) प्रदेशों में रहने वाले लोग मौर्य अधिकारियों को ———— दिया करते थे।

3. बताओ कि निम्नलिखित वाक्य सही हैं या गलत

(क) उज्जैन उत्तर-पश्चिम की तरफ़ आवागमन के मार्ग पर था।

(ख) आधुनिक पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान के इलाके मौर्य साम्राज्य के अंदर थे।

(ग) चन्द्रगुप्त के विचार अर्थशास्त्र में लिखे गए हैं।

(घ) कलिंग बंगाल का प्राचीन नाम था।

(ङ) अशोक के ज़्यादातर अभिलेख ब्राह्मी लिपि में हैं।

आओ चर्चा करें

4. उन समस्याओं की सूची बनाओ जिनका समाधान अशोक धम्म द्वारा करना चाहता था।

5. धम्म के प्रचार के लिए अशोक ने किन साधनों का प्रयोग किया?

6. तुम्हारे अनुसार दासों और नौकरों के साथ बुरा व्यवहार क्यों किया जाता होगा? क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि सम्राट के आदेशों से उनकी स्थिति में सुधार हुआ होगा? अपने जवाब के लिए कारण बताओ।

आओ करके देखें

7. रौशन को यह बताते हुए कि हमारे रुपयों पर शेर क्यों दिखाए गए हैं एक पैराग्राफ लिखो। कम से कम एक और चीज़ का नाम लो जिस पर इन्हीं शेरों के चित्र बने हैं।

8. अगर तुम्हारे पास अपना अभिलेख जारी करने की शक्ति होती तो तुम कौन-सी चार राजाज्ञाएँ देते?

कुछ महत्वपूर्ण
तिथियाँ

- मौर्य साम्राज्य की शुरुआत (2300 साल से पहले)

मानचित्र: 6
रेशम मार्ग सहित महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग

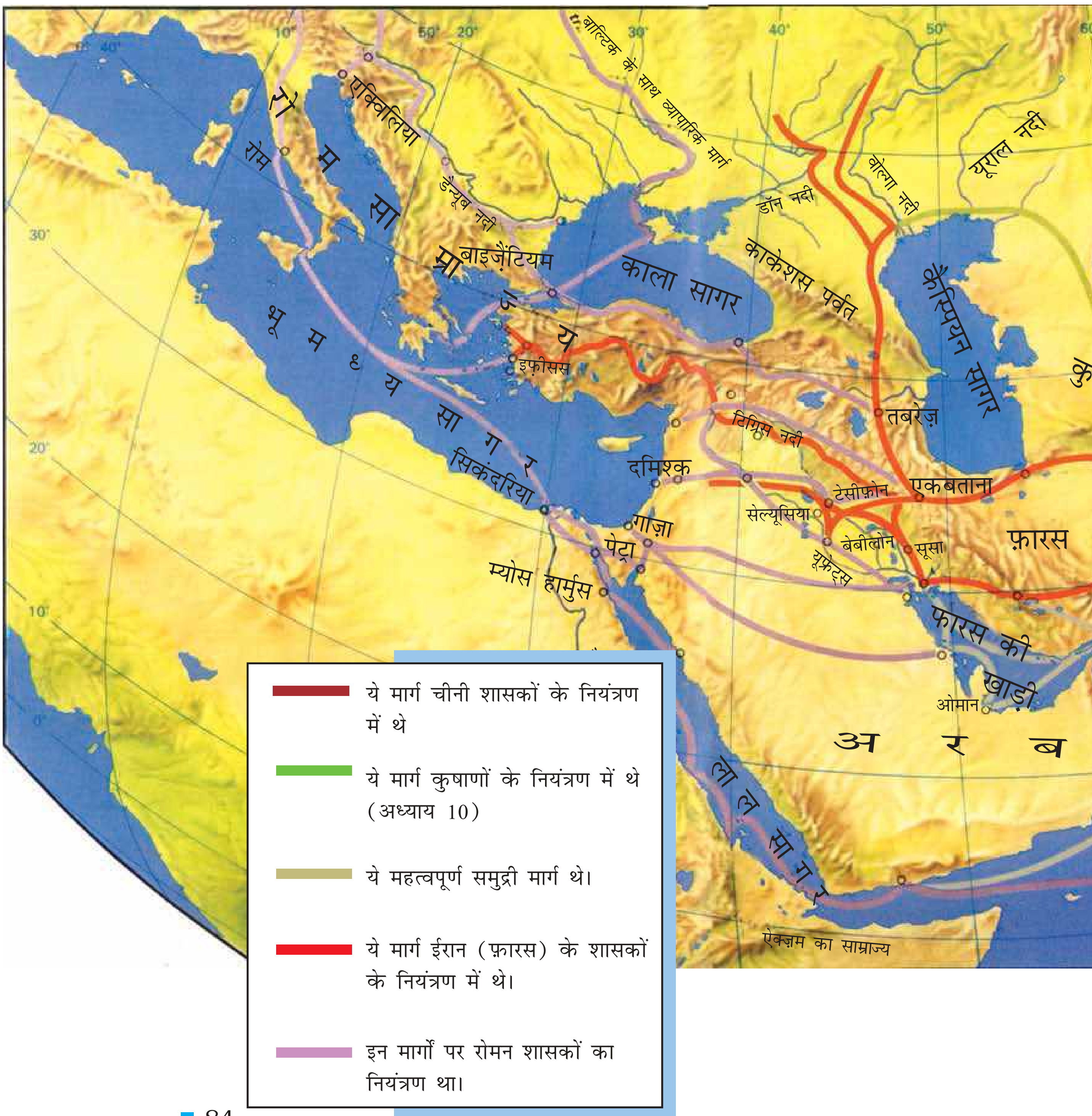

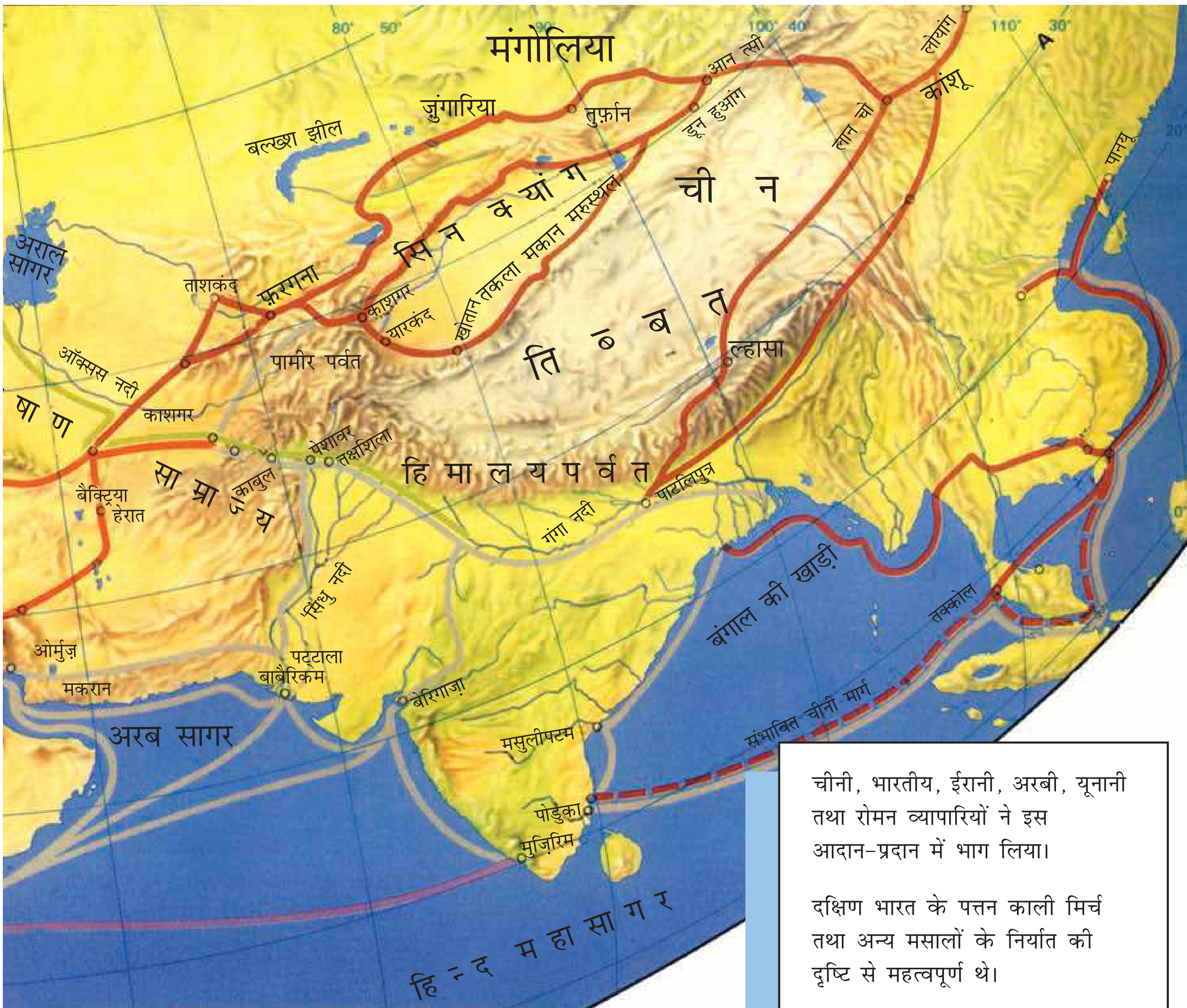

चीनी, भारतीय, ईरानी, अरबी, यूनानी तथा रोमन व्यापारियों ने इस आदान-प्रदान में भाग लिया।

दक्षिण भारत के पत्तन काली मिर्च तथा अन्य मसालों के निर्यात की दृष्टि से महत्वपूर्ण थे।

मानचित्र में पोडुका (दक्षिण भारत में) ढूँढ़ो। अरिकामेडु का यह रोमन नाम था (अध्याय 9)।

दि टाइम्स एटलस ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री (संपा. ज्योफ्रे बाराक्लो) हैमंड इंक, न्यू जर्सी, 1986, पृ. 70-71 पर आधारित

आगे की बात

लगभग 2200 वर्ष पहले मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया। इसके स्थान पर, (साथ ही अन्य जगहों पर भी) कई नए राज्यों का उदय हुआ। पश्चिमोत्तर में तथा उत्तर-भारत के कुछ भागों में करीब एक सौ सालों तक हिन्द-यवन राजाओं का शासन रहा। इनके बाद पश्चिमोत्तर, उत्तर तथा पश्चिमी भारत पर शक नामक मध्य-एशियाई लोगों का शासन स्थापित हुआ। इनमें से कुछ राज्य लगभग 500 वर्षों तक टिके रहे जब तक कि शक शासकों को गुप्त शासकों से पराजय नहीं मिल गई (अध्याय 11)। शकों के बाद कुषाणों (लगभग 2000 वर्ष पहले) का शासन स्थापित हुआ। अध्याय 10 में तुम कुषाणों के बारे में और अधिक जानोगे।

हिन्द-यवन सिक्का

उत्तर तथा मध्यभारत के कुछ इलाकों में मौर्य सेनानायक पुष्यमित्र शुंग ने एक राज्य की स्थापना की। शुंगों के बाद कण्व तथा कुछ और वंशों का शासन तब तक चला जब तक लगभग 1700 वर्ष पहले गुप्त साम्राज्य की स्थापना हुई।

कुषाण सिक्का

हमने देखा कि पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों पर शकों का शासन था। यहाँ पश्चिमी भारत तथा मध्य भारत पर शासन कर रहे सातवाहन शासकों के साथ इनके कई युद्ध हुए। लगभग 2100 साल पहले स्थापित सातवाहन राज्य लगभग 400 सालों तक टिका रहा। लगभग 1700 वर्ष पहले मध्य तथा पश्चिमी भारत में वाकाटक वंश का शासन स्थापित हुआ।

शक सिक्का

दक्षिण भारत में, 2200 से 1800 साल पूर्व के बीच चोलों, चेरों तथा पाण्ड्यों ने शासन किया। लगभग 1500 साल पहले, पल्लवों और चालुक्यों के दो बड़े राज्यों की स्थापना हुई।

इसके अलावा और भी कई राज्य और राजा थे। इनके बारे में हमें उनके सिक्कों, पाण्डुलिपियों तथा पुस्तकों से पता चलता है। इन सब के साथ-साथ अनेक ऐसे परिवर्तन भी हो रहे थे, जिनमें सामान्य स्त्री-पुरुषों का महत्वपूर्ण योगदान था। इनमें कृषि का प्रसार, नए शहरों का विकास, उद्योग तथा व्यापार में प्रगति थी। व्यापारियों ने एक तरफ़ जहाँ उपमहाद्वीप के अंदर तथा बाहर ज़मीन के रास्तों की खोज की, वहीं पश्चिम एशिया, पूर्वी अफ़्रीका तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया (मानचित्र 6 देखो) के समुद्री रास्ते भी खुले। मंदिरों, स्तूपों तथा अन्य इमारतों का निर्माण हुआ, किताबें लिखी गईं, साथ ही, वैज्ञानिक खोजें भी हुईं। ये सारी बातें साथ-साथ हो रही थीं। इस पुस्तक के बाकी हिस्सों को पढ़ते हुए तुम इन बातों को ध्यान में रखना।

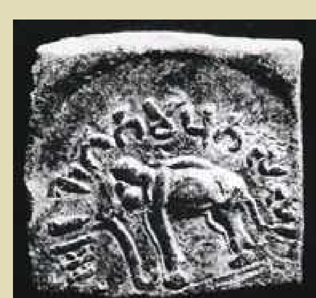

सातवाहन सिक्का

अध्याय 9

खुशहाल गाँव और समृद्ध शहर

लोहार की दुकान पर प्रभाकर

प्रभाकर लोहारों को काम करते देख रहा था। एक छोटी-सी बेंच पर कुल्हाड़ी और हँसिया जैसे कुछ औज़ार बेचने के लिए रखे थे। दूसरी ओर भट्ठी जल रही थी। औज़ार बनाने के लिए दो लोग लोहे की एक छड़ को गरम कर उसे पीट रहे थे। प्रभाकर को ये सब बड़ा मज़ेदार लग रहा था।

लोहे के औज़ार और खेती

लोहे का प्रयोग आज एक आम बात है। लोहे की चीज़ें हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा बन गई हैं। इस उपमहाद्वीप में लोहे का प्रयोग लगभग 3000 साल पहले शुरू हुआ। महापाषाण कब्रों में लोहे के औज़ार और हथियार बड़ी संख्या में मिले हैं। इनके बारे में तुम अध्याय 5 में पढ़ चुके हो।

करीब 2500 वर्ष पहले लोहे के औज़ारों के बढ़ते उपयोग का प्रमाण मिलता है। इनमें जंगलों को साफ़ करने के लिए कुल्हाड़ियाँ और जुताई के लिए हलों के फाल शामिल हैं। अध्याय 6 में तुमने पढ़ा था कि लोहे के फाल के इस्तेमाल से कृषि उत्पादन बढ़ गया।

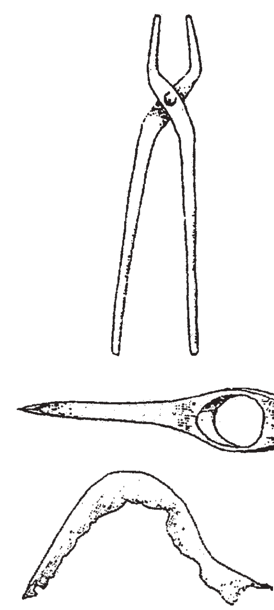

औज़ारों की सूची में इन चित्रों के नाम चुनो – हँसिया, कुल्हाड़ी, और सँड़सी।
लोहे की ऐसी पाँच चीज़ों की सूची बनाओ जिनका प्रयोग तुम रोज़ करते हो।

कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए उठाए गए अन्य कदम : सिंचाई

समृद्ध गाँवों के बिना राजाओं तथा उनके राज्यों का बने रहना मुश्किल था। जिस तरह कृषि के विकास में नए औज़ार तथा रोपाई (अध्याय 6) महत्वपूर्ण कदम थे, उसी तरह सिंचाई भी काफी उपयोगी साबित हुई। इस समय सिंचाई के लिए नहरें, कुएँ, तालाब तथा कृत्रिम जलाशय बनाए गए।

इस चार्ट में तुम्हें सिंचाई से आए परिवर्तन दिखाए गए हैं। खाली स्थानों में सही वाक्य भरो :

- लोगों द्वारा परिश्रम किया गया।
- किसानों को लाभ मिला, क्योंकि अब उत्पादन की अनिश्चितता घटी।
- कर अदा करने के लिए किसानों को उत्पादन बढ़ाना था।
- राजाओं ने सिंचाई की योजना बनाई और धन खर्च किया।

1. राजा को सेना, महल और किले बनवाने के लिए धन चाहिए।	2. वे किसानों से कर लेते हैं।
3.	4. यह सिंचाई से ही संभव था।
5.	6.
7. कृषि उत्पादन बढ़ा।	8. राजस्व भी बढ़ा।

9.

गाँवों में कौन रहते थे?

इस उपमहाद्वीप के दक्षिणी तथा उत्तरी हिस्सों के अधिकांश गाँवों में कम से कम तीन तरह के लोग रहते थे। तमिल क्षेत्र में बड़े भूस्वामियों को *वेल्लला*, साधारण हलवाहों को *उणवार* और भूमिहीन मज़दूर, दास *कडैसियार* और *अदिमई* कहलाते थे।

देश के उत्तरी हिस्से में, गाँव का प्रधान व्यक्ति *ग्राम-भोजक* कहलाता था। अक्सर एक ही परिवार के लोग इस पद पर कई पीढ़ियों तक बने

रहते थे। यानी कि यह पद आनुवंशिक था। *ग्राम-भोजक* के पद पर आमतौर पर गाँव का सबसे बड़ा भू-स्वामी होता था। साधारणतया इनकी ज़मीन पर इनके दास और मज़दूर काम करते थे। इसके अतिरिक्त प्रभावशाली होने के कारण प्रायः राजा भी कर वसूलने का काम इन्हें ही सौंप देते थे। ये न्यायाधीश का और कभी-कभी पुलिस का काम भी करते थे।

ग्राम-भोजकों के अलावा अन्य स्वतंत्र कृषक भी होते थे, जिन्हें *गृहपति* कहते थे। इनमें ज़्यादातर छोटे किसान ही होते थे। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे स्त्री-पुरुष थे, जिनके पास अपनी ज़मीन नहीं होती थी। इनमें दास *कर्मकार* आते थे, जिन्हें दूसरों की ज़मीन पर काम करके अपनी जीविका चलानी पड़ती थी।

अधिकांश गाँवों में लोहार, कुम्हार, बढ़ई तथा बुनकर जैसे कुछ शिल्पकार भी होते थे।

प्राचीनतम तमिल रचनाएँ

तमिल की प्राचीनतम रचनाओं को *संगम* साहित्य कहते हैं। इनकी रचना करीब 2300 साल पहले की गई। इन्हें *संगम* इसलिए कहा जाता है क्योंकि मदुरै (देखो मानचित्र 7, पृष्ठ 113) के कवियों के सम्मेलनों में इनका संकलन किया जाता था। गाँव में रहने वालों के जिन तमिल नामों का उल्लेख यहाँ किया गया है, वे *संगम* साहित्य में पाए जाते हैं।

नगर : क्या कहती हैं कहानियाँ, यात्रा-विवरण, मूर्तिकलाएँ और पुरातत्त्व

तुमने जातकों के बारे में सुना होगा। ये वो कहानियाँ हैं, जो आम लोगों में प्रचलित थीं। बौद्ध भिक्खुओं ने इनका संकलन किया। यहाँ एक जातक कथा दी गई है, जिसमें यह बताया गया है कि एक निर्धन किस तरह धीरे-धीरे धनी बन जाता है।

एक निर्धन की चतुराई

एक शहर में एक गरीब युवक रहता था। उसके पास एक मरे चूहे के अलावा कुछ नहीं था। उसने उस चूहे को एक सिक्के में एक भोजनालय वाले की बिल्ली के लिए बेच दिया।

फिर एक दिन बड़ी ज़ोर की आँधी आई। राजा का बगीचा टूटी टहनियों और पत्तों से भर गया। उनका माली इसे साफ़ करने की बात से परेशान हो उठा। युवक ने माली से कहा कि अगर लकड़ियाँ और पत्ते उसे मिल जाएँ तो वह बगीचे की सफ़ाई कर सकता है। माली तुरंत मान गया।

युवक ने पास खेल रहे बच्चों को यह कह कर इकट्ठा कर लिया कि प्रत्येक टहनी और पत्ते के बदले में उन्हें एक-एक मिठाई मिलेगी। देखते ही देखते उन्होंने बगीचे से एक-एक तिनका चुनकर गेट के पास इकट्ठा कर दिया। तभी उधर से राजा का कुम्हार बर्तनों को पकाने के लिए ईंधन की तलाश में गुजरा। उसने पूरे ढेर को खरीद लिया। इस तरह युवक के पास कुछ और पैसे हो गए।

अब उस युवक ने एक और योजना बनाई। एक बड़े बर्तन में पानी भरकर वह नगर के द्वार पर गया और वहाँ उसने घास काटने वाले 500 लोगों को पानी पिलाया।

खुश होकर उन लोगों ने कहा, "तुमने हमारे लिए इतना अच्छा काम किया बताओ अब हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं?"

उसने कहा, "मैं आपको यह तब बताऊँगा जब मुझे आपकी सहायता की ज़रूरत होगी।" उसके बाद उसने एक व्यापारी से दोस्ती की। एक दिन उस व्यापारी ने बताया, "कल एक घोड़े का व्यापारी 500 घोड़ों के साथ शहर में आ रहा है।"

यह सुनकर उस युवक ने उन घास काटने वालों के पास जाकर कहा, "कृपया, तुम सब एक-एक घास का गट्ठर मुझे दो और अपनी घास तब तक मत बेचो, जब तक मेरी न बिक जाए।" उन्होंने उसे घासों के 500 गट्ठर दे दिए। जब घोड़े के व्यापारी को कहीं भी घास न मिली तो उसने इस युवक की घास एक हज़ार सिक्के में खरीद ली।

इस कहानी में आए व्यक्तियों के व्यवसायों की सूची बनाओ।

प्रत्येक के लिए यह तय करो कि वे (क) शहर में, (ख) गाँव में, या फिर (ग) शहर तथा गाँव दोनों में रहते थे।

घोड़े का व्यापारी शहर में क्यों आया होगा?

क्या महिलाएँ कहानी में बताए व्यवसायों को अपना सकती थीं? उत्तर के कारण बताओ।

प्राचीन नगरों के जीवन के बारे में हमें कुछ अन्य स्रोतों से भी पता चल सकता है। शहरों, गाँवों या फिर जंगलों के जीवन से जुड़ी घटनाओं को मूर्तिकार कलात्मक ढंग से उकेरते थे। इन मूर्तियों को ऐसी इमारतों की रेलिंग, खंभों या प्रवेश-द्वारों पर सजाया जाता था जहाँ लोग आते थे।

दिल्ली में मिला वलयकूप।
हड़प्पा की जल निकास व्यवस्था से यह कैसे भिन्न है?

नीचे: साँची की मूर्तिकला। यह मध्य प्रदेश स्थित साँची के स्तूप की मूर्तिकला का नमूना है। इसमें शहर के जीवन का एक दृश्य है। तुम अध्याय 12 में साँची के बारे में पढ़ोगे। इन दीवारों को देखो। क्या वे ईंट की बनी हैं या फिर लकड़ी या पत्थर से? क्या इसकी रेलिंग लकड़ी की बनी हैं? इन इमारतों की छतों का वर्णन करो।

अध्याय 6 में वर्णित अनेक शहर, महाजनपदों की राजधानी थे। जैसा कि तुमने पढ़ा इनमें से कुछ शहर परकोटों से घिरे होते थे।

जैसा कि तुम ऊपर के चित्र में देख रहे हो, अनेक शहरों में *वलयकूप* मिले हैं। ये वलयकूप गुसलखाने, नाली या कूड़ेदान के लिए प्रयुक्त होते थे। प्राय: ये वलयकूप लोगों के घरों में होते थे।

महलों, बाज़ारों या आम घरों के अवशेष बहुत कम मिले हैं। संभवत: लकड़ी, मिट्टी व कच्ची ईंटों या छप्पर से बने होने के कारण ये ज़्यादा समय तक टिक न पाए हों। भविष्य में पुरातत्त्वविद् इनकी खोज कर सकते हैं।

प्राचीन शहरों के बारे में वहाँ गए नाविकों तथा यात्रियों के विवरणों द्वारा भी पता चलता है। ऐसा ही एक विस्तृत विवरण किसी अज्ञात यूनानी नाविक का है। जिन-जिन

बेरिगाज़ा (भरूच का यूनानी नाम) की कहानी

बेरिगाज़ा की संकरी खाड़ी में समुद्र से आने वालों के लिए नाव चला पाना बहुत मुश्किल होता है।

राजा के द्वारा नियुक्त कुशल और अनुभवी स्थानीय मछुआरे ही यहाँ जहाज़ ला सकते थे।

बेरिगाज़ा में शराब, ताँबा, टिन, सीसा, मूँगा, पुखराज, कपड़े, सोने और चाँदी के सिक्कों का आयात होता था।

हिमालय की जड़ी-बूटियाँ, हाथी-दाँत, गोमेद, कार्नीलियन, सूती कपड़ा, रेशम तथा इत्र यहाँ से निर्यात किए जाते थे।

राजा के लिए व्यापारी विशेष उपहार लाते थे। इनमें चाँदी के बर्तन, गायक-किशोर, सुंदर औरतें, अच्छी शराब तथा उत्कृष्ट महीन कपड़े शामिल थे।

बेरिगाज़ा से आयात और निर्यात होने वाली चीज़ों की सूची बनाओ।

दो ऐसी चीज़ें बताओ, जिनका उपयोग हड़प्पा युग में नहीं होता था।

पत्तनों पर वह गया, उन सभी के बारे में उसने लिखा है। मानचित्र 7 (पृष्ठ 113) में भरूच ढूँढ़ो। अब उसके द्वारा दिए गए वर्णन को पढ़ो।

सिक्के

पृष्ठ 90 पर दी गई कहानी में तुमने देखा कि किस तरह सिक्कों के आधार पर सम्पत्ति का मूल्यांकन किया गया। पुरातत्त्वविदों को इस युग के हज़ारों सिक्के मिले हैं। सबसे पुराने आहत सिक्के थे, जो करीब 500 साल चले। इसका चित्र नीचे दिया गया है। चाँदी या सोने के सिक्कों पर विभिन्न आकृतियों को आहत कर बनाए जाने के कारण इन्हें आहत सिक्का कहा जाता था।

विनिमय के अन्य साधन

संगम साहित्य की इस छोटी सी कविता को पढ़ो।

खेतों के सफ़ेद धान गाड़ियों पर लादे
जा रहे हैं
नमक के लिए,
लंबे-लंबे रास्ते
चाँदनी सी सफ़ेद रेत पर
परिवार को समेटे
कहीं पीछे छूट न जाएँ।
शहरों से नमक के सौदागरों के
यूँ चले जाने से सिर्फ़ सन्नाटा रह जाता है।

समुद्र के किनारे नमक का बहुत ज़्यादा उत्पादन होता था।

व्यापारी किस चीज़ से इसका विनिमय करते हैं?

वे किस तरह यात्रा कर रहे हैं?

नगर : अनेक गतिविधियों के केंद्र

अक्सर नगर कई कारणों से महत्वपूर्ण हो जाते थे। उदाहरण के लिए मथुरा (मानचित्र 7, पृष्ठ 113) को देखो।

यह 2500 साल से भी ज़्यादा समय से एक महत्वपूर्ण नगर रहा है क्योंकि यह यातायात और व्यापार के दो मुख्य रास्तों पर स्थित था। इनमें से एक रास्ता उत्तर-पश्चिम से पूरब की ओर, दूसरा उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाला था। शहर के चारों ओर किलेबंदी थी, इसमें अनेक मंदिर थे। आस-पास के किसान तथा पशुपालक शहर में रहने वालों के लिए भोजन जुटाते थे। मथुरा बेहतरीन मूर्तियाँ बनाने का केंद्र था।

लगभग 2000 साल पहले मथुरा कुषाणों की दूसरी राजधानी बनी। इसके बारे में तुम अगले अध्याय में पढ़ोगे। मथुरा एक धार्मिक केंद्र भी रहा है। यहाँ बौद्ध विहार और जैन मंदिर हैं। यह कृष्ण भक्ति का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।

मथुरा में प्रस्तर-खंडों तथा मूर्तियों पर अनेक अभिलेख मिले हैं। आमतौर पर ये संक्षिप्त अभिलेख हैं, जो स्त्रियों तथा पुरुषों द्वारा मठों या मंदिरों को दिए जाने वाले दान का उल्लेख करते हैं। प्राय: शहर के राजा, रानी, अधिकारी, व्यापारी तथा शिल्पकार इस प्रकार के दान करते थे। उदाहरण के लिए मथुरा के अभिलेख में सुनारों, लोहारों, बुनकरों, टोकरी बुनने वालों, माला बनाने वालों और इत्र बनाने वालों के उल्लेख मिलते हैं।

मथुरा के लोगों के व्यवसायों की एक सूची बनाओ। एक ऐसे व्यवसाय का नाम बताओ जो हड़प्पा में नहीं था।

शिल्प तथा शिल्पकार

पुरास्थलों से शिल्पों के नमूने मिले हैं। इनमें मिट्टी के बहुत ही पतले और सुंदर बर्तन मिले हैं, जिन्हें उत्तरी काले चमकीले पात्र कहा जाता है क्योंकि ये ज़्यादातर उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में मिले हैं तथा ये प्राय: काले रंग के होते हैं, और इनमें एक खास चमक होती है।

ध्यान रहे कि अन्य दूसरे शिल्पों के अवशेष नहीं बचे होंगे। जैसे कि विभिन्न ग्रंथों से हमें पता चलता है कि कपड़ों का उत्पादन बहुत महत्वपूर्ण था। उत्तर में वाराणसी और दक्षिण में मदुरै इसके प्रसिद्ध केंद्र थे। यहाँ स्त्री-पुरुष दोनों काम करते थे।

अनेक शिल्पकार तथा व्यापारी अपने-अपने संघ बनाने लगे थे, जिन्हें *श्रेणी* कहते थे। शिल्पकारों की श्रेणियों का काम प्रशिक्षण देना, कच्चा माल उपलब्ध कराना तथा तैयार माल का वितरण करना था। जबकि व्यापारियों की श्रेणियाँ व्यापार का संचालन करती थीं। श्रेणियाँ बैंकों के रूप में काम करती थीं, जहाँ लोग पैसे जमा रखते थे। इस धन का निवेश लाभ के लिए किया जाता था। उससे मिले लाभ का कुछ हिस्सा जमा करने वाले को लौटा दिया जाता था या फिर मठ आदि धार्मिक संस्थानों को दिया जाता था।

सूत कातने और बुनने के नियम

ये नियम *अर्थशास्त्र* के हैं। अध्याय 8 में अर्थशास्त्र का उल्लेख किया गया है। इसमें वर्णन किया गया है कि किस प्रकार एक विशेष पदाधिकारी की देखरेख में कारखानों में सूत की कताई और बुनाई की जाती थी।

ऊन, पेड़ों की छाल, कपास, पटुआ तथा सन को तैयार करने के काम में विधवाओं, सक्षम-अक्षम महिलाओं, भिक्खुणियों, वृद्धा वेश्याओं, राजा की अवकाशप्राप्त दासियों, सेविकाओं और अवकाशप्राप्त देवदासियों को लगाया जा सकता है।

इन्हें इनके काम के और गुणवत्ता के अनुसार पारिश्रमिक देना चाहिए। जिन महिलाओं को बाहर निकलने की अनुमति नहीं है, वे अपनी दासियों को भेजकर कच्चे माल को मंगवा सकती हैं और फिर तैयार माल उन्हें भिजवा सकती हैं।

वे औरतें, जो कारखाने तक जा सकती हैं, उन्हें अपना माल कारखाने तक तड़के ले जाना पड़ता था, जहाँ उन्हें पारिश्रमिक मिलता था। इस समय माल को अच्छी तरह जाँचने के लिए रोशनी रहती है। अगर निरीक्षक उस औरत की तरफ़ देखता है या इधर-उधर की बातें करता है, तो उसे सज़ा मिलनी चाहिए।

अगर औरत ने अपना काम पूरा नहीं किया, तो उसे जुर्माना देना होगा, इसके लिए उसका अंगूठा भी काटा जा सकता है।

उन महिलाओं की सूची बनाओ जिन्हें निरीक्षक नियुक्त कर सकता था।

क्या काम करने के दौरान महिलाओं को मुश्किलें झेलनी पड़ती थीं?

सूक्ष्म निरीक्षण : अरिकामेडु

मानचित्र 7 (पृष्ठ 113) में अरिकामेडु (पुदुच्चेरी में) ढूँढ़ो। पृष्ठ 96 में रोम के बारे में दी जानकारी पढ़ो। लगभग 2200 से 1900 साल पहले अरिकामेडु एक पत्तन था, यहाँ दूर-दूर से आए जहाज़ों से सामान उतारे जाते थे। यहाँ ईंटों से बना एक ढाँचा मिला है जो संभवत: गोदाम रहा हो। यहाँ भूमध्य-सागरीय क्षेत्र के एंफोरा जैसे पात्र मिले हैं। इनमें शराब या तेल जैसे तरल पदार्थ रखे जा सकते थे। इनमें दोनों तरफ़ से पकड़ने के लिए हत्थे लगे हैं। साथ ही यहाँ 'एरेटाइन' जैसे मुहर लगे लाल-चमकदार बर्तन भी मिले हैं। इन्हें इटली के एक शहर के नाम पर 'एरेटाइन' पात्र के नाम से जाना जाता है। इसे मुहर लगे साँचे पर गीली चिकनी मिट्टी को दबा कर बनाया जाता था। कुछ

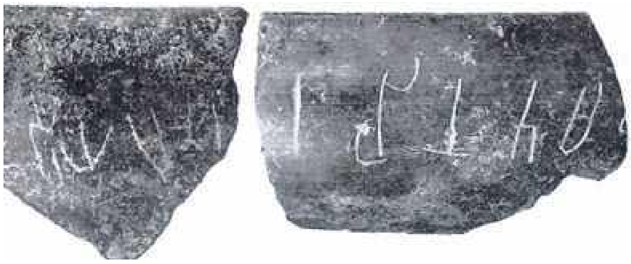

अभिलेखित मिट्टी के बर्तन। कई बर्तनों पर ब्राह्मी लिपि में अभिलेख मिले हैं। प्रारंभ में तमिल भाषा के लिए इसी लिपि का प्रयोग किया जाता था। इसीलिए इन्हें तमिल ब्राह्मी अभिलेख भी कहा जाता है।

ऐसे बर्तन भी मिले हैं, जिनका डिज़ाइन तो रोम का था, किन्तु वे यहीं बनाए जाते थे। यहाँ रोमन लैंप, शीशे के बर्तन तथा रत्न भी मिले हैं।

साथ ही छोटे-छोटे कुण्ड मिले हैं, जो संभवतः कपड़े की रंगाई के पात्र रहे होंगे। यहाँ पर शीशे और अर्ध-बहुमूल्य पत्थरों से मनके बनाने के पर्याप्त साक्ष्य मिले हैं।

रोम के साथ संबंध दर्शाने वाले साक्ष्य की सूची बनाओ।

अन्यत्र

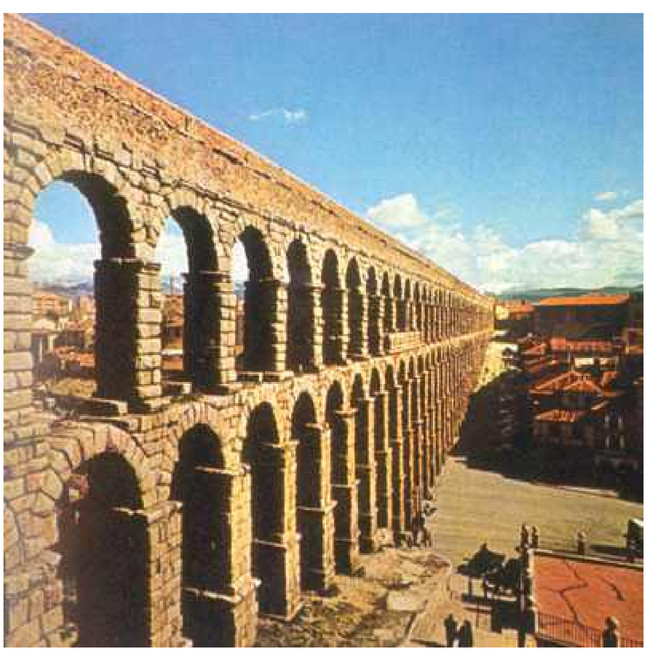

एक्वाडक्ट

मानचित्र 6 (पृष्ठ 84) में रोम को ढूँढ़ो। यह यूरोप के सबसे पुराने शहरों में से एक है। इसका विकास लगभग तभी हुआ, जब गंगा के मैदान के शहर बस रहे थे। रोम एक बहुत बड़े साम्राज्य की राजधानी था। यह यूरोप, उत्तरी अफ्रीका तथा पश्चिमी एशिया तक फैला साम्राज्य था। इसके सबसे महत्वपूर्ण शासकों में से एक ऑगस्टस ने करीब 2000 साल पहले शासन किया था। उसने कहा था कि रोम ईंटों का शहर था, जिसे मैंने संगमरमर का बनवाया। ऑगस्टस और उसके बाद के शासकों ने कई मंदिर तथा महल भी बनवाए। ऑगस्टस ने बड़े-बड़े रंगमंडल (एम्फिथियेटर) बनवाए। इनमें चारों तरफ़ दर्शकों के बैठने की सीढ़ीनुमा जगहें होती थीं। यहाँ लोग विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम देख सकते थे। उन्होंने स्नानागार भी बनवाए जहाँ स्त्रियों तथा पुरुषों के लिए अलग-अलग समय निर्धारित थे। यहाँ लोग एक-दूसरे से मिलते थे, और आराम करते थे। बड़े-बड़े जलवाही सेतु (एक्वाडक्ट) के ज़रिए शहर के स्नानागारों, फव्वारों तथा गुसलखानों के लिए पानी लाया जाता था।

ये बड़े खुले रंगमंडल (एम्फीथियेटर) और जलवाही सेतु इतने दिनों तक कैसे बचे रहे?

कल्पना करो

तुम बेरिगाज़ा में रहते हो और प!त्तन देखने निकले हो। तुमको क्या-क्या देखने को मिला?

आओ याद करें

1. खाली जगहों को भरो :

   (क) तमिल में बड़े भूस्वामी को ———— कहते थे।
   (ख) ग्राम-भोजकों की ज़मीन पर प्रायः———— द्वारा खेती की जाती थी।
   (ग) तमिल में हलवाहे को ———— कहते थे।
   (घ) अधिकांश गृहपति ———— भूस्वामी होते थे।

2. ग्राम-भोजकों के काम बताओ। वे शक्तिशाली क्यों थे?

3. गाँवों तथा शहरों दोनों में रहने वाले शिल्पकारों की सूची बनाओ।

4. सही जवाब ढूँढ़ो :

   (क) वलयकूप का उपयोग
   - नहाने के लिए
   - कपड़े धोने के लिए
   - सिंचाई के लिए
   - जल निकास के लिए किया जाता था।

   (ख) आहत सिक्के
   - चाँदी
   - सोना
   - टिन
   - हाथी दाँत के बने होते थे।

उपयोगी शब्द

लोहा
गाँव
सिंचाई
संगम
नगर
वलयकूप
पत्तन
श्रेणी

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

- उपमहाद्वीप में लोहे के प्रयोग की शुरुआत (करीब 3000 साल पहले)
- लोहे के प्रयोग में बढ़ोतरी, नगर, आहत सिक्के (करीब 2500 साल पहले)
- संगम साहित्य की रचना की शुरुआत (करीब 2300 साल पहले)
- अरिकामेडु का पत्तन (करीब 2200 तथा 1900 साल पहले)

(ग) मथुरा महत्वपूर्ण

- गाँव
- पत्तन
- धार्मिक केंद्र
- जंगल क्षेत्र था।

(घ) श्रेणी

- शासकों
- शिल्पकारों
- कृषकों
- पशुपालकों का संघ होता था।

आओ चर्चा करें

5. पृष्ठ 87 पर दिखाए गए लोहे के औज़ारों में कौन खेती के लिए महत्वपूर्ण होंगे? अन्य औज़ार किस काम में आते होंगे?

6. अपने शहर की जल निकास व्यवस्था की तुलना तुम उन शहरों की व्यवस्था से करो, जिनके बारे में तुमने पढ़ा है। इनमें तुम्हें क्या-क्या समानताएँ और अंतर दिखाई दिए?

आओ करके देखें

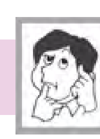

7. अगर तुमने किसी शिल्पकार को काम करते हुए देखा है तो कुछ वाक्यों में उसका वर्णन करो (संकेत : उन्हें कच्चा माल कहाँ से मिलता है, किस तरह के औज़ारों का प्रयोग करते हैं, तैयार माल का क्या होता है, आदि)

8. अपने शहर या गाँव के लोगों के कार्यों की एक सूची बनाओ। मथुरा में किए जाने वाले कार्यों से ये कितने समान और कितने भिन्न हैं?

अध्याय 10

व्यापारी, राजा और तीर्थयात्री

बाज़ार में घूमती जगिनी

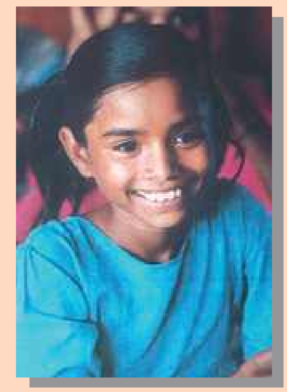

जगिनी अपने गाँव के मेले की आस लगाए बैठी थी। स्टील के चमकदार बर्तन, रंगबिरंगी प्लास्टिक की बाल्टियाँ, शोख रंगों के फूलों के प्रिंटों वाले कपड़े, चाबी से चलने वाले मज़ेदार खिलौने उसे बहुत अच्छे लगते थे। इन चीज़ों को बेचने वाले दुकानदार बसों और ट्रकों पर आते थे और रात को अपना सामान समेटकर वापस चले जाते थे। जगिनी को हैरानी होती थी कि ये लोग हमेशा इस तरह क्यों घूमते रहते हैं। उसकी मां ने बताया कि वे लोग व्यापारी थे। वे चीज़ों को उन जगहों से खरीदते थे, जहाँ ये बनाए जाते थे और फिर उन्हें मेलों में बेचते थे।

व्यापार और व्यापारियों के बारे में जानकारी

अध्याय 9 में तुमने उत्तर के काले पॉलिश वाले बर्तनों के बारे में पढ़ा है। ये खूबसूरत बर्तन, खास तौर से इनकी कटोरियाँ तथा थालियाँ, इस उपमहाद्वीप के अनेक पुरास्थलों से मिले हैं। सवाल उठता है कि इन जगहों पर ये बर्तन कैसे पहुँचे होंगे? ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि जहाँ ये बनते थे, वहाँ से व्यापारी इन्हें ले जाकर अलग-अलग जगहों पर बेचते थे।

दक्षिण भारत सोना, मसाले, खास तौर पर काली मिर्च तथा कीमती पत्थरों के लिए प्रसिद्ध था। काली मिर्च की रोमन साम्राज्य में इतनी माँग थी कि इसे 'काले सोने' के नाम से बुलाते थे। व्यापारी इन सामानों को समुद्री जहाज़ों और सड़कों के रास्ते रोम पहुँचाते थे। दक्षिण भारत में ऐसे अनेक रोमन सोने के सिक्के मिले हैं। इससे यह अंदाज़ा लगाया जाता है कि उन दिनों रोम के साथ बहुत अच्छा व्यापार चल रहा था।

क्या तुम बता सकती हो कि ये सिक्के भारत कैसे और क्यों पहुँचे होंगे?

व्यापार से जुड़ी एक कविता

व्यापार के प्रमाण हमें संगम कविताओं में भी मिलते हैं।

नीचे लिखी कविता में पूर्वी समुद्र तट पर स्थित पुहार पत्तन पर लाए जाने वाले माल का वर्णन मिलता है।

"समुद्री जहाज़ों पर लाए गए तेज़ तर्रार घोड़े,
गाड़ियों पर काली मिर्च की गठरियाँ,
हिमालय से मिले रत्न और सोना
दक्षिण की पहाड़ियों से चंदन की लकड़ियाँ
दक्षिणी-सागर के मोती और
पूर्वी-सागर के मूंगे
गंगा और कावेरी की फ़सलें
श्रीलंका से आए खाद्यान्न,
म्यांमार के बने मिट्टी के बर्तन और दुर्लभ कीमती आयात।"

कविता में उल्लिखित चीज़ों की एक सूची बनाओ। क्या तुम बता सकते हो कि इन चीज़ों का उपयोग किसलिए किया जाता होगा?

व्यापारियों ने कई समुद्री रास्ते खोज निकाले। इनमें से कुछ समुद्र के किनारे चलते थे कुछ अरब सागर और बंगाल की खाड़ी पार करते थे। नाविक मानसूनी हवा का फ़ायदा उठाकर अपनी यात्रा जल्दी पूरी कर लेते थे। वे अफ़्रीका या अरब के पूर्वी तट से इस उपमहाद्वीप के पश्चिमी तट पर पहुँचना चाहते थे तो दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के साथ चलना पसंद करते थे। इन लंबी यात्राओं के लिए मज़बूत जहाज़ों का निर्माण किया जाता था।

समुद्र तटों से लगे राज्य

इस उपमहाद्वीप के दक्षिणी भाग में बड़ा तटीय प्रदेश है। इनमें बहुत-से पहाड़, पठार और नदी के मैदान हैं। नदियों के मैदानी इलाकों में कावेरी का मैदान सबसे उपजाऊ है। मैदानी इलाकों तथा तटीय इलाकों के सरदारों और राजाओं के पास धीरे-धीरे काफी सम्पत्ति और शक्ति हो गई। संगम कविताओं में *मुवेन्दार* की चर्चा मिलती है। यह एक तमिल शब्द है, जिसका अर्थ तीन मुखिया है। इसका प्रयोग तीन शासक परिवारों के

मुखियाओं के लिए किया गया है। ये थे-चोल, चेर तथा पांड्य, (मानचित्र 7, पृष्ठ 113) जो करीब 2300 साल पहले दक्षिण भारत में काफी शक्तिशाली माने जाते थे।

इन तीनों मुखियाओं के अपने दो-दो सत्ता केंद्र थे। इनमें से एक तटीय हिस्से में और दूसरा अंदरूनी हिस्से में था। इस तरह छह केंद्रों में से दो बहुत महत्वपूर्ण थे। एक चोलों का पत्तन पुहार या कावेरीपट्टिनम, दूसरा पांड्यों की राजधानी मदुरै।

ये मुखिया लोगों से नियमित कर के बजाय उपहारों की माँग करते थे। कभी-कभी ये सैनिक अभियानों पर भी निकल पड़ते थे और आस-पास के इलाकों से शुल्क वसूल कर लाते थे। इनमें से कुछ धन वे अपने पास रख लेते थे, बाकी अपने समर्थकों, नाते-रिश्तेदारों, सिपाहियों तथा कवियों के बीच बाँट देते थे। अनेक संगम कवियों ने उन मुखियाओं की प्रशंसा में कविताएँ लिखी हैं जो उन्हें कीमती जवाहरात, सोने, घोड़े, हाथी, रथ या सुंदर कपड़े दिया करते थे।

इसके लगभग 200 वर्षों के बाद पश्चिम भारत (मानचित्र 7, पृष्ठ 113) में सातवाहन नामक राजवंश का प्रभाव बढ़ गया। सातवाहनों का सबसे प्रमुख राजा गौतमी पुत्र श्री सातकर्णी था। उसके बारे में हमें उसकी माँ, गौतमी बलश्री के एक अभिलेख से पता चलता है। वह और अन्य सभी सातवाहन शासक दक्षिणापथ के स्वामी कहे जाते थे। दक्षिणापथ का शाब्दिक अर्थ दक्षिण की ओर जाने वाला रास्ता होता है। पूरे दक्षिणी क्षेत्र के लिए भी यही नाम प्रचलित था। श्री सातकर्णी ने पूर्वी, पश्चिमी तथा दक्षिणी तटों पर अपनी सेनाएँ भेजीं।

क्या तुम बता सकती हो कि श्री सातकर्णी तटों पर नियंत्रण क्यों करना चाहता था?

रेशम मार्ग की कहानी

कीमती, चमकीले रंग और चिकनी, मुलायम बनावट की वजह से रेशमी कपड़े अधिकांश समाज में बहुमूल्य माने जाते हैं। रेशमी कपड़ा तैयार करना एक जटिल प्रक्रिया है। रेशम के कीड़े से कच्चा रेशम निकालकर, सूत कताई होती है, और फिर उससे कपड़ा बुना जाता है। *रेशम* बनाने की

तकनीक का आविष्कार सबसे पहले चीन में करीब 7000 साल पहले हुआ। इस तकनीक को उन्होंने हज़ारों साल तक बाकी दुनिया से छुपाए रखा। पर चीन से पैदल, घोड़ों या ऊँटों पर कुछ लोग दूर-दूर की जगहों पर जाते थे और अपने साथ रेशमी कपड़े भी ले जाते थे। जिस रास्ते से ये लोग यात्रा करते थे वह रेशम मार्ग (सिल्क रूट) के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

कभी-कभी चीन के शासक ईरान और पश्चिमी एशिया के शासकों को उपहार के तौर पर रेशमी कपड़े भेजते थे। यहाँ से रेशम के बारे में जानकारी और भी पश्चिम की ओर फैल गई। करीब 2000 साल पहले रोम के शासकों और धनी लोगों के बीच रेशमी कपड़े पहनना एक फ़ैशन बन गया। इसकी कीमत बहुत ही ज़्यादा होती थी। क्योंकि चीन से इसे लाने में दुर्गम पहाड़ी और रेगिस्तानी रास्तों से होकर जाना पड़ता था। यही नहीं, रास्ते के आस-पास रहने वाले लोग व्यापारियों से यात्रा-शुल्क भी माँगते थे।

मानचित्र 6 (पृष्ठ 84-85) को देखो। इसमें सिल्क रूट तथा उसकी शाखाओं को दिखाया गया है। कुछ शासक इसके बड़े-बड़े हिस्सों पर अपना नियंत्रण करना चाहते थे क्योंकि इस रास्ते पर यात्रा कर रहे व्यापारियों से उन्हें कर, शुल्क तथा तोहफ़ों के ज़रिए लाभ मिलता था। इसके बदले, ये शासक इन व्यापारियों को अपने राज्य से गुज़रते वक्त लुटेरों के आक्रमणों से सुरक्षा देते थे।

सिल्क रूट पर नियंत्रण रखने वाले शासकों में सबसे प्रसिद्ध कुषाण थे। करीब 2000 साल पहले मध्य-एशिया तथा पश्चिमोत्तर भारत पर इनका शासन था। पेशावर और मथुरा इनके दो मुख्य शक्तिशाली केंद्र थे। तक्षशिला भी इनके ही राज्य का हिस्सा था। इनके शासनकाल में ही सिल्क रूट की एक शाखा मध्य-एशिया से होकर सिंधु नदी के मुहाने के पत्तनों तक जाती थी। फिर यहाँ से जहाज़ों द्वारा रेशम, पश्चिम की ओर रोमन साम्राज्य तक पहुँचता था। इस उपमहाद्वीप में सबसे पहले सोने के सिक्के जारी करने वाले शासकों में कुषाण थे। सिल्क रूट पर यात्रा करने वाले व्यापारी इनका उपयोग किया करते थे।

सिल्क रूट पर गाड़ियों का उपयोग क्यों कठिन होता होगा?

चीन से समुद्र के रास्ते भी रेशम का निर्यात होता था। मानचित्र 6 (पृष्ठ 84-85) में इसे ढूँढ़ो। समुद्र के रास्ते रेशम भेजने में क्या सुविधाएँ और क्या समस्याएँ आती होंगी?

बौद्ध धर्म का प्रसार

कुषाणों का सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क था। उसने करीब 1900 साल पहले शासन किया। उसने एक बौद्ध परिषद् का गठन किया, जिसमें एकत्र होकर विद्वान महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श करते थे। बुद्ध की जीवनी *बुद्धचरित* के रचनाकार कवि अश्वघोष, कनिष्क के दरबार में रहते थे। अश्वघोष तथा अन्य बौद्ध विद्वानों ने अब संस्कृत में लिखना शुरू कर दिया था।

इस समय बौद्ध धर्म की एक नई धारा *महायान* का विकास हुआ। इसकी दो मुख्य विशेषताएँ थी। पहले, मूर्तियों में बुद्ध की उपस्थिति सिर्फ़ कुछ संकेतों के माध्यम से दर्शाई जाती थी। मिसाल के तौर पर उनकी निर्वाण प्राप्ति को पीपल के पेड़ की मूर्ति द्वारा दर्शाया जाता था पर अब बुद्ध की प्रतिमाएँ बनाई जाने लगीं। इनमें से अधिकांश मथुरा में, तो कुछ तक्षशिला में बनाई जाने लगीं।

साँची के स्तूप का एक मूर्ति चित्र।
यहाँ इस वृक्ष और उसके नीचे के खाली आसन को देखो। मूर्तिकारों ने यह बताने के लिए खुदाई करके यह मूर्ति बनाई कि बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति इसी वृक्ष के नीचे बैठ कर ध्यान करते हुए हुई।

दूसरा परिवर्तन *बोधिसत्त्व* में आस्था को लेकर आया। बोधिसत्त्व उन्हें कहते हैं जो ज्ञान प्राप्ति के बाद एकांत वास करते हुए ध्यान साधना कर सकते थे। लेकिन ऐसा करने के बजाए, वे लोगों को शिक्षा देने और मदद करने के लिए सांसारिक परिवेश में ही रहना ठीक समझने लगे। धीरे-धीरे बोधिसत्त्व की पूजा काफी लोकप्रिय हो गई। और पूरे मध्य एशिया, चीन और बाद में कोरिया तथा जापान तक भी फैल गई।

बौद्ध धर्म का प्रसार पश्चिमी और दक्षिणी भारत में हुआ, जहाँ बौद्ध भिक्खुओं के रहने के लिए पहाड़ों में दर्जनों गुफाएँ खोदी गईं।

इनमें से कुछ गुफाएँ राजा और रानियों के आदेश पर बनाई गईं तो कुछ व्यापारियों तथा कृषकों द्वारा। इनमें से ज़्यादातर गुफाएँ पश्चिमी घाट के दर्रों के पास बनाई गई थीं। दक्कन के शहरों और तटों के समृद्ध बंदरगाहों और इन्हें जोड़ने वाली सड़कें भी इन्हीं दर्रों से होकर गुजरती थीं। ऐसा लगता है कि यात्रा करने वाले व्यापारी इन गुफाओं वाले मठों में विश्राम के लिए रुकते थे।

बौद्ध धर्म दक्षिण-पूर्व की ओर श्रीलंका, म्यांमार, थाइलैंड तथा इंडोनेशिया सहित दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य भागों में भी फैला।

बाएँ: मथुरा में बनी बुद्ध की एक प्रतिमा का चित्र।
दाएँ: तक्षशिला में बनी बुद्ध की प्रतिमा का एक चित्र।
इन चित्रों को देखकर बताओ कि इनके बीच क्या-क्या समानताएँ हैं और क्या-क्या भिन्नताएँ हैं?

थेरवाद नामक बौद्ध धर्म का आरंभिक रूप इन क्षेत्रों में कहीं अधिक प्रचलित था।

पृष्ठ 100 को एक बार फिर पढ़ो। क्या तुम बता सकती हो कि बौद्ध धर्म इन इलाकों में कैसे फैला होगा?

कार्ले की गुफा, महाराष्ट्र

तीर्थयात्रियों की जिज्ञासा

व्यापारी काफ़िलों में तथा जहाज़ों पर दूर-दूर जाया करते थे। बहुत-से *तीर्थयात्री* भी उनके साथ यात्रा पर निकल पड़ते थे।

तीर्थयात्री

तीर्थयात्री वे स्त्री-पुरुष होते हैं, जो प्रार्थना के लिए पवित्र स्थानों की यात्रा किया करते हैं।

इसी तरह भारत की यात्रा पर आया चीनी बौद्ध तीर्थयात्री फा-शिएन काफी प्रसिद्ध है। वह करीब 1600 साल पहले आया। श्वैन त्सांग 1400 साल पहले भारत आया और उसके करीब 50 साल बाद इत्सिंग आया। वे सब बुद्ध (अध्याय 7) के जीवन से जुड़ी जगहों और प्रसिद्ध मठों को देखने के लिए भारत आए थे।

इनमें से प्रत्येक तीर्थयात्री ने अपनी यात्रा का वर्णन लिखा। इन्होंने अपनी यात्रा के दौरान आई मुश्किलों के बारे में भी लिखा। इन यात्राओं में कई वर्ष लग जाया करते थे। जिन देशों और मठों को उन्होंने देखा, उनके बारे में उन्होंने लिखा और उन किताबों के बारे में भी उन्होंने लिखा, जिन्हें वे अपने साथ ले गए थे।

फा-शिएन चीन वापस कैसे लौटा

फा-शिएन ने अपने घर चीन वापस लौटने के लिए अपनी यात्रा बंगाल से शुरू की। वह व्यापारियों के एक जहाज़ पर चढ़ा। मुश्किल से वे दो दिन ही चल पाए थे कि एक समुद्री तूफ़ान में फँस गए। व्यापारी अपने जहाज़ को डूबने से बचाने के लिए उसमें से अपने माल को फेंककर जहाज को हल्का करने की कोशिश करने लगे। फा-शिएन ने भी अपने सामान को तो फेंक दिया, पर अपनी उन पाण्डुलिपियों और बुद्ध की मूर्तियों को नहीं फेंका, जिन्हें उसने अपनी भारत यात्रा के दौरान संकलित की थी। अंतत: तेरह दिनों के बाद आँधी रुकी। उसने समुद्र का वर्णन इस प्रकार किया है :

'समुद्र असीम है – सूर्य, चाँद या तारों की गति को देखे बिना यह पता लगा पाना असंभव है कि पूर्व किधर है, या पश्चिम किस दिशा में है। अगर बरसात और अंधेरा हो, तो जहाज़ को हवा की रुख में ले जाने के अलावा और कोई चारा नहीं।'

जावा पहुँचने में उसे 90 दिन से भी ज़्यादा लगे। वहाँ वह पाँच महीने के लिए रुका। इसके बाद दूसरे व्यापारी जहाज़ में चढ़कर वह चीन पहुँचा।

मानचित्र 6 (पृष्ठ 84-85) में फा-शिएन द्वारा तय किए गए रास्ते को ढूँढ़ो।

बताओ कि फा-शिएन अपनी पाण्डुलिपियों और मूर्तियों को क्यों नहीं फेंकना चाहता था।

श्वैन त्सांग भू-मार्ग से (उत्तर-पश्चिम और मध्य-एशिया होकर) चीन वापस लौटा। उसने सोने, चाँदी और चंदन की लकड़ी की बनी बुद्ध की मूर्तियाँ तथा 600 से भी ज़्यादा पाण्डुलिपियाँ एकत्र की थीं। इन्हें वह 20 घोड़ों पर लादकर ले गया। पर इसमें से 50 पाण्डुलिपियाँ उस समय खो गईं, जब सिंधु नदी पार करते हुए उसकी नाव उलट गई। अपने जीवन का बाकी हिस्सा उसने बची हुई पाण्डुलिपियों का संस्कृत से चीनी अनुवाद करने में लगा दिया।

नालंदा - शिक्षा का एक विशिष्ट केंद्र

श्वैन त्सांग तथा अन्य तीर्थयात्रियों ने उस समय के सबसे प्रसिद्ध बौद्ध विद्या केंद्र नालंदा (बिहार) में अध्ययन किया। उसने नालंदा के बारे में इस प्रकार लिखा है :

यहाँ के शिक्षक योग्यता तथा बुद्धि में सबसे आगे हैं। बुद्ध के उपदेशों का वह पूरी ईमानदारी से पालन करते हैं। मठ के नियम काफी सख्त हैं, जिन्हें सबको मानना पड़ता है। पूरे दिन वाद-विवाद चलते ही रहते हैं। जिससे युवा और वृद्ध दोनों ही एक-दूसरे की मदद करते हैं। विभिन्न शहरों से विद्वान लोग अपनी शंकाएँ दूर करने यहाँ आते हैं। नए आगन्तुकों से पहले द्वारपाल ही कठिन प्रश्न पूछते हैं। उन्हें अंदर जाने की अनुमति तभी मिलती है, जब वे द्वारपाल को सही उत्तर दे पाते हैं। दस में से सात-आठ सही उत्तर नहीं दे पाते हैं।

श्वैन त्सांग नालंदा में क्यों पढ़ना चाहता था, कारण बताओ?

भक्ति की शुरुआत

इन्हीं दिनों देवी-देवताओं की पूजा का चलन भी शुरू हुआ। बाद में हिन्दू धर्म की यह प्रमुख पहचान बन गई। इनमें शिव, विष्णु और दुर्गा जैसे देवी-देवता शामिल हैं।

इन देवी-देवताओं की पूजा *भक्ति* परम्परा के माध्यम से की जाती थी। भक्ति उस समय काफी लोकप्रिय परम्परा बन गई। किसी देवी या देवता के प्रति श्रद्धा को ही भक्ति कहा जाता है। भक्ति का पथ सबके लिए खुला था, चाहे वह धनी हो या गरीब, ऊँची जाति का हो या नीची जाति का, स्त्री हो या पुरुष।

भक्ति मार्ग की चर्चा हिन्दुओं के पवित्र ग्रंथ *भगवद्गीता* में की गई है। भगवद्गीता महाभारत (अध्याय 12 देखो) का एक हिस्सा है। इसमें भगवान कृष्ण अपने भक्त और मित्र अर्जुन को सभी धर्मों को छोड़कर उनकी शरण में आने का उपदेश देते हैं। क्योंकि केवल कृष्ण ही अर्जुन को सारी बुराइयों से मुक्ति दिला सकते हैं। पूजा का यह रूप धीरे-धीरे देश के विभिन्न भागों में फ़ैलने लगा।

भक्ति मार्ग अपनाने वाले लोग आडंबर के साथ पूजा-पाठ करने के बजाए ईश्वर के प्रति लगन और व्यक्तिगत पूजा पर ज़ोर देते थे।

भक्ति मार्ग अपनाने वालों का यह मानना है कि अगर अपने आराध्य देवी या देवता की सच्चे मन से पूजा की जाए, तो वह उसी रूप में दर्शन देंगे, जिसमें भक्त उसे देखना चाहता है। इसलिए आराध्य देवी या देवता मानव के रूप में भी हो सकते हैं या फिर सिंह, पेड़ या अन्य किसी भी रूप में। जैसे-जैसे इस विचार को समाज द्वारा स्वीकृति मिलती गई, कलाकार, देवी-देवताओं की एक से बढ़कर एक खूबसूरत मूर्तियाँ तैयार करने लगे।

वराह के रूप में विष्णु। एरण, मध्य प्रदेश की यह शानदार मूर्ति विष्णु के 'वराह' रूप की है। पुराणों (अध्याय 12) के अनुसार जल में डूबी पृथ्वी को बचाने के लिए विष्णु ने वराह रूप धारण किया था। यहाँ पृथ्वी को एक स्त्री के रूप में दर्शाया गया है।

भक्ति

भक्ति भज् शब्द से बना है, जिसका अर्थ 'विभाजित करना या हिस्सेदारी' होता है। इसका अर्थ यह है कि भक्ति, भगवान और भक्त के बीच परस्पर एक अंतरंग संबंध है। भक्ति, भगवत् या भगवान के प्रति झुकाव है। भगवत् का एक अर्थ यह भी है- जो अपने ऐश्वर्य तथा सुख को भक्तों के साथ बाँटता है। यानी भक्त या भागवत् अपने देवी-देवता के भग का हिस्सेदार होता है।

एक भक्त द्वारा लिखी गई एक कविता

अधिकांश भक्ति साहित्य हमें यही बताते हैं कि धन, ऐश्वर्य या ऊँचे पद के ज़रिए कभी ईश्वर से आत्मीयता नहीं बन सकती। करीब 1400 साल पहले शिवभक्त अप्पार द्वारा तमिल में लिखी एक कविता का यह एक अंश है। अप्पार एक वेल्लाल (अध्याय 9) था।

'नष्ट होते अंगों वाला कुष्ठ रोगी
ब्राह्मणों की नज़र में निचली जाति का व्यक्ति।
कूड़ा करकट बटोर कर अपनी जीविका चलाने वाला इंसान,
अगर ये लोग भी गंगा को अपनी जटाओं में छिपा लेने वाले
शिव के दास बन जाएँ, तो मैं उनकी आराधना करूँगा।
क्योंकि वे मेरे ईश्वर समान हैं।'

कवि सामाजिक प्रतिष्ठा और भक्ति में किसको ज़्यादा महत्व देते हैं?

देवी-देवताओं का विशेष सम्मान होता था। इसलिए विशेष जगहों पर ही इनकी मूर्तियों को रखा जाता था। इन स्थानों को ही मंदिर कहते हैं। अध्याय 12 में तुम इन मंदिरों के बारे में पढ़ोगी।

भक्ति परम्परा ने चित्रकला, शिल्पकला और स्थापत्य कला के माध्यम से अभिव्यक्ति की प्रेरणा दी है।

हिन्दू

'हिन्दू' शब्द 'इण्डिया' शब्द की तरह ही सिंधु या इण्डस से निकला है। यह शब्द अरबों तथा ईरानियों द्वारा उन लोगों के लिए उपयोग किया जाता था, जो सिंधु नदी के पूर्व में रहते थे। यही शब्द उनके धार्मिक विश्वास तथा सांस्कृतिक परम्पराओं के लिए भी प्रयुक्त होता था।

अन्यत्र

करीब 2000 साल पहले पश्चिमी एशिया में ईसाई धर्म का उदय हुआ। ईसा मसीह का जन्म बेथलेहम में हुआ, जो उस समय रोमन साम्राज्य का हिस्सा था। ईसा मसीह ने स्वयं को इस संसार का उद्धारक बताया। उन्होंने दूसरों को प्यार देने और उसी तरह दूसरों पर विश्वास करने का उपदेश दिया, जिस तरह हर व्यक्ति दूसरों से प्यार और विश्वास की उम्मीद करता है।

बाइबिल में ईसा मसीह के उपदेश की बातें लिखी हैं। यहाँ इसका एक अंश दिया गया है :

धन्य हैं वे लोग जो धर्म और न्याय के लिए भूखे प्यासे रहते हैं,
उनकी कामनाएँ पूरी होंगी।
जो दयालु हैं, वे धन्य हैं, क्योंकि उन्हें दया मिलेगी।
धन्य हैं वे जो दिल से पवित्र हैं,
क्योंकि वे ईश्वर के दर्शन कर सकेंगे।
धन्य हैं वे जो शांति स्थापित करते हैं,
वही ईश्वर की संतान कहलाएँगे।

ईसा मसीह के उपदेश साधारण लोगों को बहुत पसंद आए और धीरे-धीरे यह पश्चिमी एशिया, अफ़्रीका तथा यूरोप में फैल गए। ईसा मसीह की मृत्यु के सौ सालों के अंदर ही भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी तट पर पहले ईसाई धर्म प्रचारक, पश्चिमी एशिया से आए।

मानचित्र 6 (पृष्ठ 84-85) देखो और पता लगाओ कि किस रास्ते से ईसाई धर्म प्रचारक भारत आए होंगे?

केरल के ईसाईयों को 'सिरियाई ईसाई' कहा जाता है क्योंकि संभवत: वे पश्चिम एशिया से आए थे, वे विश्व के सबसे पुराने ईसाईयों में से हैं।

कल्पना करो

तुम्हारे पास कोई पाण्डुलिपि है, जिसे एक चीनी तीर्थयात्री अपने साथ ले जाना चाहता है। उसके साथ अपनी बातचीत का वर्णन करो।

उपयोगी शब्द

व्यापारी
मुवेन्दार
रास्ता या मार्ग
रेशम
कुषाण
महायान
बोधिसत्त्व
थेरवाद
तीर्थयात्री
भक्ति

आओ याद करें

1. निम्नलिखित के उपयुक्त जोड़े बनाओ

दक्षिणापथ के स्वामी	बुद्धचरित
मुवेन्दार	महायान बौद्ध धर्म
अश्वघोष	सातवाहन शासक
बोधिसत्त्व	चीनी यात्री
श्वैन त्सांग	चोल, चेर, पांड्य

कुछ महत्वपूर्ण
तिथियाँ

- रेशम बनाने की कला की खोज (लगभग 7000 साल पहले)
- चोल, चेर तथा पांड्य (लगभग 2300 साल पूर्व)
- रोमन-साम्राज्य में रेशम की बढ़ती मांग (लगभग 2000 साल पहले)
- कुषाण शासक कनिष्क (लगभग 1900 साल पहले)
- फा-शिएन का भारत आगमन (लगभग 1600 वर्ष पहले)
- श्वैन त्सांग की भारत यात्रा, अप्पार की शिव स्तुति की रचना (लगभग 1400 साल पहले)

2. राजा सिल्क रूट पर अपना नियंत्रण क्यों कायम करना चाहते थे?

3. व्यापार तथा व्यापारिक रास्तों के बारे में जानने के लिए इतिहासकार किन-किन साक्ष्यों का उपयोग करते हैं?

4. भक्ति की प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं?

आओ चर्चा करें

5. चीनी तीर्थयात्री भारत क्यों आए? कारण बताओ।

6. साधारण लोगों का भक्ति के प्रति आकर्षित होने का कौन-सा कारण होता है?

आओ करके देखें

7. तुम बाज़ार से क्या-क्या सामान खरीदती हो उनकी एक सूची बनाओ। बताओ कि तुम जिस शहर या गाँव में रहती हो, वहाँ इनमें से कौन-कौन सी चीज़ें बनी थीं और किन चीज़ों को व्यापारी बाहर से लाए थे?

8. आज भारत में लोग बहुत तीर्थयात्राएँ करते हैं। उनमें से एक के विषय में पता करो और एक संक्षिप्त विवरण दो। (संकेत : तीर्थयात्रा में स्त्री, पुरुष या बच्चों में से कौन जा सकते हैं? इसमें कितना वक्त लगता है? लोग किस तरह यात्रा करते हैं? वे अपनी यात्रा के दौरान क्या-क्या ले जाते हैं? तीर्थ स्थानों पर पहुँचकर वे क्या करते हैं? क्या वे वापस आते समय कुछ लाते हैं?)

अध्याय 11

नए साम्राज्य और राज्य

अरविन्द राजा बना

अरविन्द अपने स्कूल में खेले जाने वाले नाटक में राजा की भूमिका अदा करने के लिए चुना गया। उसने सोचा था कि वह शाही वेशभूषा में, मूँछों पर ताव देते हुए, रूपहले कागज़ में लिपटी तलवार को शान से पकड़कर चहलकदमी करेगा। ज़रा सोचो, उसे कितनी हैरानी हुई जब उसे बताया गया कि उसे बैठकर वीणा भी बजानी होगी और कविता पाठ भी करना होगा। एक संगीतज्ञ राजा? कौन हो सकता है वह? अरविन्द सोचने लगा।

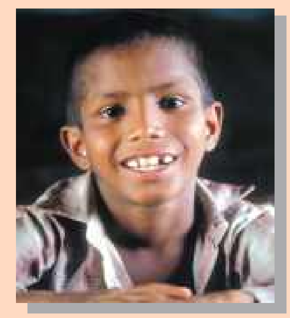

क्या बताती हैं प्रशस्तियाँ

दरअसल अरविन्द गुप्तवंश के प्रसिद्ध राजा समुद्रगुप्त की भूमिका अदा करने जा रहा था। समुद्रगुप्त के बारे में हमें एक लंबे अभिलेख से पता चलता है। वास्तव में यह उसके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा संस्कृत में लिखी एक कविता है। इसे करीब 1700 साल पहले लिखा गया। इलाहाबाद में अशोक-स्तम्भ पर इसकी खुदाई की गई थी।

यह एक विशेष किस्म का अभिलेख है, जिसे *प्रशस्ति* कहते हैं। यह एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ 'प्रशंसा' होता है। प्रशस्तियाँ लिखने का प्रचलन पहले भी था। जैसे तुमने अध्याय 10 में गौतमी-पुत्र श्री सातकर्णी की प्रशस्ति के बारे में पढ़ा। परन्तु गुप्तकाल में इनका महत्त्व और बढ़ गया।

समुद्रगुप्त की प्रशस्ति

आओ देखें, समुद्रगुप्त की प्रशस्ति हमें क्या बताती है। कवि ने इसमें राजा की एक योद्धा, युद्धों को जीतने वाले राजा, विद्वान तथा एक उत्कृष्ट कवि के रूप में भरपूर प्रशंसा की है। यहाँ तक कि उसे ईश्वर के बराबर बताया गया है। प्रशस्ति में लंबे-लंबे वाक्य दिए गए हैं। यहाँ वैसे ही एक वाक्य का अंश दिया गया है:

योद्धा समुद्रगुप्त

जिनका शरीर युद्ध मैदान में कुठारों, कुल्हाड़ियों, तीरों, भालों, बर्छों, तलवारों, लोहे की गदाओं, नुकीले तीरों तथा अन्य सैकड़ों हथियारों से लगे घावों के दाग से भरे होने के कारण अत्यंत सुंदर दिखता है।

यह वर्णन तुम्हें उस राजा के बारे में क्या बताता है? राजा किस प्रकार युद्ध लड़ते थे?

वीणा बजाने वाला राजा। समुद्रगुप्त के कुछ अन्य गुणों को सिक्कों पर दिखाया गया है जैसे इस सिक्के में उन्हें वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।

अगर तुम मानचित्र 7 (पृष्ठ 113) को गौर से देखो तो पाओगे कि एक क्षेत्र को हरे रंग से रंगा गया है। तुम्हें पूर्वी समुद्र तट के साथ-साथ एक क्रम में लाल बिंदु दिखेंगे। उसी तरह कुछ क्षेत्र बैंगनी और नीले रंग के भी मिलेंगे।

यह मानचित्र इस प्रशस्ति में प्राप्त जानकारियों के आधार पर बनाया गया है। हरिषेण चार विभिन्न प्रकार के राजाओं और उनके प्रति समुद्रगुप्त की नीतियों का वर्णन करते हैं।

1. मानचित्र में हरे रंग का क्षेत्र *आर्यावर्त्त* के उन नौ शासकों का है, जिन्हें समुद्रगुप्त ने हराकर उनके राज्यों को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

2. इसके बाद *दक्षिणापथ* के बारह शासक आते हैं। इनमें से कुछ की राजधानियों को दिखाने के लिए मानचित्र पर लाल बिंदु दिए गए हैं। इन सब ने हार जाने पर समुद्रगुप्त के सामने समर्पण किया था। समुद्रगुप्त ने उन्हें फिर से शासन करने की अनुमति दे दी।

3. पड़ोसी देशों का आंतरिक घेरा बैंगनी रंग से रंगा गया है। इसमें असम, तटीय बंगाल, नेपाल और उत्तर-पश्चिम के कई गण या संघ (अध्याय 6 याद करो) आते थे। ये समुद्रगुप्त के लिए उपहार लाते थे, उनकी आज्ञाओं का पालन करते थे तथा उनके दरबार में उपस्थित हुआ करते थे।

4. बाह्य इलाके के शासक, जिन्हें नीले रंग से रंगा गया है संभवत: कुषाण तथा शक वंश के थे। इसमें श्रीलंका के शासक भी थे। इन्होंने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की और अपनी पुत्रियों का विवाह उससे किया।

मानचित्र में प्रयाग (इलाहाबाद का पुराना नाम), उज्जैन तथा पाटलिपुत्र (पटना) ढूँढ़ो। ये गुप्त शासन के महत्वपूर्ण केंद्र थे।

आर्यावर्त्त तथा दक्षिणापथ के राज्यों के साथ समुद्रगुप्त के व्यवहार में क्या अंतर था?

क्या इस अंतर के पीछे तुम्हें कोई कारण दिखाई देता है?

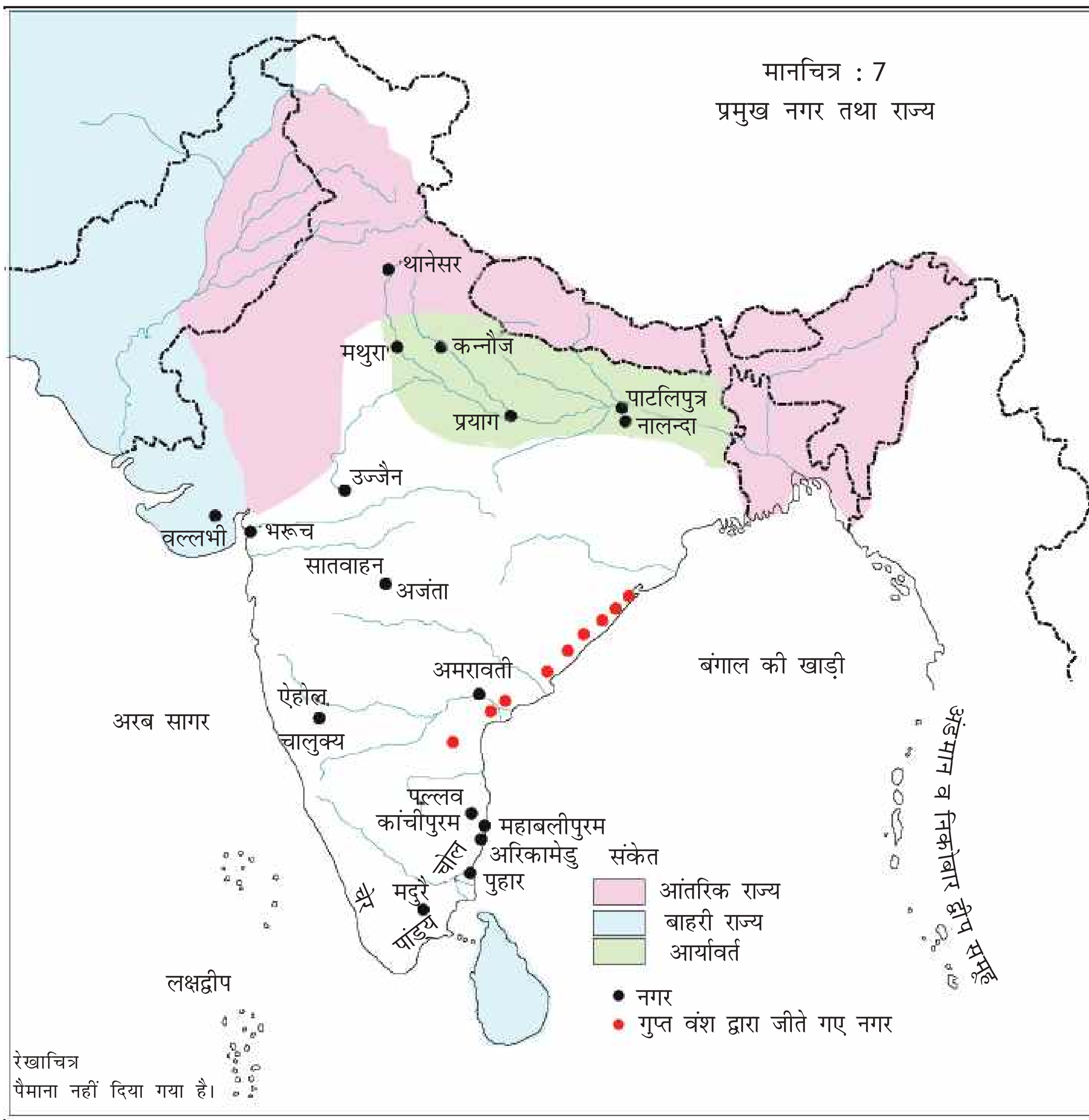

वंशावलियाँ

अधिकांश प्रशस्तियाँ शासकों के पूर्वजों के बारे में भी बताती हैं। यह प्रशस्ति भी समुद्रगुप्त के प्रपितामह, पितामह यानी कि परदादा, दादा, पिता और माता के बारे में बताती है। उनकी माँ कुमार देवी, लिच्छवि गण की थीं और पिता चन्द्रगुप्त गुप्तवंश के पहले शासक थे, जिन्होंने महाराजाधिराज जैसी बड़ी उपाधि धारण की। समुद्रगुप्त ने भी यह उपाधि धारण की। उनके दादा और परदादा का महाराजा के रूप में ही उल्लेख है। इससे यह आभास मिलता है कि धीरे-धीरे इस वंश का महत्त्व बढ़ता गया।

इन उपाधियों को महत्त्व के हिसाब से सजाओ। राजा, महाराज-अधिराज, महा-राजा।

समुद्रगुप्त के बारे में हमें उनके बाद के शासकों, जैसे उनके बेटे चन्द्रगुप्त द्वितीय की *वंशावली* (पूर्वजों की सूची) से भी जानकारी मिलती है। उनके बारे में अभिलेखों तथा सिक्कों से पता चलता है। उन्होंने पश्चिम भारत में सैन्य अभियान में अंतिम शक शासक को परास्त किया। बाद में ऐसा विश्वास किया जाने लगा कि उनका दरबार विद्वानों से भरा था। कवि कालिदास और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट उनके दरबार में थे। इनके विषय में और जानकारी अध्याय 12 में मिलेगी।

हर्षवर्धन तथा हर्षचरित

जिस तरह गुप्त वंश के शासकों के बारे में अभिलेखों तथा सिक्कों से पता चलता है, उसी तरह कुछ अन्य शासकों के बारे में उनकी जीवनी से पता चलता है। ऐसे ही एक राजा हर्षवर्धन थे, जिन्होंने करीब 1400 साल पहले शासन किया। उनके दरबारी कवि बाणभट्ट ने संस्कृत में उनकी जीवनी *हर्षचरित* लिखी है। इसमें हर्षवर्धन की वंशावली देते हुए उनके राजा बनने तक का वर्णन है। चीनी तीर्थयात्री श्वैन त्सांग, जिनके बारे में तुमने अध्याय 10 में पढ़ा है, काफी समय के लिए हर्ष के दरबार में रहे। उन्होंने वहाँ जो कुछ देखा, उसका विस्तृत विवरण दिया है।

हर्ष अपने पिता के सबसे बड़े बेटे नहीं थे पर अपने पिता और बड़े भाई की मृत्यु हो जाने पर थानेसर के राजा बने। उनके बहनोई कन्नौज (मानचित्र 7, पृष्ठ 113) के शासक थे। जब बंगाल के शासक ने उन्हें मार डाला, तो हर्ष ने कन्नौज को अपने अधीन कर लिया और बंगाल पर आक्रमण कर दिया।

मगध तथा बंगाल को जीतकर उन्हें पूर्व में जितनी सफलता मिली थी, उतनी सफलता अन्य जगहों पर नहीं मिली। जब उन्होंने नर्मदा नदी को पार कर दक्कन की ओर आगे बढ़ने की कोशिश की तब चालुक्य नरेश, पुलकेशिन द्वितीय ने उन्हें रोक दिया।

मानचित्र 8 (पृष्ठ 136) देखो और सूची बनाओ कि जब हर्षवर्धन (क) बंगाल तथा (ख) नर्मदा तक गए होंगे तो आज के किन-किन राज्यों से गुजरे होंगे?

पल्लव, चालुक्य और पुलकेशिन द्वितीय की प्रशस्तियाँ

इस काल में पल्लव और चालुक्य दक्षिण भारत के सबसे महत्वपूर्ण राजवंश थे। पल्लवों का राज्य उनकी राजधानी काँचीपुरम के आस-पास के क्षेत्रों से लेकर कावेरी नदी के डेल्टा तक फैला था, जबकि चालुक्यों का राज्य कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच स्थित था।

चालुक्यों की राजधानी ऐहोल थी। यह एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र था (मानचित्र 7, पृष्ठ 113)। धीरे-धीरे यह एक धार्मिक केंद्र भी बन गया जहाँ कई मंदिर थे। पल्लव और चालुक्य एक-दूसरे की सीमाओं का अतिक्रमण करते थे। मुख्य रूप से राजधानियों को निशाना बनाया जाता था जो समृद्ध शहर थे।

पुलकेशिन द्वितीय सबसे प्रसिद्ध चालुक्य राजा थे। उनके बारे में हमें उनके दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा रचित प्रशस्ति से पता चलता है। इसमें उनके पूर्वजों, खासतौर से पिछली चार पीढ़ियों के बारे में बताया गया है। पुलकेशिन द्वितीय को अपने चाचा से यह राज्य मिला था।

रविकीर्ति के अनुसार उन्होंने पूर्व तथा पश्चिम दोनों समुद्रतटीय इलाकों में अपने अभियान चलाए। इसके अतिरिक्त उन्होंने हर्ष को भी आगे बढ़ने से रोका। हर्ष का अर्थ 'आनंद' होता है। कवि का कहना है कि इस पराजय के बाद हर्ष अब 'हर्ष' नहीं रहा। पुलकेशिन द्वितीय ने पल्लव राजा के ऊपर भी आक्रमण किया, जिसे काँचीपुरम की दीवार के पीछे शरण लेनी पड़ी।

पर चालुक्यों की विजय अल्पकालीन थी। लड़ाई से दोनों वंश दुर्बल होते गए। पल्लवों और चालुक्यों को अन्ततः राष्ट्रकूट तथा चोलवंशों ने समाप्त कर दिया। इनके बारे में तुम कक्षा सात में पढ़ोगे।

वे कौन-से अन्य शासक थे जो तटों पर अपना नियंत्रण करना चाहते थे? (अध्याय 10 देखो)

इन राज्यों का प्रशासन कैसे चलता था?

पहले के राजाओं की तरह इन राजाओं के लिए भूमि कर सबसे महत्वपूर्ण बना रहा।

प्रशासन की प्राथमिक इकाई गाँव होते थे। लेकिन धीरे-धीरे कई नए बदलाव आए। राजाओं ने आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक या सैन्य शक्ति रखने वाले लोगों का समर्थन जुटाने के लिए कई कदम उठाए। उदाहरण के तौर पर :

- कुछ महत्वपूर्ण प्रशासकीय पद *आनुवंशिक* बन गए अर्थात् बेटे अपने पिता का पद पाते थे जैसे कि कवि हरिषेण अपने पिता की तरह महादंडनायक अर्थात् मुख्य न्याय अधिकारी थे।
- कभी-कभी, एक ही व्यक्ति कई पदों पर कार्य करता था जैसे कि हरिषेण एक महादंडनायक होने के साथ-साथ कुमारामात्य अर्थात् एक महत्वपूर्ण मंत्री तथा एक संधि-विग्रहिक अर्थात् युद्ध और शांति के विषयों का भी मंत्री था।
- संभवतः वहाँ के स्थानीय प्रशासन में प्रमुख व्यक्तियों का बहुत बोलबाला था। इनमें नगर-श्रेष्ठी यानी मुख्य बैंकर या शहर का व्यापारी, सार्थवाह यानी व्यापारियों के काफ़िले का नेता, प्रथम-कुलिक अर्थात् मुख्य शिल्पकार तथा कायस्थों यानी लिपिकों के प्रधान जैसे लोग होते थे।

इस तरह की नीतियाँ कुछ हद तक प्रभावशाली होती थीं, पर समय के साथ-साथ इनमें से कुछ व्यक्ति इतने अधिक शक्तिशाली हो जाते थे कि अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लेते थे।

सोचकर बताओ कि अफ़सरों का पद आनुवंशिक कर देने में क्या-क्या फायदे और क्या-क्या नुकसान हो सकते थे?

एक नए प्रकार की सेना

कुछ राजा अभी भी पुराने राजाओं की तरह एक सुसंगठित सेना रखते थे, जिसमें हाथी, रथ, घुड़सवार और पैदल सिपाही होते थे पर इसके साथ-साथ कुछ सेनानायक भी होते थे, जो आवश्यकता पड़ने पर राजा को सैनिक सहायता दिया करते थे। इन सेनानायकों को कोई नियमित वेतन नहीं दिया जाता था। बदले में इनमें से कुछ को भूमिदान दिया जाता था। दी गई भूमि से ये कर वसूलते थे जिससे वे सेना तथा घोड़ों की देखभाल करते थे। साथ ही वे इससे युद्ध के लिए हथियार जुटाते थे। इस तरह के व्यक्ति *सामंत* कहलाते थे। जहाँ कहीं भी शासक दुर्बल होते थे, ये सामंत स्वतंत्र होने की कोशिश करते थे।

दक्षिण के राज्यों में सभाएँ

पल्लवों के अभिलेखों में कई स्थानीय सभाओं की चर्चा है। इनमें से एक था ब्राह्मण भूस्वामियों का संगठन जिसे *सभा* कहते थे। ये सभाएँ उप-समितियों के ज़रिए सिंचाई, खेतीबाड़ी से जुड़े विभिन्न काम, सड़क निर्माण, स्थानीय मंदिरों की देखरेख आदि का काम करती थीं। जिन इलाकों के भूस्वामी ब्राह्मण नहीं थे वहाँ उर नामक ग्राम सभा के होने की बात कही गई है। *नगरम* व्यापारियों के एक संगठन का नाम था। संभवतः इन सभाओं पर धनी तथा शक्तिशाली भूस्वामियों और व्यापारियों का नियंत्रण था। इनमें से बहुत-सी स्थानीय सभाएँ शताब्दियों तक काम करती रहीं।

उस ज़माने में आम लोग

जनसाधारण के जीवन की थोड़ी बहुत झलक हमें नाटकों तथा कुछ अन्य स्रोतों से मिलती है। चलो, इसके कुछ उदाहरण देखते हैं।

कालिदास अपने नाटकों में राज-दरबार के जीवन के चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। इन नाटकों में एक रोचक बात यह है कि राजा और अधिकांश ब्राह्मणों को संस्कृत बोलते हुए दिखाया गया है जबकि अन्य लोग तथा महिलाएँ प्राकृत बोलते हुए दिखाए गए हैं। उनका सबसे प्रसिद्ध नाटक *अभिज्ञान-शाकुन्तलम्* दुष्यंत नामक एक राजा और शकुन्तला नाम की एक युवती की प्रेम कहानी है। इस नाटक में एक गरीब मछुआरे के साथ राजकर्मचारियों के दुर्व्यवहार की बात कही गई है।

एक मछुआरे को एक अंगूठी मिली

एक मछुआरे को एक कीमती अंगूठी मिली। यह अंगूठी राजा ने शकुन्तला को भेंट की थी, पर दुर्घटनावश उसे एक मछली निगल गई। जब मछुआरा इस अंगूठी को लेकर राजमहल पहुँचा तो द्वारपाल ने उस पर चोरी का आरोप लगाया और मुख्य पुलिस अधिकारी भी बहुत बुरी तरह से पेश आया। राजा उस अंगूठी को देखकर बहुत खुश हुए और उन्होंने मछुआरे को इनाम दिया। पुलिसवाला और द्वारपाल मछुआरे से इनाम का कुछ हिस्सा हड़पने के लिए उसके साथ शराबखाने चल पड़े।

आज अगर किसी गरीब आदमी को कुछ मिलता है और वह पुलिस में खबर करता है तो क्या उसके साथ इसी तरह का बर्ताव किया जाएगा?

एक प्रसिद्ध व्यक्ति का नाम बताओ, जिसने प्राकृत में उपदेश दिए और एक राजा का नाम बताओ, जिसने प्राकृत में अपने अभिलेख लिखवाए। (अध्याय 7 तथा 8 देखो।)

चीनी तीर्थयात्री फा-शिएन का ध्यान उन लोगों की दुर्गति पर भी गया, जिन्हें ऊँचे और शक्तिशाली लोग अछूत मानते थे। इन्हें शहरों के बाहर रहना पड़ता था। वे लिखते हैं – "अगर इन लोगों को शहर या बाज़ार के भीतर आना होता था तो सभी को आगाह करने के लिए ये लकड़ी के एक टुकड़े पर चोट करते रहते थे। यह आवाज़ सुनकर लोग सतर्क होकर अपने को, छू जाने से या किसी भी प्रकार के संपर्क से बचाते थे।"

एक जगह बाणभट्ट द्वारा अभियान पर निकली राजा की सेना का बड़ा सजीव चित्रण किया गया है।

राजा की सेना

राजा बड़ी मात्रा में साज़ो-सामान लेकर यात्रा करते थे। इनमें हथियारों के अतिरिक्त, रोज़मर्रा के उपयोग में आने वाली चीज़ें, जैसे बर्तन, असबाब (जिसमें सोने के पायदान भी शामिल थे), खाने-पीने का सामान (बकरी, हिरण, खरगोश, सब्ज़ियाँ, मसाले) आदि, विभिन्न प्रकार की चीज़ें शामिल होती थीं। ये सारी चीज़ें ठेलेगाड़ियों पर या ऊँटों तथा हाथियों जैसे सामान ढोने वाले जानवरों की पीठ पर लादकर ले जायी जाती थीं। इस विशाल सेना के साथ-साथ संगीतकार नगाड़े, बिगुल तथा तुरही बजाते हुए चलते रहते थे।

रास्ते में पड़ने वाले गाँव वालों को उनका सत्कार करना पड़ता था। वे दही, गुड़ तथा फूलों का उपहार लाते थे तथा जानवरों को चारा भी देते थे। वे राजा से भी मिलना चाहते थे, ताकि अपनी शिकायत या कोई अनुरोध उनके सामने रख सकें।

पर ये सेनाएँ अपने पीछे विनाश और विध्वंस की निशानी छोड़ जाती थीं। अक्सर गाँव वालों की झोपड़ियाँ हाथी कुचल डालते थे और व्यापारियों के काफ़िलों में जुते बैल, इस हलचल भरे माहौल से डरकर भाग खड़े होते थे। बाणभट्ट लिखते हैं – "पूरी दुनिया धूल के गर्त में डूब जाती थी।"

सेना के साथ ले जाई जाने वाली चीज़ों की सूची बनाओ।

ग्रामवासी राजा के लिए क्या-क्या लेकर आते थे?

अन्यत्र

मानचित्र 6 (पृष्ठ 84-85) में अरब ढूँढ़ो। मरुभूमि होते हुए भी सदियों से अरब, यातायात का एक बड़ा केंद्र था। दरअसल, अरब व्यापारी तथा नाविकों ने भारत और यूरोप (देखो पृष्ठ सं. 100) के बीच समुद्री व्यापार बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अरब में रहने वाले अन्य लोगों में बेदुइन थे, जो घुमक्कड़ कबीले होते थे। ये मुख्य रूप से ऊँटों पर आश्रित होते थे, क्योंकि यह एक ऐसा मज़बूत जानवर है, जो मरुभूमि में भी स्वस्थ रह सकता है।

लगभग 1400 साल पहले पैगम्बर मुहम्मद ने अरब में इस्लाम नामक एक नए धर्म की शुरुआत की। ईसाई धर्म की तरह इस्लाम ने भी अल्लाह को सर्वोपरि माना है, उनके बाद सभी को समान माना गया है। यहाँ इस्लाम धर्म के पवित्र ग्रंथ *कुरान* का एक अंश दिया गया है :

"मुसलमान स्त्रियों और पुरुषों के लिए, विश्वास रखने वाले स्त्रियों और पुरुषों के लिए, भक्त स्त्रियों और पुरुषों के लिए, सच्चे स्त्रियों और पुरुषों के लिए, धैर्यवान और स्थिर मन के स्त्रियों और पुरुषों के लिए, दान देने वाले स्त्रियों और पुरुषों के लिए, उपवास रखने वाले स्त्रियों और पुरुषों के लिए, अपनी पवित्रता बनाए रखने वाले स्त्रियों और पुरुषों के लिए, अल्लाह को हमेशा याद करने वाले स्त्रियों और पुरुषों के लिए- अल्लाह ने इन सब के लिए ही क्षमा और पुरस्कार रखा है।" अगले सौ सालों के दौरान इस्लाम उत्तरी अफ़्रीका, स्पेन, ईरान और भारत में फैल गया। अरब नाविक, जो इस उपमहाद्वीप की तटीय बस्तियों से पहले से ही परिचित थे, अब अपने साथ इस नए धर्म को भी ले आए। अरब के सिपाहियों ने करीब 1300 साल पहले सिंध (आज के पाकिस्तान में) को जीत लिया था।

मानचित्र 6 में उन रास्तों को ढूँढ़ो जिनसे नाविक तथा सिपाही इस उपमहाद्वीप में आए होंगे।

उपयोगी शब्द

प्रशस्ति

आर्यावर्त्त

दक्षिणापथ

वंशावली

आनुवंशिक पदाधिकारी

सामंत

सभा

नगरम

कल्पना करो

हर्षवर्धन की सेना अगले हफ़्ते तुम्हारे गाँव आने वाली है। तुम्हारे माता-पिता इसके लिए तैयारी कर रहे हैं। वर्णन करो कि वे क्या-क्या बोल रहे हैं और क्या कर रहे हैं।

आओ याद करें

1. सही या गलत बताओः

   (क) हरिषेण ने गौतमी पुत्र श्री सातकर्णी की प्रशंसा में प्रशस्ति लिखी।

   (ख) आर्यावर्त्त के शासक समुद्रगुप्त के लिए भेंट लाते थे।

(ग) दक्षिणापथ में बारह शासक थे।

(घ) गुप्त शासकों के नियंत्रण में दो महत्वपूर्ण केन्द्र तक्षशिला और मदुरै थे।

(ङ) ऐहोल पल्लवों की राजधानी थी।

(च) दक्षिण भारत में स्थानीय सभाएँ सदियों तक काम करती रहीं।

2. ऐसे तीन लेखकों के नाम बताओ, जिन्होंने हर्षवर्धन के बारे में लिखा।

3. इस युग में सैन्य संगठन में क्या बदलाव आए?

4. इस काल की प्रशासनिक व्यवस्था में तुम्हें क्या-क्या नई चीज़ें दिखती हैं?

आओ चर्चा करें

5. तुम्हें क्या लगता है कि समुद्रगुप्त की भूमिका अदा करने के लिए अरविन्द को क्या-क्या करना पड़ेगा?

6. क्या प्रशस्तियों को पढ़कर आम लोग समझ लेते होंगे? अपने उत्तर के कारण बताओ।

आओ करके देखें

7. अगर तुम्हें अपनी वंशावली बनानी हो, तो तुम उसमें किन लोगों को शामिल करोगे? कितनी पीढ़ियों को तुम इसमें शामिल करना चाहोगे? एक चार्ट बनाओ और उसे भरो।

8. आज युद्ध का असर जनसाधारण पर किस तरह पड़ता है?

कुछ महत्वपूर्ण
तिथियाँ

- गुप्त वंश की शुरुआत (1700 साल पहले)
- हर्षवर्धन का शासन (1400 साल पहले)

This page not to be processed

अध्याय 12

इमारतें, चित्र तथा किताबें

मरुतसामि और लौह स्तंभ

मरुतसामि आज बहुत खुश था। पहिएदार कुर्सी में बिठाकर उसका भाई उसे कुतुबमीनार दिखाता हुआ प्रसिद्ध लौह स्तंभ के सामने ले आया। धूल भरे, पथरीले रास्तों से रैम्प के सहारे यहाँ तक आना काफी मुश्किल था। अपने इस अनुभव को मरुतसामि कभी नहीं भूल पाएगा।

लौह-स्तंभ

लौह स्तंभ

महरौली (दिल्ली) में कुतुबमीनार के परिसर में खड़ा यह लौह स्तंभ भारतीय शिल्पकारों की कुशलता का एक अद्‌भुत उदाहरण है। इसकी ऊँचाई 7.2 मीटर और वज़न 3 टन से भी ज़्यादा है। इसका निर्माण लगभग 1500 साल पहले हुआ। इसके बनने के समय की जानकारी हमें इस पर खुदे अभिलेख से मिलती है। इसमें 'चन्द्र' नाम के एक शासक का ज़िक्र है जो संभवत: गुप्त वंश (अध्याय 11) के थे। आश्चर्य की बात यह है कि इतने वर्षों के बाद भी इसमें जंग नहीं लगा है।

ईंटों और पत्थरों की इमारतें

हमारे शिल्पकारों की कुशलता के नमूने स्तूपों जैसी कुछ इमारतों में देखने को मिलते हैं। *स्तूप* का शाब्दिक अर्थ *टीला* होता है हालांकि स्तूप विभिन्न आकार के थे – कभी गोल या लंबे तो कभी बड़े या छोटे। उन सब में एक समानता है। प्राय: सभी स्तूपों के भीतर एक छोटा-सा डिब्बा रखा रहता है। इन डिब्बों में बुद्ध या उनके अनुयायियों के शरीर के अवशेष (जैसे दाँत, हड्डी या राख) या उनके द्वारा प्रयुक्त कोई चीज़ या कोई कीमती पत्थर अथवा सिक्के रखे रहते हैं।

इसे धातु-मंजूषा कहते हैं। प्रारंभिक स्तूप, धातु-मंजूषा के ऊपर रखा मिट्टी का टीला होता था। बाद में टीले को ईंटों से ढक दिया गया और बाद के काल में उस गुम्बदनुमा ढाँचे को तराशे हुए पत्थरों से ढक दिया गया।

प्राय: स्तूपों के चारों ओर परिक्रमा करने के लिए एक वृत्ताकार पथ बना होता था, जिसे *प्रदक्षिणा पथ* कहते हैं। इस रास्ते को रेलिंग से घेर दिया जाता था जिसे वेदिका कहते हैं। वेदिका में प्रवेशद्वार बने होते थे। रेलिंग तथा तोरण प्राय: मूर्तिकला की सुंदर कलाकृतियों से सजे होते थे।

मानचित्र 7 (पृष्ठ 113) में अमरावती ढूँढ़ो। यहाँ कभी एक भव्य स्तूप हुआ करता था। लगभग 2000 साल पहले इस स्तूप को सजाने के लिए शिलाओं पर चित्र उकेरे गए।

कई बार पहाड़ियों को काट कर बनावटी गुफाएँ बनाई जाती थीं। इस तरह की कई गुफाओं को मूर्त्तियों तथा चित्रों द्वारा सजाया जाता था।

इस काल में कुछ आरंभिक हिन्दू मंदिरों का भी निर्माण किया गया। इन मंदिरों में विष्णु, शिव तथा दुर्गा जैसे देवी-देवताओं की पूजा होती थी। मंदिरों का सबसे महत्वपूर्ण भाग *गर्भगृह* होता था, जहाँ मुख्य देवी या देवता की मूर्ति को रखा जाता था। इसी स्थान पर पुरोहित धार्मिक अनुष्ठान करते थे और भक्त पूजा करते थे। अक्सर गर्भगृह को एक पवित्र स्थान के रूप में दिखाने के लिए, भितरगाँव जैसे मंदिरों में उसके ऊपर काफी ऊँचाई तक निर्माण किया जाता था, जिसे शिखर कहते थे। शिखर निर्माण के कठिन कार्य के लिए सावधानी

ऊपर: साँची का महान स्तूप (मध्य प्रदेश)।
इस तरह के स्तूपों का निर्माण कई सौ सालों तक चलता रहा। इस स्तूप में ईंटों का प्रयोग संभवत: अशोक (अध्याय 8) के ज़माने का है, जबकि रेलिंग और प्रवेशद्वार बाद के शासकों के काल में जोड़े गए।
बाएँ: अमरावती की एक शिल्पकृति।
इस चित्र को देखकर इसका वर्णन करो।

बाएँ ऊपर: उत्तर प्रदेश के भितरगाँव का एक आरंभिक मंदिर। यह लगभग 1500 साल पहले पकी ईंट और पत्थरों से बनाया गया था।

दाएँ ऊपर: महाबलिपुरम के एकाश्मिक मंदिर।

इनमें से प्रत्येक मंदिर एक ही विशाल पहाड़ी को तराश कर बनाया गया है। इसीलिए इन्हें एकाश्म *(monolith)* कहा गया है। ईंटों से बनाए जाने वाले मंदिरों से यह बिल्कुल भिन्न होते थे। ईंट से बनी इमारतों में नीचे से ईंटों की एक-एक तह जोड़ते हुए उसे ऊपर की ओर ले जाते हैं, जबकि चट्टान तराश कर बनाए जाने वाले मंदिरों को पत्थर काटने वाले ऊपर से नीचे के क्रम में बनाते हैं।

इन मंदिरों को बनाते समय पत्थर काटने वालों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता होगा, इसकी सूची बनाओ।

से योजना बनानी पड़ती थी। अधिकतर मंदिरों में *मण्डप* नाम की एक जगह होती थी। यह एक सभागार होता था, जहाँ लोग इकट्ठा होते थे।

मानचित्र 7 (पृष्ठ 113) में महाबलिपुरम और ऐहोल को ढूँढ़ो। इन शहरों में पत्थरों से बने कुछ उत्कृष्ट मंदिर हैं। उनमें से कुछ यहाँ दिखाए गए हैं।

दाएँ: ऐहोल का दुर्गा मंदिर। यह लगभग 1400 साल पहले बनाया गया था।

स्तूप तथा मंदिर किस तरह बनाए जाते थे?

स्तूपों तथा मंदिरों को बनाने की प्रक्रिया में कई अवस्थाएँ आती थीं। इसके लिए काफी धन खर्च होता था। इसलिए आमतौर पर राजा या रानी ही इन्हें बनवाने का निश्चय करते थे। पहला काम, अच्छे किस्म के पत्थर ढूँढ़कर शिलाखंडों को खोदकर निकालना होता था। फिर मंदिर या स्तूप के लिए सोच-विचार कर तय किए गए स्थान पर शिलाखंडों को पहुँचाना होता था। यहाँ पत्थरों को काट-छाँटकर तराशने के बाद खंभों, दीवारों की चौखटों, फ़र्शों तथा छतों का आकार दिया जाता था। इन सबके तैयार हो जाने पर सही जगहों पर उन्हें लगाना काफी मुश्किल का काम था।

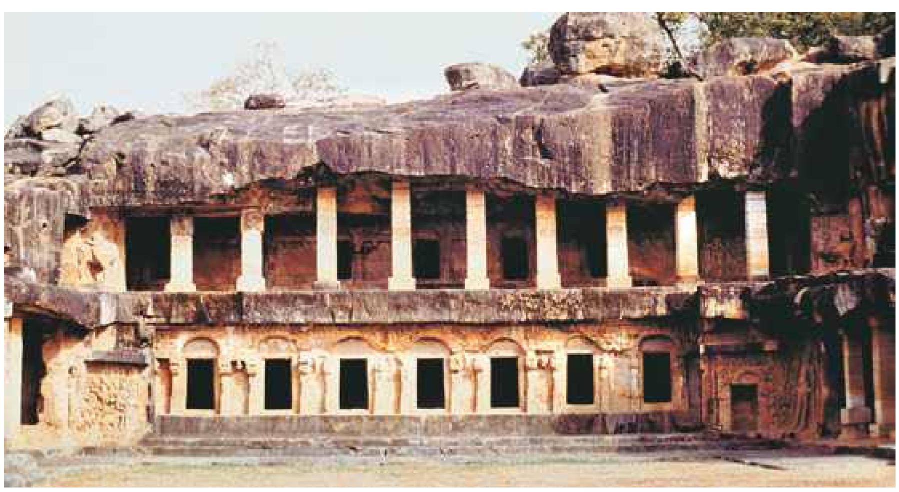

बाएँ: उड़ीसा का जैन मठ। एक पहाड़ी को खोद कर इस दो मंजिली इमारत को बनाया गया है। कमरों के प्रवेशद्वारों को ध्यान से देखो। इनमें जैन भिक्षु रहते और ध्यान करते थे। *पृष्ठ 15 पर दिए चित्र (अध्याय 2) और यहाँ दिखाई गई गुफाओं में क्या अंतर है?*

नीचे: राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली से एक मूर्ति का चित्र। *क्या तुम यहाँ देख पा रहे हो कि किस प्रकार गुफाओं की खुदाई की गई होगी?*

इस तरह के शानदार ढाँचों का निर्माण करने वाले शिल्पकारों को सारा खर्च संभवत: राजा-रानी ही देते थे। इसके अतिरिक्त इन स्तूपों या मंदिरों में आने वाले भक्त जो उपहार अपने साथ लाते थे उनसे इमारत की सजावट की जाती थी। जैसे हाथी दांत का काम करने वाले श्रमिकों के संघ ने साँची के एक अलंकृत प्रवेशद्वार (तोरण) को बनाने का खर्च दिया था।

इनकी सजावट के लिए पैसे देने वालों में व्यापारी, कृषक, माला बनाने वाले, इत्र बनाने वाले, लोहार-सुनार,

तथा ऐसे कई स्त्री–पुरुष शामिल थे जिनके नाम खंभों, रेलिंगों तथा दीवारों पर खुदे हैं, इसलिए जब तुम इन स्थानों को देखने जाओ तो याद रखना कि कितने सारे लोगों ने इन्हें बनाने और सजाने में अपना योगदान दिया था।

अध्याय 9 के पृष्ठ 91 पर दिए चित्र की तरह तुम भी मंदिरों तथा स्तूपों के निर्माण के दौरान आने वाले विभिन्न चरणों का चित्र बनाओ।

चित्रकला

मानचित्र 7 में अजंता को ढूँढ़ो। यह वह जगह है, जहाँ के पहाड़ों में सैकड़ों सालों के दौरान कई गुफाएँ खोदी गईं। इनमें से ज़्यादातर बौद्ध भिक्षुओं के लिए बनाए गए विहार थे। इनमें से कुछ को चित्रों द्वारा सजाया गया था। यहाँ इनके कुछ उदाहरण दिए गए हैं। गुफाओं के अंदर अंधेरा होने की वजह से, अधिकांश चित्र मशालों की रोशनी में बनाए गए थे। इन चित्रों के रंग 1500 साल बाद भी चमकदार हैं। ये रंग पौधों तथा खनिजों से बनाए गए थे। इन महान कृतियों को बनाने वाले कलाकार अज्ञात हैं।

अजंता के चित्र
तुम्हें इनमें से प्रत्येक चित्र में जो दिखता है उसका वर्णन करो।

पुस्तकों की दुनिया

इस युग में कई प्रसिद्ध *महाकाव्यों* की रचना की गई। इन उत्कृष्ट रचनाओं में स्त्री–पुरुषों की वीरगाथाएँ तथा देवताओं से जुड़ी कथाएँ हैं।

करीब 1800 साल पहले एक प्रसिद्ध तमिल महाकाव्य *सिलप्पदिकारम* की रचना इलांगो नामक कवि ने की। इसमें कोवलन् नाम के एक व्यापारी की कहानी है। वह पुहार में रहता था। अपनी पत्नी कन्नगी की उपेक्षा कर वह एक नर्तकी माधवी से प्रेम करने लगा। बाद में, वह और कन्नगी पुहार छोड़कर मदुरै चले गए। वहाँ पांड्य राजा के दरबारी जौहरी ने कोवलन् पर चोरी का झूठा आरोप लगाया जिस पर राजा ने उसे प्राणदंड दे दिया। कन्नगी जो अभी भी उससे प्रेम करती थी, इस अन्याय के कारण दु:ख और रोष से भर गई। उसने मदुरै शहर का विनाश कर डाला।

सिलप्पदिकारम से लिया गया एक वर्णन

यहाँ कवि ने कन्नगी के दु:ख का इस तरह वर्णन किया है :

"ओ मेरा दु:ख तो देखो, तुम मुझे साँत्वना तक नहीं दे सकते। क्या यह सही है कि विशुद्ध सोने से भी सुंदर तुम्हारा शरीर बिना धुला, धूल से सना यूँ ही पड़ा है? यह कहाँ का न्याय है कि गोधूलि की इस स्वर्णिम आभा में फूलमाला से ढके सुन्दर वक्ष:स्थल वाले तुम ज़मीन पर गिरे पड़े हो। मैं अकेली, असहाय और हताश होकर खड़ी हूँ। क्या ईश्वर नहीं है? क्या इस देश में ईश्वर नहीं हैं? पर क्या उस स्थान पर ईश्वर रह सकते हैं जहाँ के राजा की तलवार निर्दोष नवागन्तुक के प्राण ले लेती है? क्या ईश्वर नहीं है? नहीं है?"

एक और तमिल महाकाव्य, *मणिमेखलई* को करीब 1400 साल पहले सत्तनार द्वारा लिखा गया। इसमें कोवलन् तथा माधवी की बेटी की कहानी है। ये रचनाएँ कई सदियों पहले ही खो गई थीं। उनकी पाण्डुलिपियाँ दोबारा लगभग एक सौ साल पहले मिलीं।

अन्य लेखक, जैसे कालिदास (जिनके बारे में तुमने अध्याय 11 में पढ़ा है) संस्कृत में लिखते थे।

मेघदूत का एक श्लोक

यहाँ उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना *मेघदूत* से एक अंश दिया गया है। यहाँ एक विरही प्रेमी बरसात के बादल को अपना संदेशवाहक बनाने की कल्पना करता है।

देखो इसमें किस तरह कवि ने बादलों को उत्तर की ओर ले जाती ठंडी हवा का वर्णन किया है :

"तुम्हारे बौछारों से मुलायम हो उठी मिट्टी की भीनी खुशबू से भरे,
हाथियों की सांस में बसी
जंगली गूलर को पकाने वाली,
शीतल बयार तुम्हारे साथ धीरे-धीरे बहेगी।"

क्या तुम्हें लगता है कि कालिदास को प्रकृतिप्रेमी कहा जा सकता है?

पुरानी कहानियों का संकलन तथा संरक्षण

हिंदू धर्म से जुड़ी कई कहानियाँ जो बहुत पहले से प्रचलित थीं, इसी काल में लिखी गईं। इनमें *पुराण* भी शामिल हैं। पुराण का शब्दिक अर्थ है प्राचीन या पुराण। पुराणों में विष्णु, शिव, दुर्गा या पार्वती जैसे देवी-देवताओं से जुड़ी कहानियाँ हैं। इनमें इन देवी-देवताओं की पूजा की विधियाँ दी गई हैं। इसके अतिरिक्त इनमें संसार की सृष्टि तथा राजाओं के बारे में भी कहानियाँ हैं।

अधिकतर पुराण *सरल संस्कृत श्लोक* में लिखे गए हैं, जिससे सब उन्हें सुन और समझ सकें। स्त्रियाँ तथा शूद्र जिन्हें वेद पढ़ने की अनुमति नहीं थी वे भी इसे सुन सकते थे। पुराणों का पाठ पुजारी मंदिरों में किया करते थे जिसे लोग सुनने आते थे।

दो संस्कृत महाकाव्य *महाभारत* और *रामायण* लंबे अर्से से लोकप्रिय रहे हैं। तुममें से भी कुछ बच्चे इन कहानियों से परिचित होंगे। महाभारत कौरवों

और पांडवों के बीच युद्ध की कहानी है। इस युद्ध का उद्देश्य पुरु-वंश की राजधानी हस्तिनापुर की गद्दी प्राप्त करना था। यह कहानी तो बहुत ही पुरानी है, पर आज इसे हम जिस रूप में जानते हैं, वह करीब 1500 साल पहले लिखी गई। माना जाता है कि पुराणों और महाभारत दोनों को ही व्यास नाम के ऋषि ने संकलित किया था। महाभारत में ही *भगवद् गीता* भी है, जिसके बारे में तुमने अध्याय 10 में पढ़ा था।

रामायण की कथा कोसल के राजकुमार राम के बारे में है। उनके पिता ने उन्हें वनवास दे दिया था। वन में उनकी पत्नी सीता का लंका के राजा रावण ने अपहरण कर लिया था। सीता को वापस पाने के लिए राम को लड़ाई लड़नी पड़ी। वे विजयी होकर कोसल की राजधानी अयोध्या लौटे। महाभारत की तरह ही रामायण भी एक प्राचीन कहानी है, जिसे बाद में लिखित रूप दिया गया। संस्कृत रामायण के लेखक वाल्मीकि माने जाते हैं।

इस उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में महाभारत और रामायण के भिन्न-भिन्न रूपांतर लोकप्रिय हैं। इनके आधार पर नाटक, गीत और नृत्य परंपराएँ भी उभरीं। पता करो तुम्हारे राज्य में कौन-सा रूपांतर प्रचलित है।

आम लोगों द्वारा कही जाने वाली कहानियाँ

आम लोग भी कहानियाँ कहते थे, कविताओं और गीतों की रचना करते थे, गाने गाते थे, नाचते थे और नाटकों को खेलते थे। इनमें से कुछ तो इस समय के आस-पास जातक और पंचतंत्र की कहानियों के रूप में लिखकर सुरक्षित कर लिए गए। जातक कथाएँ तो अक्सर स्तूपों की रेलिंगों तथा अजंता के चित्रों में दर्शायी जाती थीं।

इनमें से एक कहानी अगले पृष्ठ पर दी गई है :

बंदर राजा की कहानी

एक समय बंदरों का एक महान राजा हुआ। वह हिमालय पर गंगा के किनारे अपने 80,000 अनुयायियों के साथ रहता था। इन सारे बंदरों को एक खास आम के पेड़ के फल बहुत प्रिय थे। ये आम बड़े मीठे होते थे। इतने स्वादिष्ट आम धरातल पर नहीं उगते थे।

एक दिन एक पका हुआ आम गंगा नदी में गिर कर बहते-बहते वाराणसी पहुँच गया। उस वक्त नदी में वहाँ का राजा नहा रहा था। उसे वह आम मिला, उसे चखकर वह हैरान रह गया। उसने अपने राज्य के जंगलों की देखभाल करने वालों से पूछा कि क्या वे इस आम के पेड़ को ढूँढ़ सकते हैं या नहीं। वे राजा को हिमालय की पहाड़ी पर ले गए।

वहाँ पहुँचकर राजा तथा उसके दरबारियों ने खूब आम खाए। रात में राजा ने देखा कि बंदर भी पके आमों का मज़ा ले रहे हैं। राजा को यह बात बुरी लगी और उसने उन्हें मार डालने का फ़ैसला किया। बंदरों के राजा ने अपनी प्रजा को बचाने की एक योजना बनाई। उसने आम के पेड़ की टहनियों को तोड़कर, उन्हें आपस में बांधकर, नदी पर एक पुल बनाया। इसके एक छोर को वह तब तक पकड़े रहा जब तक उसकी सारी प्रजा ने नदी को पार न कर लिया। पर इस प्रयास से वह इतना थक गया कि मरणासन्न होकर गिर गड़ा।

राजा ने जब यह सब देखा तो उसने बंदर राजा को बचाने की काफी कोशिश की। पर वह सफल न हुआ। बंदर राजा की मृत्यु पर उसे शोक हुआ और राजा ने उसे पूरा सम्मान दिया।

मध्यभारत में भरहुत के एक स्तूप से मिले एक पत्थर पर उकेरे गए चित्र में इसे दिखाया गया है।

क्या तुम बता सकते हो कि इसमें कहानी का कौन-सा हिस्सा दिखाया गया है? यह हिस्सा क्यों चुना गया होगा?

विज्ञान की पुस्तकें

इसी समय गणितज्ञ तथा खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने संस्कृत में *आर्यभट्टीयम* नामक पुस्तक लिखी। इसमें उन्होंने लिखा कि दिन और रात पृथ्वी के अपनी धुरी पर चक्कर काटने की वजह से होते हैं, जबकि लगता है कि रोज़ सूर्य निकलता है और डूबता है। उन्होंने ग्रहण के बारे में भी एक वैज्ञानिक तर्क दिया। उन्होंने वृत्त की परिधि को मापने की भी विधि ढूँढ़ निकाली, जो लगभग उतनी ही सही है, जितनी कि आज प्रयुक्त होने वाली विधि।

शून्य

अंकों का प्रयोग पहले से होता रहा था, पर अब भारत के गणितज्ञों ने शून्य के लिए एक नए चिह्न का आविष्कार किया। गिनती की यह पद्धति अरबों द्वारा अपनाई गई और तब यूरोप में भी फैल गई। आज भी यह पूरी दुनिया में प्रयोग की जाती है।

रोम के निवासी शून्य का प्रयोग किए बगैर गिनती करते थे। उसके बारे में और भी जानकारी हासिल करने की कोशिश करो।

अन्यत्र

कागज़ आज हमारे रोज़मर्रा की ज़िन्दगी का हिस्सा बन गया है। जो किताबें हम पढ़ते हैं वे कागज़ पर छपी होती हैं, उसी तरह लिखने के लिए भी हम कागज़ का ही उपयोग करते हैं। कागज़ का आविष्कार करीब 1900 साल पहले काई लून नाम के व्यक्ति ने चीन में किया। उसने पौधों के रेशों, कपड़ों, रस्सियों और पेड़ की छालों को पीट-पीट कर लुगदी बनाकर उसे पानी में भिगो दिया। फिर उस लुगदी को दबाकर उसका पानी निचोड़ा और तब सुखा कर कागज़ बनाया। आज भी हाथ से कागज़ बनाने के लिए इसी विधि को अपनाया जाता है।

कागज़ बनाने की तकनीक को सदियों तक गुप्त रखा गया। करीब 1400 साल पहले यह कोरिया तक पहुँची।

इसके तुरंत बाद ही यह जापान तक फैल गई। करीब 1800 साल पहले यह बगदाद में पहुँची। फिर बगदाद से यह यूरोप, अफ़्रीका और एशिया के अन्य भागों में फैली। इस उपमहाद्वीप में भी कागज़ की जानकारी बगदाद से ही आई।

प्राचीन भारत की पाण्डुलिपियाँ किस चीज़ पर तैयार की जाती थीं? (संकेत : अध्याय 1)

उपयोगी शब्द

स्तूप
मंदिर
चित्रकला
महाकाव्य
कहानी
पुराण
गणित
विज्ञान

कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

- स्तूप निर्माण की शुरुआत (2300 साल पहले)
- अमरावती (2000 साल पहले)
- कालिदास (1600 साल पहले)
- लौह स्तंभ, भितरगाँव का मंदिर, अजंता की चित्रकारी, आर्यभट्ट (1500 साल पहले)
- दुर्गा मंदिर (1400 साल पहले)

कल्पना करो

तुम एक मंदिर के मण्डप में बैठे हो। अपने चारों तरफ़ के दृश्य का वर्णन करो।

आओ याद करें

1. निम्नलिखित का सुमेल करो।

स्तूप	देवी-देवता की मूर्ति स्थापित करने की जगह
शिखर	टीला
मण्डप	स्तूप के चारों तरफ़ वृत्ताकार पथ
गर्भगृह	मंदिर में लोगों के इकट्ठा होने की जगह
प्रदक्षिणापथ	गर्भगृह के ऊपर लंबाई में निर्माण

2. खाली जगहों को भरो :

(क) ____________ एक बड़े गणितज्ञ थे।

(ख) ____________ में देवी-देवताओं की कहानियाँ मिलती हैं।

(ग) ____________ को संस्कृत रामायण का लेखक माना जाता है।

(घ) ____________ और ____________ दो तमिल महाकाव्य हैं।

आओ चर्चा करें

3. धातुओं के प्रयोग पर जिन अध्यायों में चर्चा हुई है, उनकी सूची बनाओ। धातु से बनी किन-किन चीज़ों के बारे में चर्चा हुई है या उन्हें दिखाया गया है?

4. पृष्ठ 130 पर लिखी कहानी को पढ़ो। जिन राजाओं के बारे में तुमने अध्याय 6 और 11 में पढ़ा है उनसे यह बंदर राजा कैसे भिन्न या समान था?

5. और भी जानकारी इकट्ठी कर किसी महाकाव्य से एक कहानी सुनाओ।

आओ करके देखें

6. इमारतों तथा स्मारकों को अन्य प्रकार से सक्षम व्यक्तियों (विकलांग) के लिए और अधिक प्रवेश योग्य कैसे बनाया जाए? इसके लिए सुझावों की एक सूची बनाओ।

7. कागज़ के अधिक से अधिक उपयोगों की एक सूची बनाओ।

8. इस अध्याय में बताए गए स्थानों में से तुम्हें किसी एक को देखने का मौका मिले तो किसे चुनोगे और क्यों?

तिथियों पर एक नज़र

इस पूरी पुस्तक में हमने वर्ष 2000 को शुरुआती बिंदु के रूप में रखकर घटनाओं/प्रक्रियाओं के होने की अनुमानित तिथियों की जानकारी दी है। पर अन्य पुस्तकें, जो तुम पढ़ते होगे, उनमें तिथियाँ अलग तरह से लिखी होंगीं। इस पुस्तक में इन तिथियों के पहले करीब या लगभग लिखा गया है।

- जैसे कि पुरापाषाण युग (अध्याय 2) के लिए तिथियाँ लाखों वर्ष पहले के रूप में लिखी गई हैं।
- मेहरगढ़ (अध्याय 3) में कृषि तथा पशुपालन की शुरुआत की तिथि लगभग 6000 ई॰पू॰ दी गई है।
- हड़प्पा के नगरों का विकास लगभग 2700 से 1900 ई॰पू॰ के बीच
- ऋग्वेद की रचना का काल लगभग 1500 से 1000 ई॰पू॰ के बीच
- महाजनपदों तथा गंगा के मैदानी इलाकों में नगरों का विकास तथा उपनिषद्, जैनधर्म तथा बौद्धधर्म से जुड़े विचारों का उदय, लगभग 500 ई॰पू॰
- पश्चिमोत्तर में सिकन्दर का आक्रमण, लगभग 327-325 ई॰पू॰
- चन्द्रगुप्त मौर्य का राजा बनना लगभग 321 ई॰पू॰
- अशोक का शासन काल लगभग 272/268 ई॰पू॰ से 231 ई॰पू॰ के बीच
- संगम साहित्य की रचना लगभग 300 ई॰पू॰–300 ई॰
- कनिष्क का शासन लगभग 78-100 ई॰ *(?)*
- गुप्त साम्राज्य की स्थापना लगभग 320 ई॰
- वल्लभी की परिषद् में जैन साहित्य का संकलन, लगभग 512/521 ई॰
- हर्षवर्धन का शासन 606-647 ई॰
- चीनी यात्री श्वैन त्सांग का भारत आगमन 630-643 ई॰
- पुलकेशिन *II* का शासन, 609-642 ई॰

कुछ घटनाओं के लिए, जैसे कि अशोक के शासन की शुरुआत की तिथि के रूप में तुम्हें एक से अधिक तिथियाँ देखने को मिल सकती हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि इतिहासकार इस बात पर एकमत नहीं हो पाए हैं कि सही तिथि क्या है। प्रश्नवाचक चिन्ह के साथ दी गई तिथियाँ इस बात का संकेत करती हैं कि यह तिथियाँ निश्चित नहीं हैं।

अगले साल

अगले साल हमारे अतीत के बारे में तुम और अधिक पढ़ोगे। इसमें तुम अगले हज़ार साल के इतिहास के बारे में पढ़ोगे, जिसकी शुरुआत आठवीं सदी से होगी। इसमें तुम :

- देखोगे कि पाण्डुलिपियों, अभिलेखों तथा पुरातात्त्विक वस्तुओं, मुख्यत: इमारतों के अवशेषों के अलावा, इतिहास जानने के और भी स्रोत होते हैं।
- नए राजाओं तथा राज्यों के बारे में पढ़ोगे, जिसमें मुगल साम्राज्य शामिल होगा।
- स्थापत्य-कला के बारे में और भी जानोगे, जिसमें मंदिरों, मस्जिदों, बगीचों, क़िलों तथा अन्य इमारतों के बारे में जानकारी होगी।
- शहरों के बारे में पढ़ोगे, जिसमें शिल्पकारों, व्यापारियों तथा नगरीय-संस्कृति के विषय में जानकारी होगी।
- आखेटक-संग्राहकों, पशुपालकों तथा कृषकों के बारे में पढ़ोगे।
- तुम यह भी पढ़ोगे कि किस प्रकार धार्मिक-आस्थाओं तथा उनके व्यवहारिक स्वरूपों में परिवर्तन आए।
- संगीत, कविता तथा अन्य साहित्यिक रचनाओं के लिए किस तरह नई भाषाओं का प्रयोग हुआ।

ये सब पढ़ने के दौरान तुम पाओगे कि इतने सारे नए परिवर्तनों के बावजूद अतीत के साथ सम्पर्क का सूत्र निरंतर बना रहा। ध्यान दो क्या बदला और क्या अपने पुराने स्वरूप में रह गया।

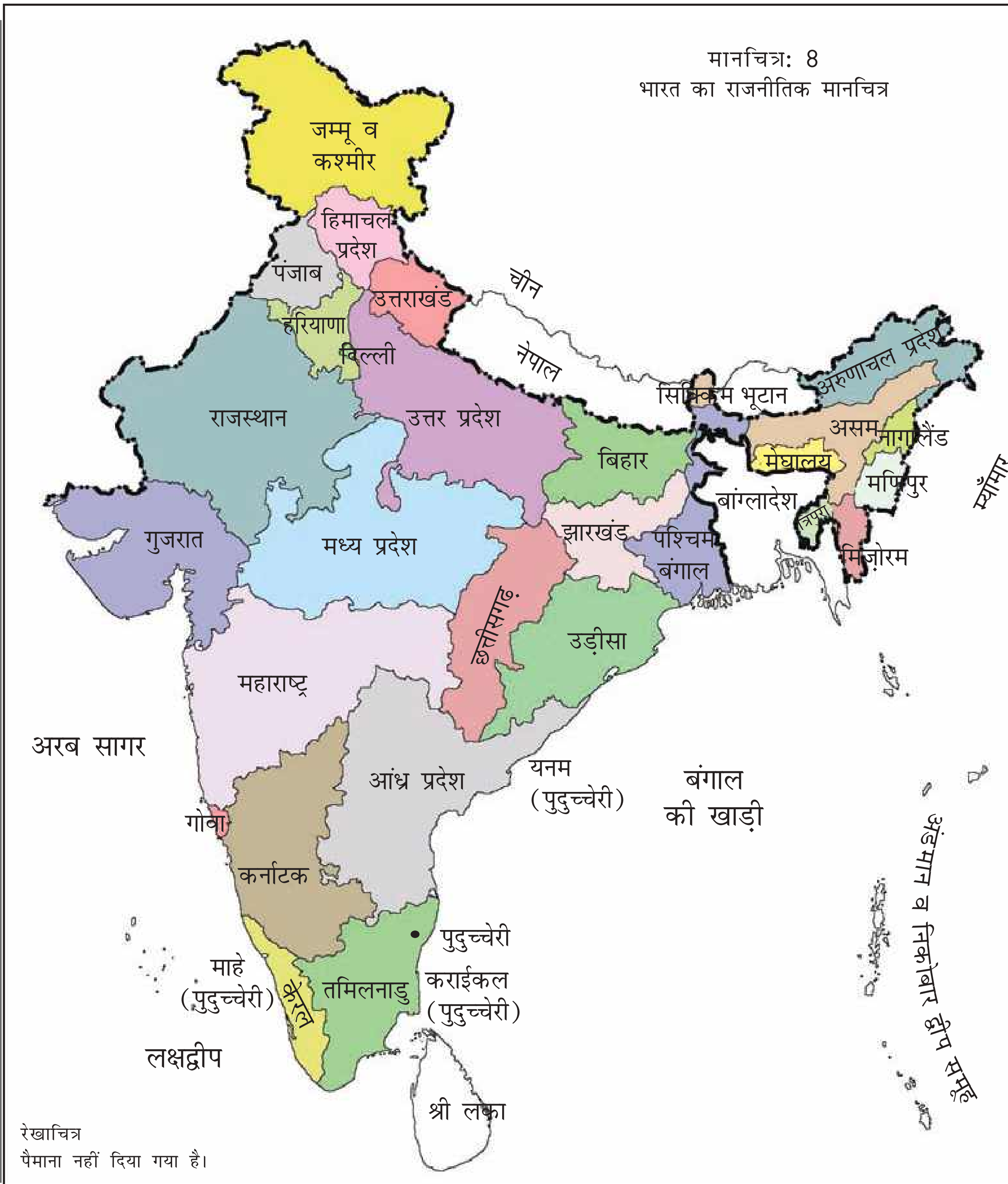
मानचित्र: 8
भारत का राजनीतिक मानचित्र
जम्मू व कश्मीर
हिमाचल प्रदेश
पंजाब
उत्तराखंड
हरियाणा
दिल्ली
चीन
नेपाल
राजस्थान
उत्तर प्रदेश
सिक्किम
भूटान
अरुणाचल प्रदेश
असम
नागालैंड
मेघालय
बिहार
मणिपुर
म्यांमार
बांग्लादेश
त्रिपुरा
गुजरात
मध्य प्रदेश
झारखंड
पश्चिम बंगाल
मिज़ोरम
छत्तीसगढ़
उड़ीसा
महाराष्ट्र
अरब सागर
आंध्र प्रदेश
यनम (पुदुच्चेरी)
बंगाल की खाड़ी
गोवा
कर्नाटक
अंडमान व निकोबार द्वीप समूह
पुदुच्चेरी
माहे (पुदुच्चेरी)
केरल
तमिलनाडु
कराईकल (पुदुच्चेरी)
लक्षद्वीप
श्री लंका
रेखाचित्र
पैमाना नहीं दिया गया है।

नोट

नोट

नोट

नोट